अमर धर्मग्रंथ

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

संस्करण : 2017
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

टंकण एवं संयोजन : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. +91-94683 40497**
मुद्रक : **यू०आर०बी० प्रिंटिंग प्रैस, शैड नं. 2, रतपुर कॉलोनी, पिंजौर,**
मो. 9466111730, 9466112730

भूमिका

धर्म न मन्दिर में मिले, धर्म न मस्जिद में मिले।
धर्म न गिरिजे में मिले, धर्म न गुरुद्वारे में मिले।।
धर्म न ग्रंथों में मिले, धर्म न हाट बिकाये।
धर्म उसे ही मिले, जो इसे अपनाये।। —धर्मपाल कपूर

संसार में विभिन्न पंथों के ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि संसार के सब व्यक्तियों का एक ही धर्म है वह है मानवता। परन्तु मानव ने अपने अहम्, स्वार्थ, रूचि, परिस्थितियों, कुप्रथाओं, अंधविश्वासों को दूर करने के लिये एवं मानवता के कल्याण के लिये अलग-अलग पंथ एवं ग्रंथ बना लिये हैं। इन सब सम्प्रदायों के मार्ग एवं पूजापद्धति तो अलग-अलग है। परन्तु इन सब का मन्तव्य एवं गंतव्य एक है। जैसे सरदारी लाल धवन 'कमल' जी लिखते हैं—

क्यों ढूंढता ख़ुदा को है पूजा-नमाज़ में,
उल्फ़त (प्रेम) को छोड़ और कहीं भी ख़ुदा नहीं।
मंजिल तो है ख़ुदा ही मज़ाहिब (धर्मसमूह) है रास्ते,
अच्छा वही है जिस पे 'कमल' शक नहीं किया।।

अतः डॉ० गुलाम जेलानी का यह घोष सुनिये—

मज़हब अज़द (आदिकाल) से एक था, एक है और एक ही रहेगा।

—अल्लाह की आदत पृ० 234

संसार का प्रत्येक व्यक्ति कहता है चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो या अंग्रेज़ हो कि सच बोलो, चोरी न करो, रिश्वत न लो, व्याभिचार न करो, शराब एवं अन्य विषैले पदार्थों का सेवन न करो। किसी को दुःख न हो, असहाय एवं सुपात्र की यथायोग्य सहायता करो, सब का भला चाहो।

जो काम सब के सामने किया जाये वह धर्म है और इसके विपरीत जो छिप कर किया जाये वह अधर्म। अतः धर्म का अर्थ है ऊँचा सिद्धान्तों का आचरण करो।

वस्तुतः धर्म पति है, राजनीति पत्नी है। पत्नी पर पति का अंकुश जरूरी है। नहीं तो राजनीति बेलगाम वेश्या बन जाएगी और देश में

अन्याय, अत्याचार, अधर्म, अनैतिकता, गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार छा जाएगा और देखलो भारत में छा चुका है। क्योंकि धर्म का दूसरा नाम मानवता न्याय और कर्तव्य है।

इसलिए स्वामी शिवानंद लिखे हैं–

Real religion is one. It is the religion of truth and love. It is religion of heart. It is the religion of service, sacrifice and renumiation. It is the religion of goodness, kindness and tolerance.

–Bliss Divine P. 472

सच्चा धर्म केवल एक ही है। यह धर्म सत्य एवं प्रेम का धर्म है। यह धर्म हृदय, सेवा, बलिदान और त्याग का धर्म है। यह धर्म नेकी, दयालुता एवं सहनशीलता का धर्म है।

आज भी धर्म के नाम पर सब से अधिक झगड़े, हत्याएँ आदि होती हैं। इसका मुख्य कारण है संस्कारों का अभाव, अज्ञानता, संकीर्णता आदि। अतः आज इन सब को छोड़कर हमें उदारता अपनाकर सब का भला करना चाहिये ताकि विश्व में सुख, शांति एवं आनंद की वृष्टि हो। हम सच्चे अर्थों में इन्सान बने जैसे कि एक उर्दू शायर ने लिखा है–

अब तो मज़हब कोई ऐसा चलाया जाये।
जिसमें इंसान को इसान बनाया जाये।।
आदमी और आदमी के बीच हो ऐसे रिश्ते।
मैं रहूँ भूखा तो तुझ से भी न खाया जाये।।

इसी प्रकार शाद बिलगती के शब्दों में –

न तो रूहानियत को कहते हैं।
और न शैतानियत को कहते हैं।
आदमी की लुग़ात (शब्दकोष) में ए शाद।
धर्म इंसानियत को कहते हैं।

अंततः इतना ही कहना पर्याय होगा कि मैंने ''अमर धर्मग्रंथ'' नामक ग्रंथ अनेक धार्मिक ग्रंथों एवं उनके भाष्यों का अध्ययन करके अनेक वर्षों की सच्ची लगन एवं कड़ी मेहनत के उपरांत लिखा है। इसमें विभिन्न सम्प्रदायों के विभिन्न ग्रंथों का सार प्रस्तुत किया गया है। सब ग्रंथों के परिचय को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा गया है।

(1) ग्रंथपरिचय, (2) ग्रंथ के 25 अत्यंत महत्वपूर्ण उद्धरण, (3) ग्रंथप्रश्नोत्तरी। विशेषतः प्रत्येक ग्रंथ के अंत में प्रश्नोत्तरी बच्चों के लिये लिखी गई ताकि इसका अध्ययन करके आसानी से इसका लाभ उठा सके। प्रस्तुत पुस्तक के सभी धर्मग्रंथ विशालकाय, कठिन एवं गम्भीर हैं। इसलिए साधारण व्यक्ति के पास आज व्यस्त जीवन में न ही इतना समय है कि वह इन ग्रंथों का अध्ययन कर सके और न ही इतनी समझ है कि इन्हें आसानी से समझ सकें। इसलिए इन ग्रंथों का सार लिखकर गागर में सागर को भर दिया गया है ताकि साधारण व्यक्ति भी इन का अध्ययन करके लाभ उठा सके।

प्रस्तुतः पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' जी, रोशनलाल अग्रवाल जी, नरेश बंसल जी, जयकिशन जी आदि ने सहयोग प्रदान किया है। अतः इन मित्रों का स्तवन न करना मेरी कृतघ्नता होगी। विशेषतः श्री नरेन्द्र आहुजा 'विवेक' जी ने इस पुस्तक के सम्पादन में विशेष योगदान प्रदान किया है। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि उनके बिना प्रस्तुत पुस्तक का वर्तमान रूप में संयोजन न हो पाता। मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यन्त धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों में से संदर्भ उद्धृत किये गये हैं।

जिस अचिंत्य शक्ति प्रभु की असीम अनुकम्पा से मैं अपने संकल्प को मूर्तरूप दे सका उसका भी कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ। मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है। परन्तु अल्पज्ञ व अपूर्ण होने के कारण फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकगण से क्षमा चाहूँगा।

धर्म पाल कपूर

(धर्मपाल कपूर)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

तिथि : 31-8-2015

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और इसका मूल्य सदुपयोग है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

प्रस्तावना

श्री धर्मपाल जी कपूर की रुचि आध्यात्मिक व विद्वानों के नीति शास्त्रों, उपनिषदों एवं ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित पुस्तकों के स्वाध्याय व लेखन कार्य में सराहनीय हैं। इन्होंने लगभग अब तक 13 पुस्तकें प्रकाशित करवा कर निःशुल्क वितरित की हैं। अन्य काफी पुस्तकें प्रकाशन के लिये तैयार हैं। शीर्घ ही प्रकाशन करवाये जाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

अमर धर्मग्रंथ पुस्तक में बाइबल, क़ुरान, गुरुग्रन्थसाहिब, सत्यार्थप्रकाश पर धर्म से संबंधित महत्वपूर्ण बातों का वर्णन किया है। ईश्वरकृत चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इनमें सब सत्य विद्याएं हैं। असत्य कुछ भी नहीं है। असत्य बातें मनुष्यकृत पुस्तकों एवं ग्रंथों में हो सकती हैं, क्योंकि मनुष्य का ज्ञान अपूर्ण है, पूर्ण ज्ञानी तो केवल एक परमात्मा है, जिसे पूर्ण पुरुष (ईश्वर) भी कहते हैं। कुछ लोगों ने इस अपूर्णता के कारण और वेदज्ञान (ईश्वरीय ज्ञान) के अभाव में अन्य काल्पनिक पुस्तकें ग्रंथ बना लिये और अलग सम्प्रदाय चला लिये। कुछ बाइबल की विचारधारा के अनुयायी बन गए, कुछ क़ुरान को ठीक मान कर उसके साथ जुड़ गए और बहुत सारी संख्या में लोगों को तलवार की नोक पर अपनाने को बाध्य किया गया। कुछ लोग श्रीगुरुग्रंथसाहिब को ही धर्मग्रंथ मान कर उसकी अलग पहचान बना कर उससे जुड़ गये। धर्म सबका एक है, वह वेदोक्त धर्म है। देखो! परमेश्वर हम सभी के लिये धर्म का उपदेश करता है कि हे मनुष्य लोगो! जो पक्षपातरहित, न्याय, सत्याचरणयुक्त धर्म है, तुम लोग उसी को ग्रहण करो, उससे विपरीत कभी मत चलो। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में बाइबल, क़ुरान एवं पुराण आदि ग्रंथों के विषय में संक्षिप्त से प्रकाश डाला है। क्या सत्य क्या असत्य है।

मानव जो कार्य करता है उस कार्य के पीछे स्वार्थ भाव दिया होता है, ईश्वर ही केवल एक स्वार्थहीन है जो केवल निःस्वार्थ सभी जीवों के कल्याण, परोपकारार्थ कार्य हर पल करता है। सृष्टि रचना, प्रकृति में उत्पन्न सभी पदार्थ, वेद विद्या का ज्ञान सबके परोपकारार्थ दिया है अगर कोई इन से अनभिज्ञ है और उनसे लाभ नहीं प्राप्त कर पा रहा है तो इसमें ईश्वर का क्या दोष है? क़ुरान, बाइबल, पुराण आदि ग्रंथों में बहुत सी बातें वेदविरुद्ध अथवा ईश्वरीय नियम के विरुद्ध हैं। कोई भी धर्म की परिभाषा अलग-अलग नहीं कर सकता। सबका धर्म एक है और वह है सत्य, क्योंकि असत्य किसी का धर्म नहीं हो सकता। पुराण, क़ुरान, बाइबल में भी बहुत सी शिक्षाप्रद बातें हैं कुछ ईश्वर नियम से विरुद्ध होने के कारण मान्य नहीं है।

ईश्वर एक है जब ईश्वर एक है तो सबकी मान्यताएं अनेक क्यों? इसलिए कि अज्ञानता है। सत्यज्ञान तो केवल वेद से ही प्राप्त होता है। क्या कोई धर्म लूटपाट, मारकाट, द्वेषभाव की प्रेरणा देता है, अगर देता है तो वह धर्म नहीं अधर्म है और अधर्म पर चलने से सर्वनाश होना निश्चित होता है। इसी कारण से आज विश्व में त्राहि-त्राहि हाहाकार मचा हुआ है। नित्य आतंकी हमले, डकैती, बलात्कार, ए.टी.एम. की लूट, सरेआम क़त्ल, मारपीट, दंगे हो रहे हैं। यह भी मेरा, वह भी मेरा, के ऊपर युद्ध हो रहे हैं और उस पर जो किसी का वह है ही नहीं। तुम से पहले किसी और का था, अब तुम्हारा है और तुम्हारे बाद किसी और का होगा। एक धर्म कार्य ही अपने हैं जो सदा साथ ही रहते हैं। पहले भी थे, आज भी हैं और आगे भी साथ ही जाएगें। वही यहाँ पर फिर वापिस भी लायेंगे।

कोई यह कहता है कि पुनर्जन्म नहीं होता, जो कुछ ऐशो-आराम करना है इसी में करलो। इस प्रकार की भ्रान्तियाँ अनेक पुस्तकों के लेखकों ने फैला रखी है और जो उन पर अमल करते हैं वे विश्व में

हमेशा अशान्ति चाहते हैं और सारे विश्व को उसी सम्प्रदाय से जोड़ना चाहते हैं। ऐसा प्रयास बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है और वर्तमान में भी जारी है। इस पुस्तक में बाइबल, क़ुरान, पुराण, सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकों का संक्षिप्त में सत्य और असत्य, धर्म और अधर्म, ईश्वर और अनीश्वर पर प्रकाश डाला गया। पाठकगण को जो बहुत सी बातों का ज्ञान नहीं वह इस पुस्तक के माध्यम से ज्ञान हो जायेगा।

श्री धर्मपाल कपूर जी ने अपने अथक परिश्रम से इन ग्रंथों का स्वाध्याय करके ग्रंथों का निष्कर्ष इस पुस्तक में रखा है। यह बहुत ही कठिन कार्य है और उनका स्वाध्याय कितना है उसका अनुमान उनकी पुस्तकों से लगाया जा सकता हैं सम्भवतः यह 'अमर धर्मग्रंथ' पाठकों का ज्ञानवर्धन करने में सहायक होगा और जो ज्ञान सबको नहीं होता उसकी जानकारी भी मिलेगी। कुल मिलाकर यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी ऐसा मेरा मानना है। श्री धर्मपाल कपूर जी का मैं बड़ा आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने मुझे इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखने का सुअवसर दिया। ईश्वर इन्हें सदा सुखी व लम्बी आयु प्रदान करे।

लालचन्द चौहान
591, सैक्टर-12, पंचकूला
(हरियाणा)-134112
मोबाइल - 9814881501
फोन 0172-2563079

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1	बाइबलसार	1
2	क़ुरानसार	17
3	श्रीगुरुग्रंथसाहिबसार	41
4	सत्यार्थप्रकाशसार	67
	(1) सत्यार्थप्रकाश के 14 समुल्लासों का सार	71
	(2) सत्यार्थप्रकाश के 25 अत्यंत महत्वपूर्ण उद्धरण	95
	(3) सत्यार्थप्रकाशप्रश्नोत्तरी	99

1. बाइबलसार

बाइबल ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है धार्मिक पुस्तक। यह यहूदियों, पारसियों और अंग्रेज़ों की धार्मिक पुस्तक है। इसका रूपांतर संसार की सब से अधिक भाषाओं में हो चुका है। इस का कारण यह है कि अंग्रेज़ों के पास सत्ता एवं अपार धन था। वस्तुतः बाइबल दो प्रकार के हैं--एक कैथोलिक बाइबल और दूसरा प्रोटैस्ट बाइबल। कैथोलिक बाइबल में 73 पुस्तकें हैं और प्रोस्टेट बाइबल में 66 पुस्तकें हैं।

इसके दो भाग है–पुराना नियम (Old Testament) और नया नियम (New Testament)। पुराने नियम में 39 पुस्तकें हैं और नये नियम में 27 पुस्तकें हैं। पुराना नियम हिब्रुभाषा और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया है। न्यू बाइबल डिक्स्नरी में लिखा है–

पुराने नियम की पुस्तकें लगभग 1000 वर्षों की अवधि में लिखी गई हैं। –New Bible Dictionary P. 139

पुराने नियम की प्रथम पाँच पुस्तकें – (1) उत्पत्ति, (2) निर्गमन, (3) लेवीय व्यवस्था, (4) जन गणना, (5) तौरेत के लेखक मूसा हैं। प्रमाण भी देखिये–

जो बातें मूसा ने समस्त इस्राइली समाज से यरदन नदी के उस पार..... कहीं , वे ये हैं,..... मूसा ने वे बातें उनसे चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहले दिन कहीं ..... उन्होंने इस व्यवस्था की व्याख्या करना स्वयं आरम्भ किया। –तौरेत 1:1,3,5

इसी प्रकार नये नियम (इंजील) की पुस्तकें एवं पत्र लगभग 100 वर्षों में लिखे गये। वस्तुतः नया नियम 325 ई० से लिखना आरम्भ हुआ था। मैथ्यू, मार्क, ल्यूक व जॉन द्वारा लिखित ईसा की जीवनियाँ जो नए नियम के आरम्भ में हैं, जहाँ लेखक के नाम पुरानी

पद्धति में मत्ती, मरकुस, लूका व यूहन्ना दिये जाते हैं और कभी-कभी तो केवल एक सुसमाचार भी इंजील के नाम से वितरित किया जाता है। परन्तु वास्तविकता में बाइबल में पुराना व नया नियम दोनों ही समान महत्त्व के आधार पर सम्मिलित हैं और किसी को छोड़ा नहीं जा सकता।

ईसा मसीह ने स्वयं न तो ''ईसाई मत'' के नाम से कोई नया मत चलाया और न ही उनकी ऐसी कोई इच्छा थी कि वे कोई नया मत चलाएं। वे स्वयं यहूदी थे और उनके समय में यहूदी मत में तो खराबियां उनके अनुसार आ गई थी, उन्हें दूर करने, या यहूदी लोग जो मार्ग से भटक गये थे, उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए उन्होंने प्रयास किया। उनके आरम्भिक उपदेश, या वार्ता तो यहूदी पूजाघरों में ही होते थे। उस समय चर्च कहीं नहीं थे सुसमाचारों से वर्णन देखिये–

''जब जब यीशु ने यरूशलम में प्रवेश किया....

यीशु ने मन्दिर के आंगन में प्रवेश किया और वहाँ से क्रय-विक्रय करने वाले सब लोगों को बाहर निकाल दिया। उन्होंने मुद्रा-विनिमय करने वालों की मेजें और कबूतर बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं; और उनसे कहा, 'धर्मशास्त्र का लेख है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा।' परन्तु तुमने उसे 'डाकुओं का अड्डा' बना दिया है।''

मत्ती 21:10,12-13

बाइबल में 7,73,746 शब्द हैं। इस ग्रंथ का आरंभ उत्पत्ति (Genesis) नामक पुस्तक से और इसकी इति प्रकाशन (Revelation) नामक पुस्तक से हुई है। इसमें सबसे बड़ी पुस्तक भजन संहिता (19 पुराना नियम) और सब से छोटी पुस्तक द्वितीय पत्र (पुस्तक 24 नया नियम) है।

नया नियम के अध्ययन से प्रतीत होता हे कि ईसा मसीह की

माता का नाम मरियम था जिसका अर्थ है महान् । जब वह कुवांरी ही थी कि अपने पिता के घर में ही गर्भवती हो गई थी । परन्तु उसके पिता ने बदनामी के डर से उसका गर्भ छिपा दिया था । गर्भ की बात बताये बिना ही धोखे से उसके माता-पिता ने अपनी लड़की मरियम का विवाह यूसफ नामक बढ़ई से कर दिया था । विवाह के पश्चात् जब यूसफ को पता चला कि उसकी पत्नी मरियम विवाह से पूर्व ही गर्भवती हो चुकी थी । परन्तु मरियम ने कभी भी लज्जा के कारण अपने पुत्र ईसा के पिता का नाम किसी को नहीं बताया ।

यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ; यीशु की माता मरियम की मंगनी युसूफ से हुई थी, परन्तु उनके मिलन के पूर्व वह पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गई । मत्ती 1:18

ईसा के इम्मानुएल नाम के सम्बन्ध में उनकी जीवनी-सुसमाचार में निम्नलिखित पद हैं–

यह सब इसलिए हुआ कि नबी कथित प्रभु का यह वचन पूरा हो : कुंआरी कन्या गर्भवती होगी और वह पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम ''इम्मानुएल (अर्थात् परमेश्वर हमारे साथ) रखा जाएगा ।

मत्ती 1:22-23

इस प्रकार ईसा का जन्म कुवांरी मरियम से आज से 2017 वर्ष पूर्व यरूशलम में हुआ था । जब तक मरियम ने ईसा को जन्म नहीं दिया तब तक युसुफ ने उसके साथ सहवास नहीं किया और युसुफ ने भी उसका नाम यीशु रखा था । इस प्रकार यीशु का पिता कौन था? आज तक यह एक रहस्य ही बना हुआ है । ईसा 13 वर्ष से 31 वर्ष तक भारत में रहे । ईसा ने संसार के कल्याण के लिए निम्नलिखित मुख्य निर्देश दिये थे–

1. स्वयं से प्रेम करो और अपने पड़ोसी से भी प्रेम करो ।

2. व्यर्थ में किसी की हत्या न करें ।
3. व्याभिचार न करो ।
4. चोरी न करो ।
5. झूठी गवाही न दो ।
6. अपने माता-पिता का आदर करो ।
7. गुप्त दान दो ।
8. दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा आप स्वयं से चाहते हो ।
9. यदि तुम्हारा हाथ और पैर पाप में फंस जाए तो उसे काट डालो ।
10. पिता इन्हें क्षमा करे क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं । आदि

वस्तुतः ईसा एक महान् उपदेशक थे और उसके 12 निम्नलिखित शिष्य थे-- 1. पररम, 2. अन्द्रियास, 3. याकूव, 4. यूहमा, 5. फिलिप्पस, 6. बुरतुल्मय, 7. थोमा, 8. मती, 9. लहयाई का पुत्र याकूव, 10. तद्दै, 11. शिमौन कनानी, 12. यहूदा इस्कारियोती । इन शिष्यों में यहूदा इस्करियोती ने ईसा को चांदी के 30 सिक्कों के लिये ही पकड़वाया था । वहीं पुरोहितों के पास 30 सिक्के लेकर आया और उनसे बोला–

मैंने निर्दोष व्यक्ति को मृत्युदण्ड के लिए आप लोगों के हाथ में सौंपकर पाप किया है ।

उन्होंने कहा– तुम जानो इसमें हमें क्या ?

इस पर चांदी के सिक्के मंदिर में फेंककर वहाँ से निकल गया और फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली । --नया नियम (लूका 23)

ईसा इस दुनियाँ में केवल 33 वर्ष तक जीवित रहे और जीवन भर मानवता की भलाई के लिए प्रचार-प्रसार करते रहे। परन्तु उस काल के शासक एवं प्रजा उनके विरुद्ध हो गई और उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। ईसा के अंतिम शब्द थे–

पिता मैं अपनी आत्मा तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ।

–नया नियम लूफा-23

किसी भी सामान्य पुस्तक के सामान्य लेखक से भी यह सामान्य-सी अपेक्षा तो की ही जायेगी कि उसमें सिद्धान्तों, तथ्यों एवं अन्य किसी भी प्रकार के विवरणों में पारस्परिक विरोध न हो। इस प्रकार के विरोधात्मक विवरण होने से एक प्रबुद्ध पाठक के लिये पुस्तक अविश्वसनीय होकर अपठनीय हो जायेगी। बाइबल में इस प्रकार के विरोधात्मक विवरणों की भरमार के कुछ उदाहरण देखिए–

वह सच्चा परमेश्वर है, उसमें पक्षपात नहीं। तौरेत 32.24

विरोध– ''क्योंकि.... मैं, तुम्हारा प्रभु परमेश्वर ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ, जो मुझसे घृणा करते हैं, उनके अधर्म का प्रतिशोध उनकी तीसरी चौथी पीढ़ी की सन्तान से लेता हूँ। निर्गमन 20:5

इस प्रकार परमेश्वर के तथाकथित सन्देश पवित्र बाइबल में और भी अनेक पारस्परिक विरोधात्मक लेख हैं। इस कारण पुस्तक विश्वसनीय नहीं हो सकती।

बाइबल के अध्ययन से प्रतीत होता है कि इस में अनेक बातें वेद एवं सृष्टि नियम के विरुद्ध हैं। जैसे–

लोहा भूमि में से निकाला जाता है

तांबा कच्ची धातु को शुद्ध करने से मिलता है।

–पुराना नियम अय्यूब 28

बड़े खेद का विषय है कि बाइबल के लेखक को धातु विज्ञान का ज्ञान भी नहीं था। पीतल पत्थर में से बनती है अपितु तांबा एवं जस्ता

के मिलाप से ही बनती है । अतः बाइबल में ये बातें निराधार हैं ।

परमेश्वर स्वर्ग सभा में विराजमान हुआ
ईश पुत्रों के मध्य वह न्याय करता है ।

--पुराना नियम भजन संहिता 82

इससे सिद्ध होता है कि ईसाइयों के अनेक ईश्वर हैं । परन्तु यह नहीं बताया गया सभी परमेश्वर एक जैसी शक्ल, लम्बाई-चौड़ाई के होते हैं और उनमें कुछ फर्क होता है और क्या परमेश्वर को उस सभा में चंदा भी देना पड़ता है या नहीं । ये सब बातें वेद एवं सृष्टि नियम के विरुद्ध है और अविश्वसनीय हैं क्योंकि परमेश्वर एक ही है । ''सत्यार्थप्रकाश'' के 13वें समुल्लास (बाइबल के पाखंडों का खंडन) के अध्ययन से प्रतीत होता है कि महर्षि दयानंद ने 133 विभिन्न उद्धरण प्रस्तुत किये और बाइबल के पाखंडों की समीक्षा करके मानवता के कल्याण के लिए सत्य का प्रकाश किया । जैसे–

आओ हम अपने पिता को दाख रस पिलावें और हम उसके साथ शयन करें कि हम अपने पिता के वंश जुगावें । तब उन्होंने उस रात अपने पिता को दाख रस पिलाया और पहिलोठी गई और अपने पिता के साथ शयन किया । हम उसे आज रात भी दाख रस पिलावें तू जाके शयन कर । सो लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुई ।

–पुराना नियम उत्पत्ति-पर्व अध्याय 32/33/34/36

समीक्षक – देखिये पिता पुत्री भी जिस मद्यपान के नशे में कुकर्मी करने से न बच सके ऐसे दुष्ट मद्य को जो ईसाई आदि पीते हैं उन की बुराई का क्या पारावार है? इसलिये सज्जन लोगों को मद्य के पीने का नाम भी न लेना चाहिए ।

निष्कर्षतः इतना ही कहना काफी होगा कि बाइबलसृजन अनेक लेखकों द्वारा विभिन्न समय में हुआ । इसलिये कुछ स्वार्थी लोगों ने इसमें अपनी स्वार्थपूर्ति के लिये मिलावट कर दी । अतः बाइबल

वेदानुकूल नहीं है । इसमें बहुत सी बातें वेद विरुद्ध एवं सृष्टि नियम के विरुद्ध हैं । जैसे जॉर्ज बनर्डशा ने लिखा है–

Bible is a barbarous book written in a barbarous period for the barbarous people by the barbarous God.

What is What Chapter 18 page, 357

बाइबल एक अशिष्ट पुस्तक है जोकि अशिष्ट काल में अशिष्ट लोगों के लिए और अशिष्ट परमात्मा द्वारा लिखी गई थी ।

इसी प्रकार आचार्य नरेश जी लिखते हैं–

जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता ठीक वैसे ही विज्ञान व मानवता विरुद्ध क्रूर बाइबल पुस्तक भी मान्य नहीं हो सकती। बाइबल में आतंकवाद, हिंसा चरित्रहीनता, गौ आदि से थोड़ा सा विष मिश्रित दुग्ध भी त्याज्य होता हैं । ठीक वैसे ही बाइबल का शेष भी त्याज्य है । यदि सम्पूर्ण सत्ययुक्त धर्म ही चाहिए तो वेद धर्म को स्वीकार करे । –बाईबल व आर्यसमाज

डॉ० श्रीराम आर्य फिर लिखते हैं–

ईसाई बन्धुओ ! तुम्हारी पुस्तक बाइबल धर्म पुस्तक कहलाने के योग्य नहीं है । उसमें सिवाय पुरानी कहानियां लूटमार--मारकाट, गीत, बेतुके उपदेश, ईश्वर की पवित्र सत्ता को बदनाम करने की बातें, गोश्त व शराब खोरी का प्रचार, सृष्टि नियम–बुद्धि तथा विज्ञान विरुद्ध घटनाओं का वर्णन आदि भरे पड़े हैं जिनको मानकर मनुष्य परमेश्वर से दूर हो जाता है । समाजोत्थान, आत्मोत्थान, शिक्षा, विज्ञान आदि किसी प्रकार की कोई भी शिक्षा बाइबल में नहीं है । संसार का कोई भी समझदार गैर ईसाई व्यक्ति उसे पसंद नहीं करता है ।

--ईसाई मत का पोलखाता पृ० 12

अतः कुंवर सुख लाल आर्य मुसाफिर लिखते हैं–

बाइबल क्या है? यह एक फसाना झूठा।

ख़ुदा का बेटा भी ईसु को बताना झूठा।।

इसमें रूहानियत का नामोनिशां मिलता नहीं।

पादरी जो लिये फिरते हैं फसाना झूठा।।

परन्तु फिर भी बाइबल में जो बातें वेद विरुद्ध है उन्हें छोड़कर शेष अच्छी बातों को जीवन में अपना कर प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन सुखमय, शांतमय एवं आनंदमय बनाना चाहिए। क्योंकि जो इसमें अच्छी बातें हैं उन्हें हम अपनाकर और इससे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

बाइबल के अत्यधिक महत्वपूर्ण उद्धरण

पुराना नियम

भजन संहिता

1. **अपनी जीभ को बुराई से दूर रखो,**
   और ओठों को छल कपट से
   बुराई को छोड़ो और भलाई करो,
   शांति को खोजो और उसका अनुसरण करो।
2. **बुराई से दूर रहो और भले कार्य करो**
   तब तुम देश में सदा शांति से बसे रहोगे।
   क्योंकि प्रभु न्याय से प्रेम करता है,
   वह अपने भक्तों को नहीं छोड़ेगा।।
3. **परमेश्वर समस्त पृथ्वी का सम्राट् है,**
   विशेष गीतों के साथ स्तुति गाओ।
   परमेश्वर समस्त राज्यों पर राज्य करता है,
   परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजमान है।
4. **मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ।**

क्योंकि उसने मेरी वाणी और विनती सुनी है ।
उसने मेरी ओर ध्यान दिया है,
अतः मैं अपने जीवन भर उसको पुकारूंगा ।

5. धन्य हैं वे जिनका आचरण निर्दोष है,
जो प्रभु की व्यवस्था पर चलते हैं,
धन्य हैं वे जो प्रभु की साक्षियां मानते हैं
जो अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु की खोज करते हैं ।

नीति वचन

6. प्रभु ही बुद्धि देता है,
उसके मुख से ही ज्ञान और समझ की बातें निकलती हैं ।
वह निष्कपट व्यक्ति के लिए ज्ञान संचित करता है ।
जिसका आचरण खरा है उनकी ढाल के सदृश रक्षा करता है ।
जो न्याय के पथ पर चलते हैं उनका वह रक्षक है ।
और वह अपने भक्तों के मार्ग की रक्षा करता है ।

7. मनुष्य के समस्त आचरण पर प्रभु दृष्टि करता है ।
प्रभु उसके प्रत्येक व्यवहार को देखता है ।
दुर्जन व्यक्ति अपने दुष्कर्म के जाल में फंसता है
वह अपने पापों के बन्धन में बंध जाता हैं
वह अनुशासन का पालन न करने के कारण मर जाता है
वह अपनी मूर्खता के कारण यहाँ वहाँ भटकता है ।

8. जब मनुष्य अभिमान करता है,
तब अभिमान के साथ अपमान आता है,
परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति में नम्रता होती है ।

9. मनुष्य जैसा कार्य करता है
वैसा ही उसको फल मिलता है ।

10. जहाँ प्रेम है
वहाँ सूखी रोटी भी मीठी लगती है ।
पर जिस घर में घृणा का वास है
वहाँ अच्छे से अच्छा भोजन भी त्याज्य है ।

11. व्यभिचार को छोड़कर यदि किसी अन्य कारण से कोई पति अपनी पत्नी को तलाक़ देगा तो वह उसे व्यभिचार के लिये बाध्य करता है और जो तलाक़ पाई हुई स्त्री से विवाह करेगा वह भी व्यभिचार करता है ।

12. तुम दान दो तब तुम्हारा यह कार्य इतना गुप्त हो कि तुम्हारा बायां हाथ भी न जाने कि दाहिना हाथ क्या कर रहा है । तुम्हारा दान गुप्त हो, तब तुम्हारा पिता जो गुप्तकार्य को भी देखता है तुम्हें प्रतिफल देगा ।

13. हमारे अपराध क्षमा कर, जैसे हम दूसरों के अपराध क्षमा करते हैं ।

14. शरीर का दीपक आँख है । यदि तुम्हारी आँख ठीक है तो तुम्हारा समस्त शरीर प्रकाशमय होगा, परन्तु यदि तुम्हारी आँख खराब हो जाए तो तुम्हारा समस्त शरीर अंधकारमय होगा । यदि तुम्हारे भीतर की ज्योति अंधकार हो तो यह अंधकार कितना घोर होगा ।

15. तुम अपने भाई की आँख का तिनका क्यों देखते हो ?अपनी आँख का लट्ठा तुम्हें नहीं सूझता ।

16. मांगों तो तुम्हें दिया जाएगा । ढूंढो तो तुम पाओगे । खटखटाओगे तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा । जो कोई मांगता है उसे मिलता है । जो ढूंढता है, वह पाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है ।

17. जो मनुष्य अपने आपको इस बालक के समान छोटा मानेगा वह परमेश्वर के राज्य में सब से बड़ा है ।

18 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा ऊंट

का सुई के छेद में होकर निकल जाना अधिक सरल है ।

मुरकुस के अनुसार शुभ सन्देश

19. यदि कोई मनुष्य समस्त संसार को प्राप्त कर ले पर अपना प्राण गंवा दें तो इनसे क्या लाभ ।
20. यदि कोई प्रथम होना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह सबसे अंतिम हो और सबका सेवक बने ।
21. यदि तुम्हारा हाथ तुम्हें पाप में फंसाए तो उसे काट डालो । यदि तुम्हारा पैर तुम्हें पाप में फंसाए तो उसे काट डालो । यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप में फंसाए तो उसे निकाल डालो ।
22. पिता, तेरे लिए सब कुछ सम्भव है । यह दुःख का प्याला मेरे पास से हटा लें, किन्तु मेरी इच्छा नहीं तेरी इच्छा पूर्ण हो ।

लूका के अनुसार शुभ संन्देश

23. अपने विषय में सावधान रहो । ऐसा न हो कि तुम्हारे मन में दुराचार मतवालापन और जीवन की चिन्ताएं भर जाएं ।
24. पिता, इन्हें क्षमाकर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं । —यीशु
25. पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूँ । --यीशु

बाइबल-प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. बाइबल का क्या अर्थ है ?

उत्तर धार्मिक पुस्तक ।

प्रश्न 2. बाइबल कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर बाइबल दो प्रकार के हैं । कैथोलिक बाइबल और प्रोस्टेंट बाइबल ।

प्रश्न 3. कैथोलिक बाइबल और प्रोस्टैंट बाइबल में क्या अंतर है ?

उत्तर कैथोलिक बाइबल में 73 पुस्तकें हैं और प्रोस्टैंट बाइबल में 66 पुस्तकें हैं ।

प्रश्न 4. बाइबल के दो भागों के क्या-क्या नाम हैं ?

उत्तर बाइबल के दो भागों के नाम निम्नलिखित हैं ।

(1) पुराना नियम (Old Testament), (2) नया नियम (New Testament)

प्रश्न 5. पुराने नियम और नये नियम में कितनी पुस्तकें हैं और कुल प्रोस्टैंट बाइबल में कितनी पुस्तकें हैं ?

उत्तर पुराना नियम 39 पुस्तकें और नया नियम 27 पुस्तकें । इस प्रकार प्रोस्टैंट बाइबल में कुल 66 पुस्तकें हैं ।

प्रश्न 6. पुराना नियम और नया नियम क्रमशः किन-किन भाषाओं में लिखा गया था ?

उत्तर पुराना नियम हिब्रूभाषा और नया नियम यूनानी भाषा में लिखा गया था ।

प्रश्न 7. बाइबल का संसार की कितनी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और क्यों ?

उत्तर बाइबल का संसार की लगभग 2000 से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । इसका मुख्य कारण हैं–(1) संसार में इसके अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है । (2) इसके अतिरिक्त अनुयायियों के पास पर्याप्त मात्रा में धन है । (3) संसार के 84 राज्यों पर उनका शासन था । यहाँ तक कि उसके राज्य में कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता था ।

प्रश्न 8. बाइबल का आरम्भ और इति किन-किन पुस्तकों से हुई है ?

उत्तर उत्पत्ति (Genesis) और प्रकाशन (Revelation)

प्रश्न 9. बाइबल में सबसे छोटी और सबसे बड़ी पुस्तक कौन-कौन सी है ?

उत्तर (1) सबसे बड़ी पुस्तक भजन संहिता (पुस्तक नं. 19 पुराना नियम)

(2) सबसे छोटी पुस्तक द्वितीय पत्र (पुस्तक नं. 24 नया नियम)

प्रश्न 10. ईसा मसीह के माता-पिता का क्या नाम था ?

उत्तर ईसा मसीह की माता का नाम मरियम था । वह कुंवारी थी तभी अपने पिता के घर में ही गर्भवती हो गई थी । उसके माता-पिता ने उसका बिना गर्भ की बात बताये धोखे से युसफ नामक बढ़ई से विवाह कर दिया । परन्तु संकोचवश मरियम ने ईसा के वास्तविक पिता का नाम किसी को भी नहीं बतलाया ।

प्रश्न 11. ईसाई धर्म के संस्थापक कौन थे ?

उत्तर ईसा मसीह ईसाई धर्म के संस्थापक थे जिन्होंने उपदेश, संदेश, निर्देश का वर्णन नया नियम (New Testament) में मिलता है ।

प्रश्न 12. आज संसार में किस धर्म के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है ?

उत्तर आज संसार में लगभग 204 विभिन्न देश हैं जिनमें 152 देश यहूदियों, पारसियों एवं अंग्रेज़ों के हैं । अतः ईसाई धर्म के अनुयायियों की संख्या सबसे अधिक है ।

प्रश्न 13. ईसाई धर्म के अनुयायियों को मुख्यतः कितने भागों में बांटा जा सकता है ?

उत्तर ईसाई धर्म के अनुयायियों को मुख्यतः निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है :--

(1) Roman Catholic Church
(2) Prostestant Church
(3) Eastern Orthodex Church

प्रश्न 14. ईसाईयों के कितने सूत्र हैं?

उत्तर ईसाईयों के केवल तीन सूत्र हैं जो उन्हें परस्पर सम्बद्ध रखते हैं--क्राइस्ट, क्रॉस और बाइबल। पग़म्बर क्राइस्ट, चिन्ह क्रॉस और धार्मिक ग्रंथ बाइबल है। परन्तु अब ईसाई धर्म भी 76 सम्प्रदायों में बंट चुका है।

प्रश्न 15. बाइबल के कितने संशोधन हो चुके हैं?

उत्तर बाइबल में आज तक 27 संशोधन हो चुके हैं। परन्तु वेद में एक भी संशोधन नहीं हुआ क्योंकि वेद ईश्वरीय वाणी है। जैसे बाइबल में लिखा है कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और पृथ्वी स्थिर रहती है। परन्तु जब गैलीलियो ने सिद्ध कर दिया कि यह सिद्धान्त सत्य नहीं है क्योंकि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी इसके चारों ओर 364¼ दिनों में चक्कर लगाती है। इस बात पर गैलीलियो को क़ैद में डाल दिया गया और उसे अनेक यातनाएं दी गई थी। परन्तु आज इस सिद्धान्त को सारा संसार मानता है।

प्रश्न 16. ईसाई धर्म के संस्थापक कौन थे और उनका जन्म कहाँ हुआ था?

उत्तर ईसा मसीह ईसाई धर्म के संस्थापक थे और उनका जन्म आज से लगभग 2017 वर्ष पूर्व 25 दिसम्बर को रात के 12 बजे वेथलेहम नगर में हुआ था जोकि आजकल इज़राइल देश में है।

प्रश्न 17. बाइबल का प्रथम वाक्य क्या है?

उत्तर प्रभु ने आरम्भ में आकाश और पृथ्वी को रचा। यह बाइबल का प्रथम वाक्य है। उत्पत्ति1:1

आरम्भ में आकाश को रचा। आकाश कहते हैं शून्य/खाली स्थान को क्या खाली स्थान बनाया जाता

है? स्थान होता है और यदि वहाँ कुछ वस्तु है तो उसे हटाकर स्थान खाली किया जाता है। क्या बाइबल के अनुसार प्रभु के द्वारा स्थान बनाने के पूर्व स्थान था ही नहीं? यदि नहीं था तो स्वयं प्रभु कहाँ था। यदि प्रभु था तो स्थान भी था। बिना स्थान के प्रभु भी कहाँ होगा। कण-कण में प्रभु को मानने पर भी वे कण-कण कहीं तो होंगे और वे स्थान पर, या में ही होंगे।

प्रश्न 18. ईसा मसीह को कितने कोड़े लगवाए गये थे?

उत्तर प्रभु यीशु मसीह को 39 कोड़े लगवाए गए, हाथों-पैरों में कीलें ठुकवाई गई। पसली में नेजा मारा गया। उनके मुँह पर थूका गया और जब यीशु ने सलीब से पानी माँगा तो पानी की जगह सिरका दिया गया। ऐसे समय में भी प्रभु यीशु मसीह ने उन पर अत्याचार करने वालों के लिए परमेश्वर से कहा कि हे परमेश्वर इनको क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं?

प्रश्न 19. ईसा मसीह का जन्म दिन कब से मनाया जाने लगा था।

उत्तर यह बड़े खेद का विषय है कि ईसा मसीह का जन्म दिन उनकी मृत्यु से लगभग 200 वर्ष पश्चात् मनाया जाने लगा। तभी ईसाई धर्म के अनुयायी प्रति वर्ष विश्व में 25 दिसम्बर को इनका जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

प्रश्न 20. क्या ईसा ईश्वर का इकलौता पुत्र था?

उत्तर ईसा परमात्मा का इकलौता पुत्र नहीं था। परमात्मा हम सब का माता-पिता है और हम सब उसकी सन्तानें हैं।

प्रश्न 21. क्या ईसा ने सब व्यक्तियों के पापों की गठरी अपने सर पर रख ली और उसके बलिदान से सब व्यक्ति पापों से छूट जाएंगे?

उत्तर नहीं, कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के पापों की गठरी अपने सर पर नहीं उठा सकता। अपितु प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

प्रश्न 22. क्या ईसा पर विश्वास रखने वाले पापों से छूट जायेंगे और इसके विपरीत जो ईसा पर इमान नहीं लायेंगे वे पापी हैं?

उत्तर नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने किये हुए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है क्योंकि बिना भोगे कभी भी कर्म नष्ट नहीं होते। यदि इस सिद्धान्त को न माने तो संसार में और पाप बढ़ जायेंगे। ईसाई धर्म का यह कहना—

ईसा मसीह पाप दूर कर देगा महज एक पागलपन की बात है।

--ईसाईमत का पोलखाता पृ० 11

प्रश्न 23. ईसा कितने समय के लिए भारत के किस राज्य में रहे?

उत्तर ईसा 13 वर्ष से लेकर 31 वर्ष तक भारत के कश्मीर राज्य में रहे और इसकी क़ब्र आज भी मौजूद है।

प्रश्न 24. यीशु के कितने शिष्य थे और उनके क्या-क्या नाम थे?

उत्तर यीशु के 12 शिष्य थे और उनके नाम निम्नलिखित हैं—

1.पररम, 2. अन्द्रियास, 3. याकूब, 4. यूहमा, 5. फिलिप्पस, 6. बुरतुल्मय, 7. थोमा, 8. मत्ती, 9. लहफई का पुत्र याकूव, 10. तद्दै, 11. शिमौन कनानी, 12. यहूदा इस्कारियोती।

प्रश्न 25. किस शिष्य ने यीशु को पकड़वाया?

उत्तर यहूदा इस्कारियोती।

2. क़ुरानसार

क़ुरान मुसलमान भाइयों का धार्मिक ग्रंथ है। क़ुरान का अर्थ है—पढ़ने योग्य पुस्तक (Excellent Book)। हज़रत मुहम्मद साहिब का जन्म 20-4-570 ई० को मक्का में हुआ था। उनके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम अमीना था। हज़रत मुहम्मद के भक्तों के साथ-साथ उनके शत्रु भी हो गये थे जिसके कारण उन्हें 16-7-622 ई० को मक्के से मदीने भाग जाना पड़ा। उनके इस भाग जाने को हिज्र कहते हैं और मुसलमानों का हिज्री सन् उसी दिन से आरम्भ होता है। क़ुरान 6-8-610 ई० से लेकर 8-6-632 ई० 23 वर्ष तक उतरता रहा और 8-6-632 ई० को 63 वर्ष की आयु में हज़रत मुहम्मद साहिब मृत्यु हो गई। इनकी 11 बीवियाँ थीं। इस का अर्थ है कि हज़रत मुहम्मद साहिब बोलते जाते थे और एक व्यक्ति लिखता जाता था। उस समय सारा क़ुरान बिखरा पड़ा था। अतः हज़रत अली, हज़रत अबू जैद, हज़रत जैदसिव, साबित रजिउल्लाह और हक़ारत अन्स ने बड़ी मेहनत करके प्रथम बार 650 ई० में इसका सम्पादन किया था। अतः यह कहा जाता है कि क़ुरान की सारी आयतें ख़ुदा की ओर से हज़रत मुहम्मद साहिब को नाज़िल हुई थी।

इसमें 30 पारे, 114 सूरे, 558 रुकू, 6236 आयतें, 77,639 शब्द और 3,23,015 अक्षर हैं। क़ुरान के 30 पारों में सब से छोटा 19वाँ पारा-वक़ालल्लज़ीन (सूरहे-फ़ुर्कान) और सबसे बड़ा 23वाँ पारा है। (वम्मालिय)

विशेष सूचना :-- विभिन्न विद्वानों के अनुसार क़ुरान की आयतों की संख्या विभिन्न है क्योंकि आयतों की गणना के कारण ही आयतों की संख्या में अंतर पड़ गया। परन्तु साधारणतः यह माना जाता है कि क़ुरान में 6236 आयतें हैं। क़ुरान में विभिन्न 75 भाषाओं जैसे अरबी, फारसी, तर्की, हिन्दी, संस्कृत, यूनानी, रूसी आदि भाषाओं का प्रयोग किया गया है।

क़ुरान के अनुसार सारे जहाँ का और सब व्यक्ति का एक ही ख़ुदा है और उसके बराबर कोई नहीं है । इसको कलमा कहा जाता है । हज़रत मुहम्मद साहिब उसके संदेशवाहक हैं । क़ुरान में अल्ला के 99 नाम हैं--जैसे ख़ुदा, अल्लाह, पर्वरदिगार आदि । इस्लाम का अर्थ है—ख़ुदा के सामने सम्पूर्ण समर्पण और मानव के साथ शांति और प्रेम का व्यवहार करना । ''सूर-ए-फ़ातिहा'' क़ुरान की आत्मा है । यह केवल एक वेदमंत्र का शब्दिक अनुवाद है जोकि इस प्रकार है--

(1) शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला और मेहरबान है ।

(2) हर तरह की तारिफ ख़ुदा की ही की है जो सब संसार का पालनकर्त्ता है ।

(3) निहायत दयावान मेहरबान है ।

(4) कायनात का मालिक है ।

(5) हे ख़ुदा ! हम तेरी ही पूजा करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं ।

(6) हम को सीधी राह दिखला ।

(7) उन लोगों की राह जिन पर तूने कृपा की । न उनकी जिन पर तू गुस्सा हुआ और न भटके हुओ की ।

अब प्रश्न उठता है कि क़ुरान के अनुसार किन-किन 3 जुर्मों में एक मुसलमान क़त्ल के काबिल होता है-- (1) किसी की हत्या करने वाला, (2) यदि बयाहा हुआ व्यक्ति ज़िना (व्यभिचार) करें, 3. यदि मुसलमान काफ़िर (अत्याचारी) हो जाये ।

(1) यदि कोई पुस्तक अपने से पहले प्रकाशित पुस्तकों के उदाहरण वा व्यवस्थायें नकल करके अथवा उसी के आधार पर कल्पनायें करके अपना कलेवर पूरा कर लेती है तो उस नवीन पुस्तक का महत्त्व कुछ नहीं रहता है क्योंकि उसमें उसका अपना कुछ नहीं होता है वह तो केवल दूसरों की नकल होती है ।

क़ुरान की अधिकांश सामग्री उससे पूर्व विद्यमान तौरेत-ज़बूर व इंजील से नकल करके ली गई हैं । अतः क़ुरान का महत्त्व समाप्त हो

जाता है क्योंकि वह पहिली पुस्तकों की नकल मात्र है । हम इसी प्रकार के कुछ स्थल तौरेत, ज़बूर और इंजील में से तथा क़ुरान में नकल किये हुए स्थलों के साथ आगे उपस्थित करते हैं जिससे पाठक क़ुरान की तुलनात्मक दृष्टि से सही स्थिति को समझ सकेंगे और नकल करने वाली किताब क़ुरान के बारे में अपनी सही सम्मति बना सकेंगे ।

मुस्लिम विद्वान् भी क़ुरान की नकल की स्थिति पर विचार करें कि जब तौरेत, ज़बूर और इन्जील किताबें पहिले ही से बेशुमार संख्या में मौजूद थीं तो ख़ुदा ने उनकी बातों को बिना जरूरत क़ुरान में नकल करके अर्थात् दोहरा के क़ुरान का कलेवर बढ़ाने में अपनी कौन सी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया है ?

क़ुरान में यदि कोई नई बातें दी जाती जो पुरानी किताबों में पहिले से मौजूद न होतीं तब तो क़ुरान की महत्ता थी । दूसरे एक ही प्रकार की बातों को बार-बार लिखना लेखक की शान में बट्टा लगाने वाली बात है ।

(2) किस्सा जकरियाह (इंजील) यहूदियों के राजा हेरोदेस के समय में अव्वियाह के दल में जकरियाह नाम का एक याजक था और उसकी पत्नी का नाम इलिशिवा था । इंजील लूका 1-5

उनके कोई सन्तान न थी । इंजील लूका 1-6

क्योंकि इलिशिवा बांझ थी । इंजील लूका 1-7

जकरियाह को प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी और खड़ा हुआ दिखाई दिया । इंजील लूका 1-11

स्वर्गदूत ने कहा—हे जबरियाह ! भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलिशिवा के तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा और तू उसका नाम यूहन्ना रखना । इंजील लूका 1-13

जकरियाह ने स्वर्गदूत से पूछा—यह मैं कैसे जानूँ ? क्योंकि मैं भी तो बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है और दूसरे वह बाँझ है । इंजील लूका 1-18

स्वर्ग दूत ने उसको उत्तर दिया कि मैं जिब्रील फरिश्ता हूँ जो प्रभु

के सामने खड़ा रहता हूँ और मैं तुझसे बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को तेरे पास भेजा गया हूँ। इंजील लूका 1-19

कुछ समय पश्चात् उसकी पत्नी इलिशिवा गर्भवती हुई।

इंजील लूका 1-24

नकल व परिवर्तन

किस्सा जकरियाह (क़ुरान से)

जकरियाह बोला कि – ऐ परवर्दिगार! मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा है, और ऐ मेरे परवर्दिगार! मैं तुझसे मांग कर खाली नहीं रहा।

क़ुरान पारा 16 सूरे मरियम रुकू 1 आयत 4

अपने (मरे) पीछे मुझको भाई बन्दों से डर है और मेरी बीवी बांझ है, बस! अपनी तरफ से मुझको एक वारिस अर्थात् बेटा दे।

क़ुरान पारा 16 सूरे मरियम रुकू 1 आयत 5

ख़ुदा ने कहा–हे जकरियाह! हम तुमको एक लड़के की खुशखबरी देते हैं जिसका नाम यहिया होगा....।

क़ुरान पारा 16 सूरे मरियम रुकू 1 आयत 7

जकरियाह ने कहा कि–ऐ मेरे परवर्दिगार! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है। जब कि मेरी बीबी तो बांझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो गया हूँ।

क़ुरान पारा 16 सूरे मरियम रुकू 1 आयत 8

ख़ुदा ने कहा–ऐसा ही तुम्हारा परवर्दिगार कहता है कि तुमको इसमें बेटा देना हमारे लिये आसान है।

क़ुरान पारा 16 सूरे मरियम रुकू 1 आयत 9

वक्तव्य–

इंजील और क़ुरान की कथा हमने संक्षेप में ऊपर दी है। दोनों कथायें बिल्कुल एक हैं जिनमें कोई भी अंतर नहीं है। जिससे साफ ज़ाहिर है कि क़ुरान ने इंजील की नकल की है।

एक बात क़ुरान ने इंजील के विरुद्ध लिखी है कि उस पैदा होने वाले बच्चे का नाम इंजील के अनुसार 'यूहन्ना' रखा गया था जो कि ऐतिहासिक सत्य है पर क़ुरान ने अपनी मनमानी से उसका नाम 'यहिया' रख दिया है जो कि गलत है, क्योंकि इंजील में कहीं भी यहिया नाम का कोई व्यक्ति कभी हुआ ही नहीं ।

यूहन्ना और ईसा का समकालीन होना, ईसा का यूहन्ना से ही दीक्षा लेना आदि ईसाई मतानुसार ऐतिहासिक तथ्य है ।

अतः क़ुरान की यह बात अमान्य है। नकल करते समय क़ुरानकार को यहाँ भूल नहीं करनी चाहिये थी । इससे क़ुरान की इस बात का भी खण्डन हो गया–

ऐ पैग़म्बर ! तुझसे वही बात कही जाती है जो तुझसे पहिले पैग़म्बरों से कही जा चुकी है ।

क़ुरान पारा 24 सूरे हामिम संदह रुकू 5 आयत 43

ख़ुदा एक है और वह स्वर्ग में रहता है

(तौरेत व ज़बूर से)

सम्पूर्ण तौरेत व ज़बूर में केवल एक यहोवा प्रभु का ही उल्लेख है और उसी की उपासना का आदेश है ।

जबूर–सभोपदेशक वाले विवरण 5-2 में लिखा है क्योंकि प्रभु स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है, इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों । इसके अनुसार ख़ुदा के रहने का स्थान स्वर्ग माना गया है ।

नकल व परिवर्तन

ख़ुदा एक है और वह बहिश्त में रहता है

(क़ुरान से)

तुम्हारा पूजित एक ख़ुदा है, उसके सिवा कोई दूसरा पूजित नहीं । वह बड़ा दया करने वाला तथा कृपालु है ।

क़ुरान पारा 2 सूरे बकर रुकू 19 आयत 163

परहेजगार (मुसलमान) स्वर्ग के बागों में और नहरों में होंगे ।

क़ुरान पारा 27 सूरे कमर रुकू 3 आयत 54

सच्ची बैठक में बादशाह (ख़ुदा) के पास जिसका सब पर कब्ज़ा है ।

क़ुरान पारा 27 सूरे कमर रुकू 3 आयत 54

वक्तव्य–

एक ख़ुदा होने की मान्यता तौरेत व ज़बूर से ही क़ुरान ने सीखी है और ख़ुदा के स्वर्ग में रहने की बात भी उसी से नकल की गई है । एकेश्वरवाद की मान्यता वस्तुतः वेद की है । क़ुरान की अपनी कल्पना नहीं है उसने यहूदी मत से उसे सीखा था ।

''संगअसवद'' मक्के की मस्जिद काबा में एक विशाल काले रंग का पत्थर है जैसे हिन्दुओं में शिवलिंग होता है । कहते हैं कि हज़रत मुहमद साहिब के आगमन से पूर्व मक्के में विभिन्न देवी देवताओं की 360 मूर्तियां थी । हज़रत मुहम्मद साहिब ने इनमें से ''सगअसवद'' को छोड़कर शेष सब मूर्तियों को तुड़वा दिया क्योंकि उन्हीं के विचारानुसार ''संगअसवद'' अल्लाह का प्रतीक है । इसलिये हज करते समय प्रत्येक मुसलमान इसका बोसा लेता है क्योंकि उनका ख्याल है ऐसा करने से उसके सारे गुनाह माफ हो जाते हैं ।

परन्तु यह सिद्धांत वैदिक धर्म के विरुद्ध है क्योंकि इसके अनुसार किये हुए कर्मों का फल व्यक्ति को अवश्य भोगना पड़ता है । यदि ऐसा न हो तो संसार में और पाप बढ़ जायेंगे । क़ुरान के इस सिद्धांत को मानने से संसार में पापों और अपराधों की वृद्धि होगी । अतः यह सिद्धान्त मानवता के कल्याण के लिये उचित नहीं है । कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर ने सत्य ही लिखा है–

है मज़हब इस्लाम गंदा इससे उलफ़त छोड़ दो ।
सत्य वैदिक धर्म जो है उससे प्रीति जोड़ लो ।
सुन के हथकंडे कुराँ के धर्म से गाफ़िल (असावधान) न हो ।
बीबी और लौंडों से मियाँ दिल लगाना छोड़ दो । ।

महर्षि दयानंद के समय हिन्दी भाषा में क़ुरान उपलब्ध नहीं था। परन्तु इसका उर्दू भाषा में अनुवाद हो चुका था। महर्षि दयानन्द को उर्दू भाषा नहीं आती थी। अतः उन्होंने पटना निवासी मुंशी मनोहर लाल जोकि उर्दू व हिन्दी भाषा जानते थे। क़ुरान का हिन्दी में अनुवाद करवाया। इसके बाद मौलवियों को दिखाकर इसका अध्ययन किया।

सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से प्रतीत होता है कि महर्षि दयानंद ने इस ग्रंथ के 14वें समुल्लास के पाखंडों एवं अवैज्ञानिक युक्तियों का खंडन किया है। जैसे–

जिसको चाहता है क्षमा करता है जिसको चाहे दुःख देता है।
जो कुछ किसी को भी न दिया वह तुम्हे दिया।।

--म. 2/सि. 6/स. 5 / आ. 18/20

समीक्षक – जैसे शैतान जिसको चाहता है पापी बनाता है वैसे ही मुसलमानों का ख़ुदा भी शैतान का काम करता है। जो ऐसा है तो फिर बहिश्त और दोजख में ख़ुदा जावे क्योंकि वह पाप-पुण्य करने वाला हुआ जीव पराधीन है उसकी भलाई बुराई सेनापति की होती है, सेना पर नहीं।।67।।

क़ुरान का सार है कि जीव हत्या न करो। पशु मारने से जन्नत नहीं मिलेगा। अभिमान मत करो। क्योंकि यह सारी बुराइयों की जड़ है। ब्याज न लो। शराब को हराम समझो। मानवता की सेवा करो। सच्चा मुसलमान सब धर्मों का आदर करता है। जिहाद का अर्थ है इस्लाम का प्रचार-प्रसार प्रेम से करना न कि तलवार से।

अन्ततः इतना ही कहना काफी होगा कि स्वयं क़ुरान ने जो दलीलें अपने को ईश्वरीय पुस्तक होने के पक्ष में पेश की हैं उन पर भी क़ुरान ख़ुदाई किताब साबित नहीं हो सकता है। क़ुरान केवल मक्का और उसके आसपास के लोगों को डराने के लिए ही लिखी गई थी। उसे सरल अरबी में इसीलिए बनाया था ताकि वहाँ के लोग उसे समझ

सकें । वह संसार के लिये नहीं लिखी गई थी । था । ख़ुदा का दावा है कि असल क़ुरान में जर्रे से लेकर संसार की हर चीज का वर्णन है, जब कि मौजूदा क़ुरान में ख़ुदा ने पहिले उतारी हुई अनेक आयतों को स्वयं निकाल डाला था और उनकी जगह नई आयतें बनाकर उसमें मिला दी थीं, यह बात स्वयं ख़ुदा ने क़ुरान में स्वीकार की है ।

इससे स्पष्ट है कि मौजूदा क़ुरान भी वह असली क़ुरान नहीं है जो ख़ुदा ने पहिली बार में उतारा था । इस आयत से यह भी स्पष्ट है कि ख़ुदा अज्ञानी है जो एक बार में सही और बिल्कुल ठीक बात भी नहीं उतार सकता था, जबकि योग्य मजिस्ट्रेट इस दुनियाँ में कभी भी अपना हुक्म बार-बार नहीं पलटते हैं । क़ुरान ने शर्त पेश की है –

असली क़ुरान से मुर्दे जिन्दा हो जाते हैं, पहाड़ फट जाते हैं, किन्तु मौजूदा क़ुरान से आज तक एक भी मुसलमान मरा हुआ जिन्दा नहीं हो सका है, न एक तिनका भी क़ुरान के ऊपर रखने पर चूर-चूर हो सकता है । इस कसौटी पर भी मौजूदा क़ुरान असली क़ुरान साबित नहीं होती है । क़ुरान कहता है कि–

उसमें जो कुछ भी लिखा है सब सच ही सच है । उसमें झूठ का आगे और पीछे से भी प्रवेश नहीं हैं पिछले अध्यायों को देखने से स्पष्ट होगा कि क़ुरान में बहुत से स्थल परस्पर विरोधी हैं जिनसे जाना जा सकता है कि उनमें से एक या दोनों ही बातें जो परस्पर विरोधी हैं, अवश्य मिथ्या होंगी । क़ुरान में लिखा है–

यह पुरानी किताबों तौरेत, ज़बूर और इंजील का समर्थन करता है तथा उन्हें भी ईश्वरीय किताबें मानता है । ख़ुदा ने भी क़ुरान में दावा किया है कि मुहम्मद साहब से उसने केवल वही बातें कही हैं जो पहिले पैग़म्बरों से कही थीं । परन्तु हमने बहुत से स्थल उपस्थित किये हैं जिनमें क़ुरान की बातों का पुरानी खुदाई माने जाने वाली किताबों से विरोध है, बहुत सी बातें उनमें हैं जो क़ुरान में नहीं है, तथा बहुत सी बातें क़ुरान में हैं और उनमें नहीं हैं ।

जबकि ख़ुदा के दावे के अनुसार क़ुरान में केवल वही बातें होनी चाहिये थी जो पहली किताबों में मौजूद थीं। इससे या तो यह मानना पड़ेगा कि क़ुरान का यह दावा गलत है कि चारों किताबों को ख़ुदा ने ही कहा था, या यह मानना होगा कि क़ुरान में जो बातें पुरानी किताबों की विरोधी अथवा नई मिलती हैं वे बाद में लोगों ने अपने मन से गढ़कर उसमें मिला दी हैं। दोनों स्थितियों में क़ुरान ख़ुदाई किताब नहीं रह सकेगी।

क़ुरान में अनेक स्थल बुद्धि-तर्क-विज्ञान तथा सृष्टि नियम के भी विरुद्ध हैं, यह भी हमने पीछे अनेक प्रमाण उपस्थित करके प्रमाणित किया है, इससे भी हम क़ुरान को ख़ुदाई किताब नहीं मान सकते हैं। क्योंकि ख़ुदा की बातें, बुद्धि और सृष्टि-नियम तथा विज्ञान विरुद्ध नहीं हो सकती है। क़ुरान में परस्पर विरोधी बातों का होना और उस पर भी उसे ख़ुदाई कलाम बताना साक्षात् ख़ुदा को अज्ञानी घोषित करना है। समझदार लोगों की बातों में परस्पर विरोधी स्थल नहीं होते हैं, उनमें एकरूपता होती है। तो ख़ुदा क्या इन्सान से भी कमजोर अक़्ल रखता था जो कहीं कुछ कहीं कुछ लिखता चला गया?

क़ुरान में ईसा को ख़ुदा द्वारा इंजील सिखाने अथवा देने की बात भी लिखी है, जबकि इंजील नाम की पुस्तक ईसा की मृत्यु के 325 वर्ष पश्चात् विभिन्न 17 लेखकों द्वारा लिखित 27 पुस्तकों को संग्रह करके बनाई गई थी। न ईसा से पूर्व कोई इंजील नाम की पुस्तक मौजूद थी, न ईसा ने कोई इंजील लिखी थी, न ख़ुदा ने उसे यह पुस्तक दी थी।

अतः स्पष्ट है कि क़ुरान की यह आयत इतिहास के विरुद्ध बात है तो जिस पुस्तक में सत्य के विपरीत बातों का समावेश हो उसे खुदाइ नहीं माना जा सकेगा। ईसामसीह की उत्पत्ति के विषय में तथा मृत्यु के लिये सूली पर चढ़ने की घटनाओं का जो वर्णन इंजील के अन्दर मिलता है, क़ुरान में ठीक उसके विपरीत लिखा गया है। ख़ुदा की दोनों

किताबों में ऐतिहासिक बातों में भी मतभेद का होना दोनों में से एक को अवश्य गलत साबित कर देता है ।

मज़े की बात यह है कि फिर भी ख़ुदा क़ुरान में इंजील को अपनी ओर से उतारी हुई किताब मानता जाता है और उसकी हर बात समर्थन करने का दावा करता है । इंजील में ईसामसीह को ख़ुदा का इकलौता बेटा माना है जबकि क़ुरान ने उसका खण्डन करके लिखा है कि ख़ुदा के कोई बेटा या बेटी नहीं है । जो ईसाई ईसा को खुदा का बेटा मानते हैं उन्हें क़ुरान में ख़ुदा ने काफिर घोषित किया है । पता नहीं इंजील में ख़ुदा ने ईसामसीह को अपना इकलौता बेटा बनाकर झूठ बोला हे या क़ुरान में गलत बात लिख दी है अथवा यह मानना होगा कि ख़ुदा को क़ुरान लिखाते समय यह स्मरण नहीं रहा होगा कि इंजील में पहले वह क्या लिख चुका है । क़ुरान में ख़ुदा ने दावा किया है कि –

उसमें जो कुछ भी लिखा है बिल्कुल सच सच बात लिखी है । तब हम यह सोचते हैं कि बहिश्त में जो सफेद अण्डे की तरह गोरे चिट्टे लौंडे अर्थात् गिल में और सुन्दरी कम उम्र की अछूती हूरें ख़ुदा ने मुसलमानों को ऐश करने के लिए देने का वायदा किया है, उनमें से उनका निकाह करावेगा, मस्ती के लिए सोंट व कपूर मिली बढ़िया शराबें पिलावेगा, सोने के कंकण, हूरें, रेशमी कपड़े, मखमली मसनद, लकड़ी के तख्त बैठने को देगा, खाने को मसालों से भरपूर पका हुआ गोश्त और मेवे दिया करेगा यह सब भी क्या सच बातें हैं ?

पक्के मकान मय बालाखानों के जिनमें झरोखें व खिड़कियाँ लगी होंगी । बाग़ों की छाया, नहरों का पानी, दूध-शहद व शराब की नहरें, कस्तूरी मिली हुई मुहर वाली सीलबन्द शराब की बोतलें भी ख़ुदा के यहाँ हर बहिश्ती को मिलेंगी । हम समझते हैं कि यह सारा लालच ख़ुदा ने इसलिये अरब वाले मुसलमानों को दिया कि वे इस्लाम में बने रहें तथा दूसरे लोग इस लालच में फंसकर मुसलमान बन जावें । क्या

ख़ुदा का काम भी लोगों में ऐय्याशी का शौक पैदा करा कर, शराबी बनाकर भ्रष्ट करना हो सकता था? इस प्रकार के लालच ख़ुदा ने यहूदियों और ईसाइयों को तौरेत, ज़बूर और इंजील में क्यों नहीं दिये थे।

यह नियामतें मुसलमानों को ही क्यों दी गई थीं? गोरे चिट्टे लौंडे पेश करना भी क्या ख़ुदा का काम हो सकता है? क्या व्यभिचार का प्रचारक भी कोई खुदा हो सकता है? हम समझने में असमर्थ हैं कि कोई भी व्यक्ति या ख़ुदा अपनी बदनामी कराने वाली बातें स्वयं अपनी किताब में कैसे लिखने बैठेगा?

ख़ुदा ने यदि समय-समय पर तौरेत, ज़बूर, इंजील व क़ुरान उतारे थे तो उनमें अच्छी-अच्छी बातों को ही क्यों नहीं लिखवाया? परस्पर लड़ाने वाली बातें, लोगों को भ्रष्ट करने की आज्ञायें, विज्ञान विरुद्ध उपदेश, मानव को दानव बनाने वाली बातें क्यों ख़ुदा ने लिख मारी थीं? वो कैसा ख़ुदा जो मानव जाति का शत्रु था। तौरेत पैदायश 27 में लिखा है कि–

ख़ुदा ने मनुष्यों के संगठन प्रेम उनकी एक भाषा को देखकर उनसे जल-भुनकर उनका विनाश करने को उनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा करके उनको छिन्न-भिन्न कर दिया। क़ुरान ने भी माना है कि पहले सभी लोग एक ही भाषा व एक ही धर्म को मानते थे। ख़ुदा की मानव जाति से शत्रुता तौरेत से स्पष्ट है, जिसे क़ुरान खुदाई किताब मानता है। तौरेत में ख़ुदा को मानव जाति को पैदा करके पछताना उत्पत्ति 6-6 तथा शाऊल को राजा बनाकर पछताना, 9 शैमुएल 15 में लिखा हुआ है।

ख़ुदा की याकूब से रात भर कुश्ती हुई और दोनों पहलवान बराबरी पर छूटे, ख़ुदा उसे पछाड़ भी नहीं पाया यह तौरेत पैदायश 32 में लिखा है। ख़ुदा अपनी रक्षा के लिए 20 करोड़ घुड़सवार सेना रखता था यह इंजील में प्रकाशित वाक्य 9-16 में लिखा है–

इस प्रकार की बातें जब हम क़ुरान या उसके द्वारा मान्य ख़ुदाई किताबों में पढ़ते हैं तो हम यह मानने पर विवश हो जाते हैं कि इनमें से एक भी किताब ख़ुदाई नहीं है। लोगों को मूर्ख बनाने के लिए लोगों ने इन्हें खुदाई किताबें घोषित कर रखा है अथवा इन किताबों का बनाने वाला ख़ुदा यदि था तो वह साधारण से शिक्षित किसी भी मनुष्य से भी गिरी हुई योग्यता का व्यक्ति था। ऐसे मानव जाति के शत्रु को ख़ुदा नहीं माना जा सकता है। सत्य बात तो यह है कि प्रभु की पवित्र सत्ता को इन किताबों के बनाने वालों ने कलंकित करके रख दिया हैं परमात्मा संसार का पिता, सर्वत्र-सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु सत्ता है। उसमें मानवीय दुर्बलताओं का समावेश कर देना और जिन किताबों में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हों उन्हें मान्यता देना भारी भूल है।

ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें बार-बार नहीं आया करती हैं। प्रभु का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में मानव जाति को मिलता है। उसमें इतिहास की घटनायें, ईर्ष्या, द्वेष के उपदेश नहीं होते हैं। उसमें परमात्मा आत्मा प्रकृति, विज्ञान की बातें, जीवों के कल्याण के उपदेश, मोक्ष का 'निर्दोष' मार्ग, संसार में भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करने के लिए व्यक्तियों को मार्ग प्रदर्शन, प्रलय काल तथा मोक्ष की स्थिति का वर्णन, प्रभु की सत्ता के निर्दोष स्वरूप का वर्णन, सृष्टि उत्पत्ति, सृष्टि की आयु का उल्लेख जो विज्ञान से भी पुष्ट हो सके आदि सभी प्रकार की उपयोगी बातों का उल्लेख ईश्वरीय ग्रंथ में होना चाहिये।

ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ पक्षपात, ईर्ष्या, द्वेष, परस्पर विरोध ऐतिहासिक कल्पनापूर्ण, विज्ञान एवं सृष्टि क्रम के विरुद्ध बुद्धि विरुद्ध प्राणियों के लिए हानिकारक उनकी उन्नति में घातक, ईश्वर व जीव के स्वरूप को विकृत करने वाले उपदेश, मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति में रुकावटें डालने वाले आदेश, झूठे प्रलोभन

देने वाली बातों आदि से मुक्त होते हैं । हमें तौरेत, ज़बूर, इंजील और क़ुरान नाम की उपलब्ध चारों पुस्तकों में से एक में भी ऐसी बातें नहीं मिल सकी हैं जिनसे उन्हें ईश्वरीय किताबें माना जा सके ।

इस संसार के सम्पूर्ण साहित्य में ईश्वरीय ज्ञान के लक्षण केवल चारों वेदों यथा – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद में ही घटते हैं । जिनमें ज्ञान-विज्ञान, सृष्टि नियम, जीवों के सर्वविधि कल्याण तथा मोक्ष प्राप्ति के अत्यन्त बुद्धि गम्य, सत्य उपदेश मिलते हैं । अन्य किसी भी आसमानी किताब मानी जाने वाली पुस्तक को हम निर्दोष नहीं पाते हैं ।

क़ुरान के 25 अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्धरण

पहला पारा

1. ख़ुदा तो जिसको चाहता है अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है ।

दूसरा पारा

2. (ऐ पैग़म्बर) लोग तुम तो शराब और जुए का हुक्म दरयाफ़्त करते हैं कहदो कि इनमें नुक़सान बड़े हैं ।
3. ख़ुदा से डरते रहो और ध्यान रखो कि ख़ुदा हर चीज से वाक़िफ़ है ।
4. ख़ुदा लोगों पर मेहरबानी रखता है लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते ।

तीसरा पारा

5. सौदे को ख़ुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम तो जिस शख़्स के पास ख़ुदा की नसीहत पहुँची वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया ।

चौथा पारा

6. किसी शख़्स में ताक़त नहीं कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर मर जाये

(उसने मौत का) वक्त मुकर्रर करके लिख रखा है ।

7. अगर ख़ुदा तुम्हारा मददगार है तो तुम पर कोई कष्ट नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनों (धार्मिक मुसलमानों) को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें ।

8. जो औरतें तुम को पसंद हो दो-दो या तीन-तीन या चार-चार उनसे निक़ाह कर लो और इस बात का अन्देशा हो कि (सब औरतों से) यकसाँ सलूक न कर सकोगे तो एक औरत काफी है ।

9. जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं और दोज़ख में डाले जायेंगे ।

छटा पारा

10. जो चोरी करे मर्द हो या औरत, उनके हाथ काट डालो ।

आठवाँ पारा

11. जो कोई (ख़ुदा के हज़ूर) नेकी लेकर आयेगा । उसको वैसी इस नेकियाँ मिलेगी और जो बुराई लायेगा उसे सज़ा वैसी ही मिलेगी ।

नौंवाँ पारा

12. जिन्होंने बुरे काम किये फिर उसके बाद तौबा करली और ईमान ले आये तो कुछ शक नहीं । तुम्हारा परवरदिगार उसके बाद (बख्श देगा कि वह) बख्शाने वाला मेहरवान है ।

13. मोमिन (धार्मिक मुसलमान) तो वह है कि जब ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो उनका ईमान बढ़ जाता है और वह अपने पर्वरदिगार पर भरोसा रखते हैं ।

दसवाँ पारा

14 सब्र से काम लो, कि ख़ुदा सब्र करने वाले का मददगार है ।

तेरहवाँ पारा

15. यह क़ुरान और कुछ नहीं तमाम आलम के लिए नसीहत है ।

16. ख़ुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उसके हुक्म को रद्द करने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है ।

17. ऐ पर्वरदिगार ! जो बात हम छिपाते और जो जाहिर करते हैं तू सब जानता है और ख़ुदा से कोई चीज मख़्फ़ी नहीं (न) जमीन में (न) आसमान में ।

चौदहवाँ पारा

18. ख़ुदा ने जो तुम को हलाल तैय्यब रिज़्क़ दिया है उसे खाओ और अल्लाह की नैयमतों का शुक्र करो, और उसकी इबादत करते रहो ।

अठारहवाँ पारा

19. ऐ पैगम्बर ! पाकीजा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो मैं उससे वाक़िफ़ हूँ और यह तुम्हारी जमायत (हक़ीक़त में) एक जमायत है और मैं तुम्हारा पर्वरदिगार हूँ तो मुझ से डरो ।

उन्नीसवाँ पारा

20. ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वही अर्शे अज़ीम का मालिक है ।

चौबीसवाँ पारा

21. ख़ुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो ।

पच्चीसवाँ पारा

22. ख़ुदा के सिवा न कोई तुम्हारा दोस्त है और न मददगार ।

अठाईसवाँ पारा

23. क़यामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते नाते काम आयेंगे और न औलाद, उस रोज़ वही तुम में फ़ैसला करेगा और जो कुछ तुम

करते हो ख़ुदा उसको देखता है ।

24. ख़ुदा (जो माबूदे बरहक़ है उस) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तो मोमिनो को चाहिये कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें ।

25. जो ख़ुदा से डरेगा ख़ुदा उसके काम में सहूलियत पैदा करेगा ।

क़ुरानप्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. क़ुरान का क्या अर्थ है ?

उत्तर पढ़ने योग्य पुस्तक (Excellant Book) इसके विषय में राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं--

क़ुरान क्या है? ईश्वर-प्रदत्त एक अरबी ग्रंथ। उसके प्रदान का प्रयोजन क्या? यही कि सन्मार्ग – भ्रष्ट जनों को भय दिखा और श्रद्धालुओं को उनके पुण्य कार्यों के मंगलमय परिणाम का संदेश दे सत्पथ पर आरूढ़ किया जाये।

--इस्लाम धर्म की रूपरेखा पृ० 14

प्रश्न 2. क़ुरान किस नबी पर नाज़िल (उतरी) हुई?

उत्तर हज़रत मुहम्मद साहिब ।

प्रश्न 3. क़ुरान हज़रत मुहम्मद साहिब पर कितने समय तक नाज़िल (उतरी) होती रही?

उत्तर 23 वर्ष ।

प्रश्न 4. क़ुरान का संकलन कब किया गया?

उत्तर 650 ई० में ।

प्रश्न 5. क़ुरान में कितने पारे, सुरे, रुकू, आयतें, भाषायें, शब्द और अक्षर हैं?

उत्तर क़ुरान में 30 पारे, 114 सूरे, 558 रुकू, 6,236 आयतें, 75 भाषायें, 77,629 शब्द और 3,23,015 अक्षर हैं ।

प्रश्न 6. **क़ुरान के 30 पारों में सबसे छोटा और सबसे बड़ा पारा कौन सा है?**

उत्तर क़ुरान में सब से छोटा 19वाँ पारा (वक़ालल्लीन ज़ीन सूर-हे-फ़ुर्क़ान) है और सबसे बड़ा पारा 23वाँ (वम्मालिय) है ।

प्रश्न 7. **इस्लाम के क्या अर्थ हैं?**

उत्तर इसका अर्थ है ख़ुदा के आगे सम्पूर्ण समर्पण और मानव के साथ शांति और प्रेम का व्यवहार करना ।

प्रश्न 8. **इस्लाम का मूलमंत्र क्या है?**

उत्तर कलमा ।

अर्थात् – लाईलाहा इल्लल्लाह-अल्लाह मुहम्मद रसूल अल्लाह ।

ख़ुदा एक ही है उसके कोई बराबर नहीं है । मुहम्मद उसका संदेशवाहक हैं ।

प्रश्न 9. **मृत्यु के समय मुसलमान भाई क्या कहते हैं?**

उत्तर हे ख़ुदा ! मरने वाले की रूह को शांति मिले । यह सच है कि हमने भी मरना है ।

प्रश्न 10. **हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद किन-किन व्यक्तियों ने क़ुरान को एकत्रित किया?**

उत्तर 1. हज़रत अली, 2. हज़रत अबू जैद, 3. हज़रत ज़ैदविन साबित रजि उल्लाह, 4. हज़रत अन्स ।

–बुखारी शरीफ हदीस 389 सफा 166 जिल्द 2

प्रश्न 11. **क़ुरान के अनुसार अल्लाह के कितने नाम हैं?**

उत्तर 99 ।

प्रश्न 12. **किन-किन जुर्मों में मुसलमान क़त्ल के काबिल होता है?**

उत्तर 1. किसी को मार डालने वाला ।

2. ब्याहा हुआ ज़िना (व्यभिचार) करे ।

3. मुरतिद हो (मुसलमान काफिर हो जाये)

–जिल्द 3 फसल-1 हदीस नं० 254

प्रश्न 13. क्या क़ुरान में ओम् है ?

उत्तर हां, क़ुरान में ओम् है । ओम् विश्व शांति एवं मानव एकता का प्रतीक है । ओम् के तीन अक्षर हैं--1. अ = परमात्मा, 2. उ = आत्मा, 3. म् = प्रकृति ।

इसी प्रकार क़ुरान में भी ओम् के लिये तीन अक्षर लिखे हैं–

1. अलिफ़ = अल्लाह = परमात्मा ।

2. लाम = लतियल्कुलजीम = रूह = आत्मा ।

3. मीम = माया = प्रकृति ।

यहाँ तक कि क़ुरान में ओ३म् शब्द भी लिखा है और हवन करने के लिए भी लिखा है ।

प्रश्न 14. जिहाद क्या है और यह कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर जिहाद का अर्थ है बुराई को समाप्त करने के लिए संघर्ष करना । जिहाद निम्नलिखित तीन प्रकार का होता है ।

(1) नफसी जिहाद – मन को कुकर्म करने से रोकना ताकि मन शुद्ध रहे । सारे ब्रह्माण्ड के कल्याण के लिये तत्पर रहना । स्वयं सत्य मार्ग पर चलना और दूसरों को चलाना जिससे सभी इंसान नेकी के मार्ग पर चलें । जैसे क़ुरान के सूरे फातियां में लिखा है ।

ऐ अल्लाह पाक ! हमें ऐसे रास्ते पर चला जिस मार्ग पर चलने पर आपकी अपनी रहमत हुई है । न कि ऐसे रास्ते पर जिस पर आपको आज़ाब नाज़िल हुआ है ।

ऐसे विचारों वाला व्यक्ति हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कोई भी हो सकता है ।

2. कलमी जिहाद – हम कलम के द्वारा पुस्तकों एवं मीडिया के द्वारा ग़लत कार्यों के विरुद्ध आवाज़ उठाकर रोकें जिससे सारे संसार में ज्ञान, अहिंसा एवं मानवता का साम्राज्य स्थापित हो जाये ।

3. शमुशीर जिहाद – यदि काफ़िर (अत्याचारी) बार-बार समझाने पर भी न माने तो हमें शक्ति के अनुसार तलवार उठा लेनी चाहिए और उसे डराकर मानवता के मार्ग पर लाना चाहिए । परन्तु यदि फिर भी न माने तो उसका वध कर देना चाहिए ताकि पुनः कुकर्म न कर सके । पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहिब ने इंसाफ को कायम करने के लिये जिहाद किया था ।

प्रश्न 15. संगअसवद क्या है ?

उत्तर मक्के की मस्जिद काबा में एक विशाल काले रंग के पत्थर को ''संगअसवद'' के नाम से पुकारा जाता है । प्रत्येक मुसलमान हज करते समय इसको चूमता है । क्योंकि हज़रत मुहम्मद साहिब ने इसको चूमा था । क्योंकि यह स्वर्ग से आया हुआ है । ऐसा करने से अल्लाह हाजी के सारे गुनाह माफ कर देता है । परन्तु यह सिद्धान्त वैदिक सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि किये हुए कर्मों का फल अवश्य भुगतना पड़ता है ।

प्रश्न 16. क़ुरान की कितनी आयतें वेदमंत्रों का अरबी रूपांतर है ?

उत्तर 116 आयतें । जैसे--

लाइलाहा इल्लाल्लाह (तौहीद) एकेश्वरवाद

केवल एक अल्लाह ही पूजनीय है जोकि सारे संसार का स्वामी व पालक है। वस्तुतः यह आयत भाग ऋग्वेद के सूक्त का अरबी रूपांतर है। देखिए–

जनानां एको विश्वस्य भवनस्य राजा –ऋग्वेद 4.36.4

इस सारे जगत् एवं सृष्टि का एक स्वामी परमात्मा है। उसकी ही उपासना करो।

यहाँ तक कि क़ुरान में वेद के स्थान पर ''वुद'' शब्द आया है। यह ''वुद'' शब्द वेद का अपभ्रंश रूप है क्योंकि अरबी भाषा में मात्राएं ऊपर न लगा कर नीचे लगती हैं। अतः वेद का वुद वन गया। जैसे कि डॉ० कुँवर आनन्द सुमन सिंह लिखते हैं--

तख्त पर अल्लाह ताला के बराबर किताब रखी है जिसके चार भाग हैं। उसका नाम वुद है।

–वैदिक धर्म और इस्लाम पृ० 44

प्रश्न 17. क्या क़ुरान में विरोधाभास है?

उत्तर क़ुरान में निम्नलिखित उद्धरणों के पता चलता है कि इसमें विरोधाभास है। जैसे–

1. कुल इन्नल्लाहा ला यामुरो विल फ़ाहशाये

–पारा 8 रुकू 3-10

ऐ मुहम्मद! कह दो कि अल्ला आदेश नहीं देता है, बुरी बात व बुरे काम के लिये। ख़ुदा का स्वभाव सद्गुणों व सत्कार्यों की आज्ञा देना है।

2. वा इज़ा अन्नोहलेक़ा अमोहलेका कर्यतन-1 अमर्ना मुतरफीहा फ़फसक़ू फ़ीहा फहक्का अलैहलकौलो फ़दर्म्मनाहा तदमीरा –पारा 15 रुकू 2-2

जब हम किसी ग्राम या नगर के लोगों का विनाश करना चाहते हैं तो उसके धनपतियों को आज्ञा कर देते हैं कि उनके लिये भेजे गये रसूल का विरोध करें। फिर वे रसूल की आज्ञा से परे हो जाते हैं। अनिवार्य हो जाता है उस बस्ती वालों के लिये अजब (संकट उत्पन्न करने की आज्ञा) का कलमा अर्थात् अज़ान के अधिकारी हो जाते हैं और फिर जड़ से उखाड़ देते हैं हम उन्हें और उनके घर बुरी प्रकार नष्ट कर देते हैं।

प्रश्न 18. क्या क़ुरान में पुनर्जन्म का सिद्धान्त है?

उत्तर क़ुरान में पुनर्जन्म का सिद्धान्त है। जैसे–

जिन पर ख़ुदा ने लानत की और उन पर अपना कोप उतारा और किसी को बन्दर और किसी को सूअर बना दिया था।

क़ुरान पारा 6 सूरे मायदा रुकू 9 आयत 60 इस आयत से ख़ुदा के पहिले दावे का खण्डन हो जाता है। हुक्म न मानने वाले लोगों ने कभी ख़ुदा से उनके कर्मों का नतीजा यहाँ पर ही देने को नहीं कहा था मगर ख़ुदा के दिमाग़ में गर्मी आ गई और तत्काल उसने बिना उनकी प्रार्थना के सुने ही इसी ज़िन्दगी में सज़ा अर्थात् उनका कर्मफल दे डाला।

साथ ही इस्लाम के इस उसूल पर भी पानी फेर दिया कि मरने के बाद रूहों को ख़ुदा अपने पास बुला कर रखता है और कयामत के दिन इन्सान को उसी की शक़्ल में बहिश्त व दोजख़ में भेजता है।

यहाँ तो उसने मनुष्यों को कर्मफल भोगने के लिए बन्दर की योनि में भेज दिया ऐसा लिखा है, जो कि हिन्दुओं के मान्य सिद्धान्त पुनर्जन्म का खुला समर्थन है। क्योंकि

कर्मफल भोगने के लिए जीवों का विभिन्न योनियों में जाने का सिद्धान्त वैदिक धर्म की मान्यता है ।

प्रश्न 19. इस्लाम में 5 मुख्य सिद्धान्त कौन से हैं ?

उत्तर इस्लाम में 5 मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :–

1. तौहीद (एकेश्वरवाद), 2. नमाज़ (प्रार्थना), 3. जक़ात (दान), 4. रोजा (उपवास), 5 हज (तीर्थयात्रा)

प्रश्न 20. हज और उम्रा में क्या अन्तर है ?

उत्तर नियमित समय में काबा-यात्रा करना हज़ कहलाता है और इसके अतिरिक्त अन्य समयों में वही उम्रा कहलाता है ।

प्रश्न 21. हज पर जाने के बाद मुसलमान भाइयों को क्या-क्या रस्में निभानी पड़ती हैं ?

उत्तर हज पर जाने के बाद मुसलमान भाइयों को मुख्यतः निम्नलिखित 4 रस्में निभानी पड़ती हैं–

1. इहाम -- मक्का प्रवेश से दूर ही एक स्थान पर सब हाजी एक कपड़ा तर ऊपर करके पहनते हैं ।

2. तवाफ़ -- क़ाबा की परिक्रमा ।

3. सई -- सफ़ा और मर्वा की पहाड़ियों के बीच दौड़ना ।

4. अर्फ़ात -- एक विशेष स्थान पर ठहराना ।

प्रश्न 22. मोमिन और मुस्लिम शब्दों के क्या अर्थ हैं ?

उत्तर मोमिन का अर्थ है सत्य प्रिय और मुस्लिम का अर्थ है शांतिप्रिय ।

प्रश्न 23. हदीस का क्या अर्थ है ?

उत्तर हदीस का अर्थ है क़ुरान का शेष संग्रह (Appendix)

प्रश्न 24. क्या क़ुरान कर्मसिद्धान्त को मानता है ?

उत्तर क़ुरान कर्मसिद्धान्त को नहीं मानता जैसे कि वेदों में

लिखा है कि जैसी करनी वैसी भरनी । जैसे--

कुल लिल्लज़ीना कफ़रू इंय्यन्तहू युग्फर लुहम्मा कद सलफ़

–पारा 9 रुकू 4-18

काफ़िरों को कह दो कि यदि कुफ़र का परित्याग कर देंगे तो उनके पूर्व में किये हुए कुफ़र के पाप भी क्षमा कर दिये जायेंगे और शिरक के अतिरिक्त अन्य पाप भी जिसके अल्लाह चाहेगा क्षमा कर देगा । दूसरे पाप छोटे या बड़े जान बूझकर या भूल से किये हो, पाप करने वाला बिना तौबा किये ही मर जाये तो उनको क्षमा करना अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है । परन्तु यह वेद विरुद्ध है क्योंकि किये हुए कर्मों को अवश्य ही भोगना पड़ता है ।

प्रश्न 25. क़ुरान सार क्या है ?

उत्तर जीव हत्या मत करो । पशु मारने से जन्नत नहीं मिलेगा । अतः अहंकार को मारो । यह सारी बुराइयों की जड़ है । मानवता की सेवा करो । सूद मत लो । शराब को हराम समझो । सच्चा मुसलमान दूसरे धर्म का आदर करता है । जिहाद अन्य दूसरों धर्मों के मानने वालों को जबरदस्ती इस्लाम धर्म में लाने के लिये नहीं है । अपितु अपने धर्म पर पूरा उतरने के लिये पूरी तरह शक्ति लगाने के लिये है । दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम दूसरों से करवाना चाहते हो । भूखे को भोजन दो, रोगी की सेवा करो और बन्धन में पड़े हुए को बन्धन मुक्त करो । किसी भी व्यक्ति के प्रति घृणा न करो । जैसे इस्लाम का पैग़ाम है–

अगर अल्लाह की सच्ची इबादत करनी है तो उसके सभी बंदों से प्यार करो और हमेशा सबके मददगार बनो । यह इबादत ही सही इबादत है । ईद की असल खुशी इसी में है ।

–पंजाब केसरी दिनांक 4.7.2016

जब दो मुसलमान भाई मिलते हैं तो एक कहता है--''अस्लाम वालेकुम'' और दूसरा कहता है ''वाले कुम अस्लाम'' अर्थात् आप पर शान्ति की वर्षा हो। जब इस्लाम में शान्ति पर इतना जोर दिया जाता है तो आतंकवाद के लिये गुंजाइश नहीं रह सकती है। अतः मुस्लिम भाइयों को आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये जिससे सारी मानवता में प्रेम की भावना फैले। उत्तर प्रदेश मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष काजी जैनुल साजिद्दीन मुफ्ती ने कहा है–

पवित्र क़ुरान और हदीस (क़ुरान की व्याख्या) शांति और भाईचारे का उपदेश देते हैं। अतः समय की मांग है कि हम अपने युवाओं को शिक्षित करें कि वे आतंकवादी संगठनों के बहकावे में न आएं जो अपने कुत्सित इरादों की पूर्ति के लिए इस्लाम का दुरुपयोग कर रहे हैं।

–पंजाब केसरी दिनांक 14.8.2015

3. श्रीगुरुग्रंथसाहिबसार

श्रीगुरुग्रंथसाहिब एक महान् धार्मिक ग्रंथ है। वस्तुतः श्री गुरुनानक देवी जी ने 1539 ई० में श्री गुरु अंगद देवजी को वाणी की एक पोथी भेंट की थी। इसके उपरांत भी गुरु अंगद देव जी ने इस पोथी में कुछ और वाणी शामिल करके इस को गुरु अमरदास जी को सौंप दिया था। गुरु रामदास जी ने उक्त गुरुओं एवं भक्तकवियों की बाणी एकत्रित करके इस वाणी के दो भाग कर दिये थे जिसके पृष्ठ 1048 थे। इस प्रकार गुरु रामदास जी इस अनमोल वाणी को लेकर अत्यंत प्रसन्न हुए।

इसके पश्चात् श्रीगुरु अर्जनदेव जी ने पूर्व गुरुओं और गत पाँच शताब्दियों के दौरान रचित भक्तों की वाणी जो गुरमति सिद्धान्तों के साथ मिलती थी को एकत्रित करके 1603 ई० में अमृतसर के किनारे बैठकर भाई गुरदास जी से बीड़ लिखवानी आरंभ की थी। इस प्रकार 16-8-1604 ई० को इसका सम्पादन पूरा हुआ था और उस समय इस ग्रंथ के 974 पृष्ठ थे। सबसे पहले इस ग्रंथ का नाम ''पोथीसाहिब'' रखा गया था। यह पहला हुक्मनामा था। इस प्रकार बाबा बुड्ढा जी जितनी देर तक हुकमनामा पढ़ते रहे, श्रीगुरु अर्जन देव जी खड़े-खड़े चंवर झूलाते रहे। हुकमनामा के पाठ की पूर्णता के पश्चात् ''पोथीसाहिब'' से कथा की गई। श्रीगुरु अर्जनदेव जी ने संतों को आदेश दिया–

आप इस ग्रंथ को गुरु का हृदय जानकर इसका सम्मान करना क्योंकि यह गुरु सार्वकालिक है, इसलिए इन पर विश्वास उत्तम है। मेरे शरीर से इन्हें बड़ा मान कर चलना। मैं स्वयं इनका आदर करता हूँ।

इसलिए उन्होंने भाई मनी सिंह को दोबारा यह सारा ग्रंथ जबानी लिखवा दिया था। अब इस ग्रंथ का नाम ''श्रीग्रंथसाहिब'' रखा गया। इस प्रकार संसार में यह सर्वप्रथम ग्रंथ है जिसको गुरु की पदवी प्राप्त हुई है। इसके पश्चात् 1705 ई० में दमदमा साहिब में श्री गुरु गोबिंदसिंह जी ने अपने पिता श्री गुरु तेगबहादुर जी की वाणी में

जोड़कर इसको पूर्ण किया था। श्रीगुरुगोबिन्दसिंह जी ने अपनी मृत्यु के केवल 4 दिन पूर्व 4-10-1708 ई० को सिख संगत को बुलाया और इस पवित्र ग्रंथ को लाने को कहा और आदेश दिया--

संतो! मेरे बाद कोई जीवित व्यक्ति इस गुरुगद्दी पर विराजमान नहीं होगा। इस गुरुगद्दी पर श्रीगुरुग्रंथसाहिब विराजमान होंगे। अब आप लोग इन्हीं से अपना मार्गदर्शन कराना और इन्हीं से आदेश प्राप्त करना।

इस प्रकार 4-10-1708 ई० को श्रीगुरुगोबिन्द सिंह ने श्रीगुरुग्रंथसाहिब को गुरुगद्दी बख्शी। उन्होंने श्रीगुरुग्रंथसाहिब के आगे पांच पैसे और एक नारियल रखकर सिर नवाया और सारे सिखों को आगाह किया कि आज के पश्चात् श्रीगुरुग्रंथसाहिब को ही अपना गुरु माने। इसके पश्चात् इसका नाम श्रीगुरुग्रंथसाहिब रखा गया। श्रीगुरुगोबिंद सिंह ने आदेश दिया—

आगिआ भई अकाल की, तबै चलायो पंथ।

सब सिक्खन को हुकम है, गुरु मानीओ ग्रंथ।

गुरु ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह।

जो प्रभु को मिलबो चहे खोज सबद मैं लैह।

—(पंथप्रकाश, ज्ञानी ज्ञान सिंह, पृष्ठ 353)

श्रीगुरुग्रंथसाहिब का श्रीगणेश ੧ओं (एक ओंकार) शब्द से होता है जोकि सिक्ख धर्म का मूलमंत्र है और यह शब्द इस ग्रंथ में 33 बार अंकित है। इसका भाव है कि परमात्मा एक है। इसकी वाणी को 5 नामों से पुकारा जाता है-- 1. गुरुवाणी, 2. धुर की वाणी, 3. खसम की वाणी, 4. महापुरख की वाणी, 5. सतिगुर की वाणी। इसमें 36 विभिन्न संत-महात्माओं की रचनाएं, 31 विभिन्न रागों में संकलित हैं जैसे—गुरुनानक देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु अर्जन देव जी, गुरुतेग बहादुर जी, कबीर जी, सेख फरीद जी, नामदेव जी, रविदास जी, पीपा जी आदि। प्रस्तुत ग्रंथ में सबसे अधिक वाणी (2305 शब्द)

गुरु अर्जन देव जी के हैं और सब से कम एक-एक शब्द पीपाजी, रामानंद जी, सघना जी, सैणजी आदि संतों के हैं ।

इस ग्रंथ के 1430 पृष्ठ हैं जिन्हें अंग के नाम से पुकारा जाता है और इसमें 5867 शब्द एवं श्लोक हैं । इसमें 8344 बार हरि, 2583 बार राम, 13 बार वाहिगुरु शब्दों का प्रयोग हुआ है । इस की भाषा पंजाबी है और लिपि गुरुमुखी है । परन्तु इसमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अरबी, फारसी विभिन्न प्रांतीय बोलियों आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है । इस प्रकार इसकी मिश्रित भाषा है ।

प्रस्तुत ग्रंथ की मुख्य वाणियां ''जपुजीसाहिब'' (पृ० 1-8) एवं ''सुखमणी साहिब'' (पृ० 262-296) है । जपुजी साहिब गुरु नानक देव जी की वाणी है । इसी से ही श्रीगुरुग्रंथसाहिब का श्री गणेश होता है । इस वाणी में 38 पावडिया हैं । इसी प्रकार ''सुखमनीसाहिब'' गुरु अर्जनदेव जी की वाणी है । इसमें 24 अष्टपदीयां दिन रात 24 घंटों की गिनती के अनुसार हैं । प्रत्येक अष्टपदी में 1000 अक्षर हैं । इस प्रकार 24 अष्टपदियों का पाठ पुरुष के 2400 श्वांसों को सफल कर देता है । इसके अतिरिक्त इस ग्रंथ में वेद-महिमा का भी गुणगान किया गया है । जैसे :–

दीवा बलै अन्धेरा जाए । बेद पाठ मति पापां खाए ।
उगवै सूर न जापै चन्द । जह ज्ञान प्रणास अज्ञान मिटता ।
बेद पाठ संसार की कार । पढ़-पढ़ पण्डित करे विचार ।
बिन बुझे सब होवै खुवार, नानक उतरसि पारि । –सूही मुहल्ला-1

दीपक जले पर जैसे अन्धकार दूर हो जाता है, सूर्य चढ़ने पर जैसे चन्द्र दिखाई नहीं देता है, इसी प्रकार वेद ज्ञान का प्रकाश होने पर अज्ञान मिट जाता है, वेद का पढ़ना तो संसार भर का कर्तव्य है, विद्वान् पण्डितों के कर्तव्य हैं कि वेदार्थ का विचार करें बिना वेदार्थ विचार के सारे संसार के लोग दुःखी रहते हैं । नानक जी कहते हैं कि वेदाचरण करने वाला ज्ञानी ही संसार के भवसागर से पार उतर सकते

हैं । जैसे गुरुगोबिन्द सिंह ने वेदमार्ग पर न चलने का दुःख इस प्रकार व्यक्त किया है । जैसे–

कहुं न पूजा, कहुं न अर्चा, कहुं न श्रुति ध्वनि स्मृति चर्चा ।
कहुं न होम, कहुं न दानमं, कहुं न संयम, कहुं न स्नानम ।।

–दशमग्रंथ

यह बड़े दुःख का विषय है कि आज कहीं सच्ची पूजा नहीं और न कहीं उपासना है, कहीं वेदपाठ नहीं और न ही कहीं शास्त्र चर्चा है, न ही कहीं हवन एवं दान न ही कहीं संयम और न ही कहीं स्नान है ।

गुरुबाणी का शुद्ध उच्चारण–

प्रत्येक बोली की पृथक्-पृथक् लिपि होती है जैसे पंजाबी की गुरुमुखी, हिन्दी की देवनागरी, अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी जर्मनी की रोमन और प्रत्येक लिपि के अक्षरों की संख्या विभिन्न होती है । जैसे पंजाबी की संख्या पहले 35 थी परन्तु बढ़कर 41 हो गई है क्योंकि इसमें अरबी व फारसी के शब्दों को व्यक्त करने के लिए ख, ग, ज, फ, स, ल के नीचे बिन्दी लगाकर ख़, ग़, ज़, फ़, स़, ल़ नये वर्ण का निर्माण किया गया है ।

श्रीगुरुग्रंथसाहिब में लगभग 6 भाषाओं एवं 12 बोलियों के शब्द हैं । अतः जो व्यक्ति जितनी अधिक बोलियों को जानता होगा वह उतना ही गुरबाणी का शुद्ध उच्चारण कर सकेगा क्योंकि इसकी अपनी शैली की नियमावली है । जैसे गुरवाणी का पाठ करते समय यदि किसी शब्द के अंत में (ਿ) एवं (ੁ) की मात्रा लगी हो तो उसका उच्चारण नहीं होता जैसे नरकि का नरक और देहु का देह उच्चारण होगा । इसी प्रकार निवाज का निमाज, सैतान का शैतान, ग़रीब का गरीब, हजार का हज़ार, बखसीस का बखशीश शुद्ध उच्चारण होगा ।

गुरुबाणी की भाषा शैली –

भाषा की दृष्टि से श्रीगुरुग्रंथसाहिब एक अनुपम एवं अनूठा

ग्रंथ है। क्योंकि प्रस्तुत ग्रंथ 12वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी (बाबा फरीद से गुरु तेगबहादुर तक) के अत्यंत महत्वपूर्ण चिन्तकों की वाणियों का संकलन है। यह पंजाबी भाषा एवं गुरुमुखी लिपि में लिखा हुआ है। परन्तु इसकी भाषा सधुक्कड़ी (खिचड़ी) है। इसमें विभिन्न राज्यों के गुरु, संत-महात्माओं एवं कवियों का काव्य लिया गया है। इस कारण अनेक भाषाएं जैसे पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अरबी, फारसी आदि का प्रयोग किया गया है।

यदि छंद की दृष्टि से देखा जाए तो इस ग्रंथ का कोई सानी नहीं। बहुत से काव्य रूप जैसे–अष्टपदी, बारहमासा, आरती, घोड़ियां, अलाहुणीआं, पटी, बावन अखरी, सतवारा वार पउड़ी, रुती, थिती, सलोक, दोहे, चौपाई, सौरठा, सवईया आदि इस पावन ग्रंथ में मिलते हैं। इसलिए प्रिंसिपल सतबीर सिंह लिखते हैं–

ईसाई ख़ुदा की बोली लातीनी, मुसलमान अरबी और हिन्दू देववाणी संस्कृत को समझते हैं। गुरुग्रंथसाहिब ने समझाया कि अल्लाह, परमात्मा, वाहिगुरु की कोई खास बोली नहीं उसकी बोली सिर्फ प्यार है। इसलिये गुरुग्रंथसाहिब में हर प्रांत, हर देश, हर क्षेत्र और हर धर्म के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

श्रीगुरुग्रंथसाहिब जी का मुख्य संदेश है कि सारी मानवता को आपसी भाईचारे, सद्भावना, सहानुभूति, प्रेम का वातावरण पैदा करके संतोष, सुख, शांति एवं आनंद उत्पन्न करना। वस्तुतः इस महान् ग्रंथ के सारे संत-महात्मा, महापुरुष थे और वे सारी मानवता का सुधार करना चाहते थे। अतः इस ग्रंथ की शिक्षाएं सार्वभौमिक एवं सर्वकालीन है। यह ग्रंथ उच्चतम ज्ञान एवं आध्यात्मिक अनुभव का विशाल भंडार है। अतः इसके विषय में महात्मा चैतन्यमुनि ने लिखा है–

गुरुग्रंथसाहिब मात्र शब्दों का नहीं बल्कि अनुभव का ग्रंथ है। विभिन्न संतों ने अनुभूति के स्तर पर जो कुछ आत्मसात् के स्तर पर जो कुछ

आत्मसात् किया वही प्रस्तुत किया है । इन संतों ने भले ही विधिवत् आध्यात्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय न किया हो मगर इन्होंने साधना के उच्च शिखर में पहुँचकर जो कुछ अनुभव किया वहीं ग्रंथों का सार है । इसलिये ग्रंथसाहिब में वेदों, उपनिषदों, दर्शन ग्रंथों तथा ब्राह्मण ग्रंथों आदि के दार्शनिक तत्व स्वतः ही मिल जाते हैं ।

इसी प्रकार मैकॉल्क ने अपनी पुस्तक "Sikh Religion" में लिखा है--

वाणी पढ़ते हुए ऐसा अनुभव होता है कि जैसे स्नान हो रहा हो, पाप झड़ते जा रहे हों एवं भ्रम दूर होते जा रहे हो ।

ऑर्नलड टायनवी ने अपनी पुस्तक "Secret Religion of the Sikh" में लिखा है कि श्रीगुरुग्रंथसाहिब सारी मानवता का सांझा आध्यात्मिक भंडार है । सिखों के लिये श्रीगुरुग्रंथसाहिब जगतजोत है । यह एक प्रकार की सार्वलौकिक बीड़ है । तारण सिंह ने भी लिखा है–

सिख धर्म अपनी धर्म पुस्तक में बिल्कुल भारतीय है और राष्ट्रीय कोष को धारण करने वाला है । श्रीगुरुग्रंथसाहिब अपने आप में वेद है ।

–भक्ति में शक्ति-पृष्ठ 19

इसी प्रकार बलबीर पुंज लिखते हैं :--

मानवता के लिए गुरु अर्जुन देव का सबसे बड़ा योगदान गुरुग्रंथ साहिब है, जिसमें सामाजिक सौहार्द की अद्भुत छाप है । गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन अर्जुन देव जी (1581-1604 ई०) ने शुरू किया था और उसका समापन 10वें गुरु, गुरु गोविन्द सिंह जी ने किया । गुरुग्रंथ साहिब सम्पूर्ण मानवजाति के लिए एक अमूल्य आध्यात्मिक निधि है । इसमें केवल सिख गुरुओं की वाणीका ही संकलन नहीं है बल्कि इसमें भारत के विभिन्न भागों, भाषाओं और जातियों में जन्में संतों की वाणी भी संकलित है ।

अतः रामायण, गीता, बाइबल, क़ुरान आदि धार्मिक ग्रंथों की

भाँति इस महान् ग्रंथ का आविर्भाव अपने समय की एक ऐतिहासिक घटना है। इसका अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं में हो चुका है और होना भी चाहिए ताकि इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो और संसार के व्यक्तियों का जीवन सुखमय, शांतिमय और आनंदमय हो। अतः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि श्रीगुरुग्रंथसाहिब विभिन्न महापुरुषों की अद्भुत, अनुपम एवं अमर रचना है। इनकी रचना छंदबद्ध है और यह काव्यवाणी के अलंकारों से ओतप्रोत है जोकि सारी मानवता के कल्याण के लिये लिखी गई है। अतः इसका स्वाध्याय करके प्रत्येक व्यक्ति आने जीवन को सुन्दर एवं सफल बना सकता है। वस्तुतः यह एक धार्मिक नैतिक, आध्यात्मिक एवं महान् ग्रंथ है। इसकी सारी वाणी एक संदेश है—सरबत दा भला। अतः सरदार करनैल सिंह सरदार पंछी अपनी कविता ''श्रीगुरुग्रंथसाहिब'' जी में लिखते हैं :—

यह रूहानी तकदूस (पवित्रता) ''गुरु ग्रंथसाहिब'' कहलाये है।
सतिगुरु अरजन जी है इस ''ग्रंथ'' के तरतीबकार (संपादक)।
जिसका होता है मुकद्दसतर (अत्यंत पवित्र) ग्रंथों में शुमार (गणना)।
जिसमें शेख फरीद, भीखन शाह के सूफी विचार।
बहुत ही अमूल्य है सरमाया-ए-वहदत-निगार।
(पूंजी एवं एक ईश्वरवाद का पोषक)
भक्त त्रिलोचन, भक्त जयदेव का आला कलाम।
(ऊँचे स्तर का काव्य)
सारी दुनियाँ में जिसे सिक्ख पढ़ते हैं हर सुबह-ओ-शाम।

श्रीगुरुग्रंथसाहिब के 10 अत्यंत महत्वपूर्ण शब्दों की व्याख्या

1. **१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु**
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि।।
आदि सचु जुगादि सचु।।है भी सचु नानक होसी भी सचु।।1।।

सोचै सोचि न होवई ने सोची लख वार । । चपै चुप न होवई
जे लाइ रहा लिव तार । । भुखिआ भुख न उतरी जे
बना पुरीआ भार । । सहस सिआणपा लख हो हित इक
न चलै नालि । । किव सचिआरा होईए किव कूडै तुटै पालि । ।
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि । । 1 । ।

—महला-1 पृ० 1

प्रस्तुत शब्द श्रीगुरुग्रंथसाहिब जी का सर्वप्रथम शब्द है । इसमें बताया गया है कि परमात्मा एक है । वह एकमेव अद्वितीय है । सारा श्रीगुरुग्रंथसाहिब इसकी व्याख्या है । वह सत एवं शाश्वत है । वह सबका कर्त्ता एवं पिता है । न वह किसी से डरता है और न वह किसी को डराता है । उसे किसी से वैर नहीं है । वह अकाल, अजर, अमर एवं अविनाशी है । वह अपने अस्तित्व के लिये किसी दूसरे पर निर्भर नहीं करता है । उसका प्रकाश स्वयं से हुआ है । ऐसे परमात्मा की प्राप्ति केवल गुरुकृपा से ही होती है । उसका अस्तित्व अनादि है । वह सदा से था, सदा से है और सदा के लिये रहेगा क्योंकि वह समयातीत है । उसका विचार युगों तक सोचने से भी नहीं हो सकता । युगों तक चुपचाप समाधि लगाकर उसका चिन्तन करते रहो परन्तु उसका पारावार नहीं पाया जा सकता । सभी पुरियों का राज्य प्राप्त करने से भी उसका ज्ञान नहीं हो सकता । हज़ारों प्रकार की चतुराई भी व्यक्ति को पार नहीं लगा सकती है । व्यक्ति झूठ की दीवार को गिराकर उस सत्य प्रभु की अनुभूति कैसे करें । इसके लिए केवल एक ही मार्ग है कि उसके हुकम के अनुसार जीवन व्यतीत करो । उस तक पहुँचने का केवल यही मार्ग है । जैसे एक उर्दू शायर ने लिखा है--

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है ।
हमारी न कुछ आरजू है न जुस्तजू है ।

इसी प्रकार ओशो ने भी लिखा है--

जो लिखा है वह होगा । —एक ओंकार सतनाम

2. जा तू ता मै सभु को तूं साहिब मेरी रासि जीउ ।।
तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ।।
भाणै तखति वडाईआ भागै भीख उदासि जीउ ।
भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फूलै आकासि जीउ ।।
भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ।
भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ।।
भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मईआसि जीउ ।।
तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ।।
किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जोउ ।।
गुरसबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ।।

--सूही महला 1 पृष्ठ 762-63

हे प्रभु ! यदि तू ही मेरे लिये सब कुछ है तू ही मेरी पूंजी सच्ची सम्पत्ति है। तू मेरे अन्तर में ही रहा क्योंकि जब हृदय में तेरा साक्षात्कार एवं अनुभूति होती है तभी मुझे सच्चा सुख मिलता है और जब तू मेरे हृदय में प्रकट हो जाता है तभी मुझे सर्वत्र वढ़ाई मिलती हैं तेरे हुकम से राज-सिंहासन का सामान मिलता है और जब तेरी आज्ञा होती है तो उदासीन बनकर घर-घर जाकर भीख भी मांगनी पड़ती है। तेरी आज्ञा से ही मरुस्थल में फूल खिल जाते हैं। तेरी आज्ञा से ही संसार-सागर को पार किया जा सकता है और तेरी आज्ञा से ही हम संसार-सागर में डूब जाते हैं। प्रभु ही आनंद है और उसकी आज्ञा से ही मैं (आत्मा) गुण-निधि परमात्मा की स्तुति में लग जाती हूँ। उसकी आज्ञा से भयानक दिखाई देता है और मैं आत्मा आवागमन के चक्र में फंस जाती हूँ। हे प्रभु ! तू ही अगम्य एवं अतुलनीय है। अतः मैं (आत्मा) तेरे गुणों का कथन कर करके तेरी शरण में चली जाती हूँ। मुझे केवल तेरे दर्शनों की भूख एवं प्यास है। इसके अतिरिक्त क्या मांगू क्या कहूं एवं क्या सुनुं ? गुरु उपदेश के द्वारा ही मैंने प्रभु कांत को पाया है अर्थात् उस निराकार शक्ति की अनुभूति की है। वह परमात्मा सत्यस्वरूप है। यही नानक की प्रार्थना है अर्थात् हमें केवल एक ही

परमात्मा का स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना करनी चाहिए ।

3. **करतूति पसू की मानस जाति । । लोक पचारा करै दिनु राति । ।**
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ । । छपसि नाहि कछु करै छपाइआ । ।
बाहरि गिआन धिआन इसनान । । अंतरि बिआपै लोभु सुआनु । ।
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह । । गलि पाथर कैसे तरै अथाह । ।
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि । । नानक ते जन सहजि समाति । ।

--महला-5 पृष्ठ 267

गुरु अर्जनदेव जी लिखते हैं कि वैसे तो मानव है परन्तु उसके काम पशु के समान हैं । रात दिन लोक दिखावा करता रहता है । बाहर संत का वेष धारण किया है परन्तु हृदय में माया-मल है । माया को जितना व्यक्ति चाहे छुपा ले, परन्तु वह छिपती नहीं है । बाहर से तो ज्ञानी, ध्यानी एवं स्नानी है परन्तु मन में लोभश्वान लगा है । अंदर तृष्णाग्नि है और बाहर शरीर पर भस्म लगाई हुई है । इस प्रकार पाप रूपी पत्थर गले में बांधकर अथाह संसार-सागर में कैसे पार उतरा जा सकता है जिसके हृदय में प्रभु स्वयं निवास करता है वह स्वाभाविक ही समाधि में लीन हो जाता है । परमात्मा निराकार शक्ति है अतः उसकी अनुभूति के लिये शुद्ध मन आवश्यक है । जैसे कबीर ने लिखा है–

कबीरा मनु निरमलु भइया जैसे गंग नीरु ।
तब पाछे लागो हरि फिरै कहत कबीर-कबीर ।

श्रीगुरुग्रंथसाहिब पृष्ठ 1367

4. **साध की महिमा बेद न जानहि । । जेता सुनहि तेता बखिआनहि । ।**
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि । । साध की उपमा रही भरपूरि । ।
साध की सोभा का नाही अंत । । साध की सोभा सदा बेअंत । ।
साध की सोभा ऊच ते ऊची । । साध की सोभा मूच ते मूची । ।
साध की सोभा साध बनि आई । । नानक साध प्रभ भेदु न भाई ।

–महला-5 पृष्ठ 272

श्री गुरु अर्जन देव जी लिखते हैं कि साधु की महिमा वेद भी

नहीं जानते हैं क्योंकि उसकी महिमा अनन्त होती है। संत के विषय में हम जितना सुनते हैं उतना ही बखान करते हैं। परन्तु वह तो तीनों गुणों सत्व, रज एवं तम से ऊपर होता है। इसलिये ही उसे गुणातीत भी कहा जाता है। अतः उसकी महिमा सारे स्थानों पर भरपूर हो रही है। उसकी शोभा बेअंत होती है। उसकी शोभा ऊँची से ऊँची और बड़ी से बड़ी है। साधु की शोभा उसे ही बन आती है अर्थात् साधु को ही उचित है। हे भाई! साधु एवं भगवान् में कोई भी अंतर नहीं है। श्री गुरु अर्जन देव जी के कहने का भाव है कि सच्चा संत, त्यागी, तपस्वी, वीतरागी, निष्कामयोगी होता है। जैसे कबीर, सूर, तुलसी, नानक थे न कि लोभी और लालची जैसे आज के अधिकांश संत हैं। उसके हृदय में मानव-कल्याण की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। जैसे संत तुलसीदास के शब्दों में–

तरुवर फले न आपको, नदी न पीवे नीर।
परमारथ के कारने संतन धरा शरीर।।

5. **कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ।।**
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि।।1।।
कारण कारण करीम।।किरपा धारि रहीम।।1।।रहाउ।।
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ।।
कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ।।2।।
कोई पड़ै बेद कोई कतेब।।कोई ओढ़े नील कोई सुपेद।।3।।
कोई कहैं तुरकु कोई कै हिंदू।।
कोई बाछे भिसतु कोई सुरगिंदू ।।4।।
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता।।
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता।।5।।

--रामकली महला 5 पृ० 885

गुरु अर्जन देव जी संसार के लोगों को उपदेश देते हुए कहते हैं

कि संसार में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति हैं । इसलिये परमेश्वर को याद करने के सब के अलग-अलग ढंग हैं । अतः कोई परमात्मा को राम कोई ख़ुदा, कोई गोस्वामी, कोई अल्लाह के नाम से पुकारता है । वह दयालु परमात्मा सभी कारणों का कारण है । कृपालु और मेहरबान है । कोई तीर्थों पर जाकर स्नान करता है और कोई हज के लिये मक्के जाता है । कहने का भाव यह है कि हिन्दू विभिन्न तीर्थों पर जाकर स्नान करते हैं और मुसलमान मक्के जाकर हज करते हैं । ये उन्हीं के लिये तीर्थ हैं । कोई परमात्मा की पूजा करता है और कोई उसके आगे सिर झुकाता है । कोई वेदों को पढ़ता है और कोई सभी धर्मग्रंथ पढ़ता है । कोई नील वस्त्र धारण करता है और कोई सफेद वस्त्र धारण करता है । कोई अपने को हिन्दू कहता है और कोई मुसलमान कहता है । कोई बहिश्त मांगता है कोई स्वर्ग मांगता है । परन्तु गुरु अर्जन देव जी कहते हैं कि जिन्होंने प्रभु की आज्ञा को पहचाना । उन्हींने ही प्रभु का भेद पाया है । गुरुजी के कहने का भाव यह है कि सब व्यक्तियों का एक ही परमात्मा है और उसी की हमें स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए जैसे गुरु नानक देवी जी लिखते हैं–

एको सिमरो नानका, जो जल थल रहा समाइ ।

दूजो काहो सिमरिये, जो जन्मे ते मर जाइ ।

6. **हउमै रोगु मानुख, कउ दीना । । काम रोगि मैगलु बसि लीना । ।**
द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा । । नाद रोगि खपि गए कुरंगा । । 1 । ।
जो जो दीसै सो सो रोगी । । रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी । । 1 । । रहाउ । ।
जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो । । बासन रोगि भवरु बिनसानो । ।
हेत रो का सगल संसारा । । त्रिविधि रोग महि बधे विकारा । । 2 । ।
रोगे मरता रोगे जनमै । । रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै । ।
रोग बंध रहनु रती न पावे । ।
बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै । । 3 । ।

पारब्रहमि जिसु कीनी दुइआ । । बाह पकडि रोगहु कढि लइआ । ।
तूटे बंधन साध संगु पाइआ । ।
कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ । । 4 । ।

—भैरउ महला-5 पृष्ठ 1140-41

श्री गुरु अर्जन देव जी लिखते हैं कि परमात्मा ने व्यक्ति को अभिमान के रोग से ग्रस्त कर रखा है । इसी प्रकार हाथी को काम का रोग है और इसी कामुकता के कारण वह काल का ग्रास हो जाता है । दृष्टि रोग के कारण पतंगा अग्नि में जलकर अपने प्राण गंवा बैठता है । श्रवण रोग से हिरण काल का ग्रास हो जाता है । इस प्रकार संसार का प्रत्येक प्राणी रोगी है और रोगरहित केवल सत्यस्वरूप परमात्मा है या योगी है । जीभ के रोग (स्वाद) के कारण मछली पकड़ी जाती है । सुगंध के रोग के कारण भ्रमर कमल में ही नष्ट हो जाता है । सारी सृष्टि तीन प्रकार के गुणों--सत्व, रज, तम वृत्तियों से उत्पन्न रोग से ग्रस्त है । वस्तुतः प्राणी रोग में ही मरता है एवं रोग में ही जन्मता है । बारम्बार 84 लाख योनियों में भटकता है । इस प्रकार रोगग्रस्त प्राणी रत्ती भर भी टिकाव नहीं पाता । परमात्मा या सतगुरु की शरण ग्रहण किये बिना रोग किसी प्रकार भी दूर नहीं होता । परन्तु परमात्मा जिस पर कृपा करते हैं उसे बांह पकड़कर रोगों से दूर कर देते हैं । इसके बाद व्यक्ति को सच्चे आनंद की अनुभूति होती है क्योंकि आनन्द ही परमात्मा है । जैसे तुलसी दास जी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं—

क्रोध, मनोज, लोभ, मद माया । छुटहिं सकल राम की दाया । ।
सो नर इंद्र जाल नहिं भूला । जापर होई सो नट अनुकूला । ।
उमा कहँउ में अनुभव अपना । सतहरि भजनु जगत सब सपना । ।

--(अरण्यकाण्ड) 38 (ख) 2.3

7. **साधो मन का मानु तिआगउ । ।**
कामु क्रोधु संगति दूरजन की ता ने अहिनिसि भागउ । ।1 । ।
सखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना । ।

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ।
उसतति निंदा दोऊ तिआगे खोजै पदु निरबाना ।।
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहुं गुरमखि जाना ।।2।।

–रागु गउड़ी महला 9 पृष्ठ 219

हे संतो ! मन का अहंकार त्याग दीजिए । काम, क्रोध, दुष्टों की संगत से सदा दूर रहो । जो व्यक्ति सुख, दुःख, सम्मान एवं अपमान में समान रहता है और वह हर्ष एवं शोक से भी निर्लेप रहता है । ऐसे व्यक्तित्व ने मूल तत्व को पहचान लिया है जिसने स्तुति, निन्दा दोनों को त्याग दिया है और वह मुक्ति के मार्ग का पथिक बन गया है । दास नानक गुरु तेग बहादुर जी के माध्यम से कहते हैं कि यह कार्य अत्यंत कठिन है । क्योंकि इसको कोई नहीं जान सकता है यह सच्चे गुरु का भक्त केवल गुरु के उपदेश से ही जान सकता है अन्यथा नहीं ।

8. हरि बिनु तेरो को न सहाई ।
का की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ।।1।। रहाउ ।।
धनु धरनी अरु संपत्ति सगरी जो मानिओ अपनाई ।।
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ।।1।।
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ।।
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ।।2।।

--रागु सारंग महला 9 पृष्ठ 1231

हे मन ! परमात्मा के बिना तेरा कोई भी सहायक नहीं है क्योंकि वह तेरी प्रत्येक अवस्था में सहायता करता है । ना ही कोई किसी के माता-पिता, पुत्र, स्त्री, भाई आदि संबंधी नहीं हैं क्योंकि ये संबंध क्षणिक एवं स्वार्थपूर्ण है । धन, पृथ्वी और सारी सम्पत्ति जिसे तू अपनी मान कर बैठा है । मृत्यु के पश्चात् इन में से कुछ भी साथ नहीं जाता है । तेरे साथ केवल परमात्मा का लिया गया नाम और हाथ से दिया हुआ धन ही जायेगा । परन्तु फिर भी तू अज्ञानवश इन क्षणिक वस्तुओं से लिपटा हुआ है । परन्तु तूने दीनदयालु, दुःख भंजक परमात्मा से प्रेम

नहीं बढ़ाया है । नानक श्री गुरु तेगबहादुर जी के माध्यम से संसार को उपदेश देते हुए कहते हैं कि सारा संसार एक रात के स्वप्न की भाँति मिथ्या, नश्वर और क्षणभंगुर है । केवल एक परमात्मा ही सत्य है । जैसे कबीर जी लिखते हैं–

मन फूला फूला फिरै जगत में कैसा नाता रे ।
माता कहे यह पुत्र हमारा बहन कहे बिर मेरा ।
भाई कहे यह भुजा हमारी नारि कहै नर मेरा ।
पेट पकरि के माता रोवै बांहि पकरि के भाई ।
लपटि भापटि तिरिया रोवै हंस अकेला जाई ।
जब लग जीवै माता रोवै, बहिन रोवे दस मासा ।
तेरह दिन तक तिरिया रोवै, फेर करै घर बासा ।
चार गजी चरगजी मंगाया, चढ़ा काठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगाया, फूंक दियो जस होरी ।
हाड़ जरै जस लाकड़ी को केस जरै जस घास ।
सोना जैसी काया जर गई कोई न आयो पासा ।
घर की तिरिया ढूंढण लागी ढूंढि फिरी चहं देसा ।
कहै कबीरा सुना भाई साधो छोड़ो जग की आसा ।।

9. **अवलि अलह नूरु उपाइया कुदरति के सभ बंदे ।**
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउनु भले को मंदे ।।1।।
लोगा भरमि न भुलहु भाई ।।
खालिकु खलक खलक महि खलिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ।।1।।रहाउ।।
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ।।
न कछु पोंच माटी के भांडे न कछु पोच कुंभारै ।।2।।

सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ।।
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीए सोई ।।3।।
अलहु अलहु न जाई लखिआ गुरि गुडु दीना मीठा ।।
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ।।4।।

–पृष्ठ 1349-1350

भक्त कबीर जी कहते हैं कि सबसे पहले परमात्मा ने प्रकाश पैदा किया । फिर क़ुदरत ने सभी व्यक्ति पैदा किये । जब परमात्मा के एक ही नूर से सारा संसार पैदा हुआ है । बताओ कौन बुरा और कौन भला है । अतः हे भाई ! भ्रम में मत भरो । सृष्टि में परमात्मा समाया हुआ है । यह संसार उपास्य प्रभु से अलग नहीं है । वह परमात्मा सब स्थानों पर परिपूर्ण है । परमात्मा में एक ही प्रकृति के माध्यम से एक ही मिट्टी से भाँति-भाँति की आकृतियाँ बनाई है और न ही कुछ कुम्हार में कमी है । सभी में वह सत्य स्वरूप परमात्मा विद्यमान हैं और सभी कुछ उसका किया हुआ है । वही सृष्टि का उत्पादक, पालक एवं संहारक है । जो व्यक्ति उस परमात्मा की आज्ञा को पहचानता है । वह एकमेव अद्वितीय परमात्मा को जान लेता है । अपार शक्ति है जोकि अनुभूति का विषय है । गुरु ने ज्ञान रूपी मीठा गुड़ दिया और सारी शंका दूर हो गई । जब उसी मायातीत उपास्य प्रभु को सब में व्यापक देखा, तभी शंका समाधान हुआ ।

10. कायउ देवा काइअउ देवल काइअल जंगम जाती ।।
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ।।1।।
काइआ बहु खंड खोजते नवविधि पाई ।।
न कछु आइबो न कछु जाइबो राम की दुहाई ।।1।। रहाउ ।।
जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ।।
पीपा प्रणवै परम ततु है सतिगुरु होइ लखावै ।।2।।3।।

–पीपाजी पृष्ठ 695

काया के अन्दर ही परमात्मा स्थित है और यही उसका देवालय है । यही सच्चा जंगम तथा यात्री है । काया में ही धूप, दीप, नैवेद्य,

मिष्ठान्न पूजा के लिये पत्र एवं पुष्प है। वह खण्डों में खोजते हुए शरीर में ही नव निधि पाई जाती है और बाहर किसी भी स्थान पर नहीं अमर, अविनाशी तत्व आत्मा भी इसमें ही है जो न कभी मरती है, न कभी जन्म लेती है और वह अजर एवं अमर है। अतः जो ब्रह्माण्ड में है वही सब कुछ पिण्ड में है जो खोजता है वही पाता है। पीपा जी सविनय निवेदन करते हैं कि परमात्मा सार वस्तु सब के अन्दर है। सतगुरु मिल जाये तभी उस सार वस्तु की अनुभूति अंदर ही हो जाती है। जैसे कबीर के शब्दों में--

कस्तुरी कुण्डल बसै मृग ढूंढै बन माहिं।

ऐसे घट घट राम हैं दुनियाँ जाने नाहिं।।

श्रीगुरुग्रंथसाहिब-प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का सम्पादन कब हुआ था?

उत्तर 16-8-1604 ई०।

प्रश्न 2. श्री गुरुग्रंथसाहिब का सम्पादन किस गुरु ने किया था?

उत्तर श्री गुरुग्रंथसाहिब का सम्पादन गुरु अर्जनदेव जी ने भाई गुरदास जी के शुभ हाथों से करवाया था।

प्रश्न 3. श्रीगुरुग्रंथसाहिब को सर्वप्रथम किस नाम से पुकारा जाता था?

उत्तर ''पोथीसाहिब।''

प्रश्न 4. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का सर्वप्रथम ग्रंथी कौन था?

उत्तर बाबा बुड्डा जी।

प्रश्न 5. श्रीगुरुग्रंथसाहिब की सर्वप्रथम कथा के पश्चात् गुरु अर्जन देव जी ने संतों को क्या आदेश दिया था ?

उत्तर आप इस ग्रंथ को गुरु का हृदय जानकर इसका सम्मान करना क्योंकि यह गुरु सार्वकालिक है, इसीलिए इन पर

विश्वास उत्तम है। मेरे शरीर से बड़ा मान कर चलना। मैं स्वयं इनका आदर करता हूँ।

प्रश्न 6. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणी को कब शामिल किया था?

उत्तर 1705 ई०।

प्रश्न 7. किस गुरु ने इस ग्रंथ का नाम श्रीगुरुग्रंथसाहिब रखा?

उत्तर गुरुगोबिन्द सिंह जी ने इस ग्रंथ को 4-10-1708 ई० को गुरियाई बख्शी थी तभी से इसको श्रीगुरुग्रंथसाहिब के नाम से पुकारा जाने लगा। अपनी मृत्यु से केवल 3 दिन पूर्व श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने सिक्ख संगत को बुलाया और श्रीगुरुग्रंथसाहिब लाने को कहा और फिर आदेश दिया। संतों! मेरे बाद कोई जीवित व्यक्ति इस गुरुगद्दी पर विराजमान नहीं होगा। इस गुरुगद्दी पर श्रीगुरुग्रंथसाहिब विराजमान होंगे। अब आप लोग इन्हीं से अपना मार्ग दर्शन कराना और इन्हीं से आदेश प्राप्त करना।

प्रश्न 8. श्री गुरुग्रंथसाहिब का किस शब्दों से आरम्भ हुआ है?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब का आरंभ **१ ओं** सतिनामु शब्द से हुआ है जोकि सिक्ख धर्म का मूलमंत्र है। सारा ग्रंथ इसकी ही व्याख्या है। यह मूलमंत्र इस ग्रंथ में 33 बार अंकित है। इसका भाव है कि परमात्मा एक है और वह एकमेव अद्वितीय है। जैसे--

एकम एकंकारु निराला।। अमरु अजोनी जाति न जाला।।
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ।। खोजत खोजत घटि घटि देखिआ।।

--बिलाबलु महला 1 पृ० 838

प्रभु एकमेव अद्वितीय है। वह शाश्वत अमर और

अजन्मा है । वह जातियों के जंजाल से भी रहित है । वह अगम्य एवं अगोचर है । न उसकी कोई रूपरेखा है । खोजते हुये व्यक्ति उसको प्रत्येक हृदय में देखता है ।

प्रश्न 9. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में संकलित वाणी को विभिन्न कितने नामों से पुकारा जाता है?

उत्तर प्रस्तुत ग्रंथ में वर्णित वाणी को निम्नलिखित 5 नामों से पुकारा जाता है– 1. गुरुवाणी, 2. धुर की वाणी, 3. खसम की वाणी, 4. महापुरख की वाणी, 5. सतिगुर की वाणी । जैसे–

धुर की वाणी आई । । तिनि सगली चिंत मिठाई । ।

–मुहला 5 पृ० 628

प्रभु की वाणी आई और उसने सारी चिन्ता दूर कर दी ।

प्रश्न 10. श्रीगुरुग्रंथसाहिब के रागों की संख्या एवं नाम क्या-क्या हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब के रागों की संख्या 31 है । इनके निम्नलिखित नाम हैं--

1. सिरीरागुरु 2. माझ, 3. गउड़ी, 4. आसा, 5. गूजरी, 6. देवगंधारी, 7. बिहागड़ा, 8. बडहंसू, 9. सोरठि, 10. धनासरी, 11. जैतसरी, 12. टोड़ी, 13. बैराडी, 14. तिलंग, 15. सूही, 16. बिलावल, 17 गोड, 18. रामकली, 19. नरनारायण, 20. माली गउड़ा, 21. मारू, 22. तुखारी, 23. केदारा, 24. भैरउ, 25. बसंतु, 26. सारंग, 27. मलार, 28. कानड़ा, 29. कलिआन, 30. परभाती, 31. जैजावती ।

प्रश्न 11. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में कितने संत महात्माओं की रचनाओं का संकलन किया गया है और उनके मुख्य क्या-क्या नाम हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 36 संत महात्माओं की रचनाओं का संकलन है। इनके मुख्य नाम निम्नलिखित हैं--

1. गुरु नानक, 2. गुरु अमर दास, 3. गुरु राम दास, 4. गुरु अर्जन देव, 5. गुरु तेग बहादुर, 6. कबीर, 7. रविदास, 8. नामदेव, 9. सेख फरीद, 10. महात्मा पीपा आदि।

प्रश्न 12. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में विभिन्न गुरुओं की वाणियों का सांकेतिक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 7 विभिन्न गुरुओं की वाणियों का सांकेतिक विवरण निम्नलिखित है–

क्रम	नाम	महला	शब्द, छंद, श्लोक आदि
1.	गुरु नानक देव जी	1	958
2.	गुरु अंगद देव जी	2	62
3.	गुरु अमर दास जी	3	870
4.	गुरु रामदास जी	4	638
5.	गुरु अर्जन देव जी	5	2305
6.	गुरु तेग बहादुर जी	9	59 शब्द 57 श्लोक
7.	गुरु गोबिन्द सिंह जी	10	1 श्लोक नं० 54 पृ० 1429

प्रश्न 13. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में विभिन्न भक्तों की वाणियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 15 विभिन्न भक्तों की वाणियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है–

क्रम	नाम	शब्द एवं श्लोक आदि
1.	कबीर जी	537 शब्द एवं श्लोक
2.	सेख फरीद जी	123 शब्द एवं श्लोक
3.	नामदेव जी	61
4.	रविदास जी	40
5.	राइबल वंड तथा सताडूमि	8
6.	बाबा सुदरु जी	6
7.	त्रिलोचन जी	4

8. धना जी, वेणी जी, मरदाना जी 3 (प्रत्येक के)
9. जैदेव जी, भीसन जी, सूरदास जी2 (प्रत्येक के)
10. परमानंद जी, पीपा जी, रामानंद जी1 (प्रत्येक के)
11. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में 11 भट्ट वाणकारों की वाणी पृष्ठ 1389 से 1409 तक अंकित हैं। इन्होंने पहली पातशाही श्री गुरु नानक देव से पांचवीं पातशाही श्री गुरु अर्जन देव जी तक की स्तुति की है। इनके कुल निम्नलिखित 123 सैवैये हैं–

    महला-1 = 10, महला-2 = 10, महला-3 = 22, महला-4 = 60, महला-5 = 21, इन 123 सैवेयों का वितरण निम्नलिखित हैं।

    1. भट्ट कल सहार = 52, 2. भट्ट मथरा = 14, 3. भट्ट गयंद जी = 13, 4. भट्ट नल जी = 16, भट्ट कीरत जी = 8, 6 भट्ट जाल्प जी = 57, 1 भट्ट वलज = 5, 8 भट्ट सलजी = 3, 9 भट्ट हरिवंश जी = 2, 10. भट्ट भिखा जी = 2, 11 भट्ट मलजी = 1

प्रश्न 14. जपुजी साहिब किस गुरु की रचना है और इसमें कितनी पावड़िया हैं?

उत्तर श्री गुरु नानक देव जी और 38 पावड़ियां और 1 सलोकु ।

प्रश्न 15. सुखमनी साहिब किस गुरु की रचना है और इसमें कितनी अष्टपदीआं और अक्षर हैं?

उत्तर ''सुखमनीसाहिब'' श्रीगुरु अर्जन देव जी की रचना है । इसमें 24 अष्टपदीआं दिन रात के 24 घंटों की गिनती के अनुसार है । प्रत्येक अष्टपदी में 1000 अक्षर हैं । इस प्रकार 24 अष्टपदियों का पाठ पुरुष के 24 हज़ार श्वासों को सफल कर देता है ।

प्रश्न 16. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में नितनेम की मुख्य वाणियां कौन-कौन सी हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में नितनेम की मुख्य वाणियां निम्नलिखित हैं--जपुजीसाहिब (पृ० 1-8), सुखमणी साहिब (पृ० 262-296) आदि ।

प्रश्न 17. श्रीगुरुग्रंथ साहिब में हरि, राम और वाहिगुरु शब्द कितनी बार आये हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में हरि शब्द 8344 बार, राम शब्द 2583 बार और वाहिगुरु शब्द 13 बार आये हैं । केवल कवि गयंद ने वाहिगुरु 12 बार, वाहगुरु 1 बार कुल 13 बार इस शब्द का प्रयोग किया गया है ।

प्रश्न 18. श्रीगुरुग्रंथसाहिब की पृष्ठ संख्या कितनी हैं?

उत्तर 1430 पृष्ठ । इनको अंग नाम से पुकारा जाता है ।

प्रश्न 19. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में कौन-कौन सी भाषाओं का प्रयोग किया गया हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब में गुरुमुखी लिपि और पंजाबी भाषा में

लिखा गया है। परन्तु इसमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, पंजाबी, अरबी, फारसी आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त किये गये हैं। इस प्रकार इसी भाषा मिश्रित बन गई है। जैसे--

सचु निवाज यकीन मुसला।।

मनसा मारि निवारिहु आसा।।

देह मसीति मनु मउलाणा कमल खुदाई पाकु खरा।।2।।

सरा सरीअति ले कंमावहु।।

तरीकति तरफ खोजि टोलाबहु।।

मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु

फिरि न मरा।।3।।

--मुहला-5, पृ० 1083

श्री गुरु अर्जन देव जी फरमाते हैं कि सच ही नमाज है और विश्वास ही मुसल्ला है। मुसल्ला वह कपड़ा होता है जिस पर बैठकर मुसलमान भाई नमाज पड़ते हैं। आसा मनसा को दूर करो। देह सच्ची मस्जिद है। मन सच्चा मौलवी है। परमात्मा की दरगाह से उठ रहा कलमा (नाम अथवा शब्द) पवित्र है अर्थात् हमारी देह के अन्दर ही शब्द रूपी निर्मल नाद आकाशवाणी या कलमा हो रहा है जो अतिशुद्ध और निर्मल है। शरीअत, तरीक़त, मारफत और हक़ीक़त सूफी फकीरों के चार दरजे अथवा अवस्थाएं हैं। यहाँ गुरु साहिब के कहने का भाव यह है कि अपने अंतर में हो रहे शब्द की कमाई करना ही सच्ची शरीअत है, मन के द्वारा सांसारिक, वस्तुओं और इच्छाओं का त्याग सच्ची तरीक़त है। मन को नियंत्रण में करना ही सच्ची मारफत है। परमेश्वर के

साथ मिलाप करना जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाना ही सच्ची मुक्ति है ।

प्रश्न 20. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में कितने शब्द एवं श्लोक आदि हैं ?

उत्तर 5867 ।

प्रश्न 21. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में सबसे अधिक वाणी किस गुरु की हैं ?

उत्तर गुरु अर्जन देव जी (2305 शब्द) ।

प्रश्न 22. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में सबसे अधिक वाणी किस संत की हैं ?

उत्तर कबीर दास (537 शब्द और श्लोक) ।

प्रश्न 23. श्रीगुरुग्रंथसाहिब में कितने गुरुओं की वाणी हैं ?

उत्तर श्री गुरुग्रंथसाहिब में निम्नलिखित 7 गुरुओं की वाणियां हैं–

1. गुरु नानक देव जी, 2. गुरु अंगद देव जी, 3. गुरु अमर दास जी, 4. गुरु राम दास जी, 5. गुरु अर्जन देव जी, 6. गुरु तेगबहादुर जी, 7. गुरु गोबिन्द सिंह जी ।

प्रश्न 24. दस गुरुओं के नाम, जन्म तिथि, जन्म स्थान, निधन तिथि और निधन स्थान बताइये ।

उत्तर नाम, जन्म तिथि, जन्म स्थान, निधन तिथि और निधन स्थान निम्नलिखित से है–

1. गुरु नानक देव जी सुपुत्र महता कालू जी

जन्मतिथि 15-4-1469 ई., स्थान तलवंडी (ननकाना साहिब) (पाकिस्तान) देहावसान तिथि 22-9-1539 ई. तथा स्थान करतारपुर (पाकिस्तान) ।

2. गुरु अंगद देव जी सुपुत्र भाई फेरुमल जी

जन्मतिथि 31-3-1504 ई., स्थान मत्ते दी सराय (फरीदकोट) देहावसान तिथि 29-3-1552 ई., स्थान खडूर साहिब, (अमृतसर)

3. **गुरु अमर दास जी सुपुत्र बाबा तेजभान जी**

जन्मतिथि 5-5-1479 ई., स्थान बासरके (अमृतसर) देहावसान तिथि 1-9-1574 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर)

4. **गुरु राम दास जी सुपुत्र सोढ़ी हरिदास जी**

जन्मतिथि 24-9-1534 ई., स्थान लाहौर (पाकिस्तान) देहावसान तिथि 1-9-1581 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर)

5. **गुरु अर्जन देव जी सुपुत्र गुरु रामदास जी**

जन्मतिथि 15-4-1563 ई., स्थान गोइंदवाल (अमृतसर) देहावसान तिथि 30-5-1606 ई., स्थान लाहौर (पाकिस्तान)

6. **गुरु हरगोविन्द जी सुपुत्र गुरु अर्जन देव जी**

जन्मतिथि 14-6-1595 ई., स्थान बडाली (अमृतसर), देहावसान तिथि 3-3-1644 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़)

7. **गुरु हरिराय जी सुपुत्र बाबा गुरदित्ता जी**

जन्मतिथि 26-2-1630 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़), देहावसान तिथि 6-10-1661 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़)

8. **गुरु हरि किशन जी सुपुत्र गुरु हरिराय जी**

जन्मतिथि 7-7-1656 ई., स्थान कीरतपुर (रोपड़), देहावसान तिथि 30-3-1664 ई., स्थान दिल्ली

9. **गुरु तेग बहादुर जी सुपुत्र हरि गोविन्द जी**

जन्म तिथि 1-4-1621 ई., स्थान अमृतसर, देहावसान तिथि 11-11-1675 ई. स्थान दिल्ली

10. **गुरु गोबिन्द सिंह जी सुपुत्र गुरु तेगबहादुर**

जन्म तिथि 22-12-1666 ई., स्थान पटना, देहावसान तिथि 7-10-1708 ई., नांदेड़ (महाराष्ट्र)।

प्रश्न 25. श्रीगुरुग्रंथसाहिब का क्या संदेश हैं?

उत्तर श्रीगुरुग्रंथसाहिब का संदेश है कि समूची मानवता को आपसी भाईचारे, सद्भावना, सहानुभूति, प्रेम का

वातावरण पैदा करके संतोष, सुख, शांति एवं आनंद उत्पन्न करना। वस्तुतः श्रीगुरुग्रंथसाहिब के सारे संत महात्मा एवं महापुरुष थे और वे सच्ची मानवता का सुधार करना चाहते थे। अतः इसकी शिक्षाएं सार्वभौमिक एवं सर्वकालीन हैं। इसीलिये ही रामायण, गीता, बाइबल, क़ुरान आदि धार्मिक ग्रंथों की भाँति इस महान् ग्रंथ का आविर्भाव अपने काल की एक ऐतिहासिक घटना है। इसका अनुवाद संसार की विभिन्न भाषाओं में होना चाहिए ताकि इसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो और संसार के व्यक्तियों का जीवन सुखमय शांतमय और आनन्दमय हो। अतः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि श्रीगुरुग्रंथसाहिब महापुरुषों की एक अद्‌भुत, अनुपम एवं अमर ग्रंथ है जोकि सारी मानवता के कल्याण के लिए लिखी गई है। यहाँ तक कि सरदार भगत सिंह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह लिखते हैं--

सरदार अर्जन सिंह ने श्रीगुरुग्रंथसाहिब के सौ श्लोक वेद मंत्रों के साथ प्रस्तुत किए जो जैसे थे और सिद्ध किया कि गुरुग्रंथसाहिब के श्लोकों और वेद मंत्रों में कोई अन्तर नहीं है, दोनों एक हैं तथा समान रूप से आदर के योग्य हैं।

4. सत्यार्थप्रकाशसार

दुनियाँ सारी घूम ली, कहीं पाया नहीं प्रकाश।
दूर अंधेरा हुआ जब पढ़ा सत्यार्थप्रकाश।।
सच तो यह है वेद का सार है सत्यार्थप्रकाश।
ज्ञान और विद्या का भण्डार है सत्यार्थप्रकाश।।
कर रहा सत्य का विस्तार सत्यार्थप्रकाश।
रोकता है झूठ का प्रचार सत्यार्थप्रकाश।
कविरत्न प्रकाश जी के शब्दों में –
चाहो यदि लेना जग में आनन्द सच्चा आप,
परम पुनीत प्रभु भक्ति मकरंद का।
चाहो तरना जो अद्य असत्-अविद्या सिन्धु
चाहो करना विनाश दुःख-दैन्य फन्द का।
चाहो भरना जो सत्य ज्ञान से हृदय-कोष
चाहो भण्डा फोड़ना पाखंड छल-छंद का।
चाहो करना जो निवृति शंकाओं की तो,
पढ़ लो सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानंद का।। -कविरत्न प्रकाशजी

सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानंद जी का अमर ग्रंथ है। उन्होंने अपने 59 वर्षीय जीवन काल में अनेक पुस्तकें लिखीं। इनमें से 'सत्यार्थप्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका', 'संस्कारविधि' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने इस अमर ग्रंथ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा है। यह एक सर्वथा अपूर्व नाम हैं इससे पूर्व किसी भी ग्रंथ का ऐसा नाम नहीं मिलता। अतः प्रस्तुत ग्रंथ में महर्षि दयानंद ने सत्य अर्थों का प्रकाश किया है। इसलिये इसका नाम भी सत्यार्थप्रकाश रखा गया हैं इससे महर्षि दयानंद की लोकैषणा से पूर्ण विरक्ति की अनूठी झलक भी मिलती हैं अन्यथा इसका नाम वे 'दयानंद प्रकाश' भी रख सकते थे।

महर्षि दयानंद संसार में लुप्त प्रायः वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार

की दीक्षा लेकर कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। अतः अपने इस कार्य को गति देने के लिये एक संगठन बनाने की सोच रहे थे, जो उनके कार्य को नियमित रूप से आगे बढ़ाने में सक्षम हो सके। प्रत्येक समाज के लिये किसी न किसी आधारभूत ग्रंथ की आवश्यकता होती है जिसमें उसके आदर्श, मन्तव्य, सिद्धान्त, उद्देश्य आदि की व्याख्या की गई हो। यद्यपि आर्य समाज की आधार पुस्तक वेद ही है। तथापि प्रत्येक की उन तक पहुँच न होने से ऐसे ग्रंथ की आवश्यकता थी जो सर्वसाधारण की समझ में आ सके। जिसके स्वाध्याय से प्रत्येक व्यक्ति आर्य समाज में प्रविष्ट होते ही जान सकें कि उसके मान्य कौन-कौन से सिद्धांत हैं। यही मुख्यतः 'सत्यार्थप्रकाश' के सृजन की पृष्ठभूमि है।

सत्यार्थप्रकाश 19वीं शताब्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। इसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अपने मुद्रण काल में ही प्रस्तुत ग्रंथ इतनी प्रसिद्धि पा चुका था एवं इसकी इतनी मांग थी कि महर्षि दयानंद को यह ग्रंथ पूर्ण मुद्रण से पूर्व ही 120 पृष्ठ एक-एक रुपये में बेचने पड़े थे।

डॉ० भवानी लाल भारती 'सत्यार्थप्रकाश की लोकप्रियता का उल्लेख 'विश्वधर्मकोश' में इस प्रकार किया है—

> **सत्यार्थप्रकाश की लोकप्रियता तथा विश्वमानस के लिये उसकी उपयोगिता इसी बात से विदित होती है कि विगत एक शताब्दी में इस ग्रंथ के सैंकड़ों संस्करण प्रकाशित हुये तथा लाखों प्रतियाँ धर्म तत्व के जिज्ञासु पाठकों के हाथों में पहुँची हैं। स्वदेश-विदेश की बीसियों भाषाओं में उसके अनुवाद हुये हैं। सत्यार्थप्रकाश के पृथक् समुल्लासों पर टीका-टिप्पणी तथा भाष्य व्याख्यादि लेखक का कार्य भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। संसार के सभी प्रमुख देशों के पुस्कालयों में इस ग्रंथ की प्रतियाँ विद्यमान हैं।**

सत्य तो यह है कि हिन्दी साहित्य की किसी भी अन्य पुस्तक ने आज तक इतना काग़ज़ नहीं खपाया जितना महर्षि दयानंद के इस

कल्याणकारी ग्रंथ ने खपाया है। इसी से इसकी लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है कि इतनी बड़ी संख्या में प्रकाशित हो चुकने के बाद भी इस ग्रंथ की मांग बराबर बनी हुई है। यह इतना लोकप्रिय हुआ कि लाखों अहिन्दी भाषी लोगों ने इसके अध्ययन के लिये हिन्दी सीखी और जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर सके उन्होंने इसे अपनी मातृभाषा में अनुवादित रूप में पढ़ा।

महर्षि दयानंद ने राजा जय कृष्णदास जी की प्रेरणा से 12.6.1874 ई० दिन शुक्रवार को उदयपुर में सत्यार्थप्रकाश पं० चन्द्रशेखर द्वारा लिखवाना आरम्भ किया। क्योंकि पं० चन्द्रशेखर इस कार्य के लिये सरकार द्वारा नियुक्त किये गये थे। इस प्रकार उदयपुर में लगभग 3 महीने रहकर यह अमर ग्रंथ लिखवा डाला। जबकि विश्वविख्यात कवि तुलसीदास जी ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'रामचरितमानस' का श्रीगणेश रामनवमी के दिवस पर 30-3-1574 ई० को काशी में किया और उन्हें यह गंथ लिखने में 2 वर्ष, 7 महीने और 26 दिन लग गये। कार्लमार्क्स ने 34 वर्ष में 'Dass Capital' लिखा। राजा जय कृष्णदास ने ही सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण 1875 ई० में मुन्शी हरबंसलाल के स्टार प्रैस बनारस में छपवाकर प्रकाशित किया जिसमें 12 समुल्लास थे। इसमें महर्षि दयानंद के सिद्धान्त के विरुद्ध मृतक श्राद्ध एवं मांस भक्षण जैसे अवैदिक मन्तव्य, लेखकों की धूर्तता से समाविष्ट हो गये थे। जिस कारण महर्षि दयानन्द को यह ग्रंथ पूर्णरूपेण शोधना पड़ा। इसमें महर्षि न केवल अवैदिक मन्तव्यों को भी हटाया वरन् इसकी भाषा भी व्याकरण आदि के अनुसार शोध कर बनाई। महर्षि दयानन्द इसको स्वयं शोधकर प्रेस को दे गये थे परन्तु उनके जीवनकाल में यह ग्रंथ छप न सका और उनके निधन के बाद 1884 ई० में यह प्रकाशित हुआ जिसमें 14 समुल्लास छपे।

सत्यार्थप्रकाश में 290 विभिन्न ग्रंथों के 1886 प्रमाण उद्धृत किये हैं (देखों सत्यार्थपकाश आन्दोलन का इतिहास पृष्ठ 11 एवं

सत्यार्थप्रकाश दर्पण पृष्ठ 12) इसके अतिरिक्त इसमें विभिन्न ग्रंथों के 1542 मंत्र और श्लोक भी उद्धृत किये गये हैं। इसका सृजन करने के लिए महर्षि दयानंद जी को 2986 ग्रंथों का अनुशीलन करना पड़ा। इसके अध्ययन करने से गुरुदत, बिस्मिल आदि क्रांतिकारियों का जीवन ही बदल गया।

सत्यार्थप्रकाश में विभिन्न 14 समुल्लास हैं। इनमें से प्रथम 10 समुल्लास पूर्वार्द्ध और शेष 4 समुल्लास उत्तरार्द्ध में विभाजित हैं। प्रथम 10 समुल्लासों में वैदिक सिद्धान्तों का मंडन किया गया है और शेष 4 समुल्लासों में पाखंडों का खंडन किया गया है। वस्तुतः पूर्वार्द्ध प्रस्तुत ग्रंथ की आत्मा है और उत्तरार्द्ध इसका शरीर है। इसका कारण यह है कि महर्षि दयानंद जी का मुख्य उद्देश्य था, सत्य का प्रकाशन करके अंधकार रूप पाखंडों को जीवन से भगा देना। अतः वे सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं

मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है।

(1) सत्यार्थप्रकाश के 14 समुल्लासों का सार

सत्यार्थप्रकाश के चौदह समुल्लासों का सार अधोलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है ।

पहला समुल्लास –(परमात्मा के विभिन्न नाम)

इसमें स्वामी दयानंद जी ने परमात्मा के विभिन्न नामों की सुंदर एवं व्याकरणयुक्त व्याख्या की है । यद्यपि परमात्मा के अनंत गुण, कर्म एवं स्वभाव होने के कारण अनेक नाम हैं । परन्तु ओम् उसका निज व सर्वश्रेष्ठ नाम है । ओम् के नाम के अतिरिक्त उन्होंने 100 और ईश्वर के नाम बताये हैं । अ, उ और म इन तीनों अक्षरों से निर्मित शब्द में अकार से विश्व, विराट, अग्नि आदि उकार से वायु, तेजस, हिरण्यगर्भ और मकार से ईश्वर, प्राज्ञ, आदित्य आदि नाम का बोध होता है ।

ईश्वर के सभी नाम सारगर्भित एवं सार्थक हैं । इनमें से कुछ कर्मवाचक, कुछ स्वभाववाचक व गुणवाचक भावप्रकट करते हैं । जैसे प्रभु का संसार का निर्मात्ता होने के कारण ब्रह्मा, पालक, पोषक और सर्वव्यापक होने के कारण विष्णु एवं संहारक होने के कारण रुद्र नाम से पुकारा जाता है । परमेश्वर की स्तुति का अर्थ है प्रशंसा करना, प्रार्थना का अर्थ है धन्यवाद करना और उपासना का अर्थ है उनकी शरण में जाना । हमें स्तुति, प्रार्थना और उपासना उसकी करनी चाहिये जो गुण, कर्म व स्वभाव में सर्वश्रेष्ठ हो । अतः हमारा उपास्यदेव केवल परमात्मा ही होना चाहिए न कि और कोई देवता । इस प्रकार महर्षि दयानंद जी ने परमेश्वर का शुद्ध नाम, शुद्ध स्वभाव और शुद्ध स्थान का वर्णन किया ।

परमात्मा को सर्वशक्तिमान इसलिये कहा जाता है कि उसे सृष्टि-सृजन, पालन एवं प्रलय और सभी आत्माओं के कर्मफलदाता होने के कारण किसी की आवश्यकता नहीं पड़ती है । परमात्मा अपने कार्यों को करने में पूर्ण शक्ति सम्पन्न है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान है ।

दूसरा समुल्लास – (सन्तानों की शिक्षा)

शिक्षा ही ऐसी वस्तु है जो व्यक्तियों को सभ्य और सुसंस्कृत बनाती है । महर्षि दयानंद जी ने शिक्षा के विषय में अपना विचार

प्रकट करते हुए लिखा है –

लड़के और लड़कियों की शिक्षा-व्यवस्था पृथक्-पृथक् होनी चाहिये। उनके लिये योग्य एवं चरित्रवान अध्यापक एवं अध्यापिकाएं होनी चाहिएं। जैसे–

मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद –शतपथ ब्राह्मण

माता, पिता एवं आचार्य ज्ञानवान् एवं धार्मिक हो।

एक योग्य बालक के निर्माण में माता-पिता का धार्मिक, ज्ञानवान एवं चरित्रवान् होना परमावश्यक है। वह संतान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् हों। महर्षि दयानंद ने माता-पिता के मन की पवित्रता का संकेत किया है। माता बालक को सुन्दरवाणी से बड़ों का आदर सत्कार करने, छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने, लड़ाई-झगड़ा आदि से अलग रहने की शिक्षा दे तभी वह सच्चे अर्थों में मानव बन सकता है। आचार्य को भी अभिमान-शून्य एवं ज्ञान से परिपूर्ण होना आवश्यक है। माता-पिता एवं शिक्षक बच्चों को शिष्टाचार की बातें सिखायें। जैसे बड़ों का सम्मान करना, झूठ न बोलना आदि।

संतान को शिष्टाचार की शिक्षा देनी चाहिए। स्वास्थ्य का आधार आहार है। अतः स्वादिष्ट भोजन भी अधिक न करें। जितनी भूख हो उससे कम भोजन करें। व्यक्ति प्रायः दूसरों के दोषों को देखता रहता है। जिससे उसका उत्थान नहीं अपितु पतन होता है। महर्षि दयानंद लिखते हैं–

प्रसन्न होकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग रखें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग अपने माता-पिता और आचार्य की तन-मन-धन आदि उत्तम-उत्तम पदार्थों से प्रीतिपूर्वक सेवा करें।

वस्तुतः ग्रंथ के आधार पर बालक का पालन कर संसार स्वर्ग बन सकता है। केवल गणित ज्योतिष ही वैज्ञानिक और सत्य है, फलित ज्योतिष अवैज्ञानिक और झूठ है।

विद्या एक अमूल्य आभूषण है क्योंकि शरीर पर पहने जाने वाले आभूषण चोरी भी हो सकते हैं। परन्तु विद्या रूपी आभूषण से व्यक्ति की आंतरिक शोभा बढ़ती है। अतः माता-पिता का कर्त्तव्य है कि अपनी सन्तान को उत्तम शिक्षा गुण, कर्म, स्वभाव को धारण करावे। सोना, चांदी, हीरे जवाहरात पहनने से तो व्यक्ति की आत्मा शोभित नहीं होती अपितु केवल शारीरिक अभिमान बढ़ता है। शिक्षा से व्यवहार में पवित्रता एवं श्रेष्ठता के गुण आते हैं। अध्ययन के साथ विद्यार्थी को सन्ध्या, उपासना व प्रभुभक्ति भी करनी चाहिये। सत्य एवं असत्य का निर्णय 5 प्रकार से होता है। वे हैं–

(1) जो सृष्टिक्रम के अनुकूल हो वह सत्य और इसके विपरीत असत्य।

(2) जो परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल हो वह सत्य है और इसके विपरीत असत्य है।

(3) धार्मिक विद्वानों के मतानुसार सत्य है अन्यथा असत्य है।

(4) अपनी आत्मा की पवित्रता के अनुकूल हो सत्य है जैसे सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है। वैसा दूसरों के लिए भी होता है।

(5) आठों प्रमाणों के अनुसार हो तो सत्य अन्यथा असत्य है।

शिक्षा के सबको समान अवसर प्रदान किये जायें चाहे वह राजकुमार हो या रंक का पुत्र। सबको तुल्य वस्त्र, भोजन और आसन उपलब्ध हो और सभी विद्यार्थी, ब्रह्मचारी और तपस्वी हों क्योंकि सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ और विद्या चाहने वालों को सुख कहाँ? बालक के गुण, कर्म और स्वभावानुसार ही उसका उद्देश्य निश्चित करना चाहिये। 25 वर्ष तक ब्रह्मचारी रहकर शिक्षा पूरी करें। उन्होंने

सर्वप्रथम इतने प्रभावी ढंग से नारी एवं शूद्र को पढ़ने का अधिकार देने की वकालत की। सहशिक्षा को बड़ा दोष बतलाकर इसका विरोध किया। कुसंग, मद्य, धूम्रपान, आलस्य, अति जागरण का त्याग करना चाहिए। 25 वर्ष से पूर्व पुरुष को और 16 वर्ष से पूर्व कन्या को विवाह नहीं करना चाहिए।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। अतिथि देवोभव।

–तैत्तिरीय उपनिषद्

माता-पिता, आचार्य और अतिथि को देवता के समान समझकर उनका आदर सत्कार करना चाहिये।

चौथा समुल्लास – (विवाह और गृहस्थाश्रम)

महर्षि दयानंद जी ने 8 प्रकार के विवाहों का वर्णन किया है–

(1) ब्रह्म विवाह – यह मर्यादापूर्ण एवं वर वधू की इच्छा से होता है।

(2) दैव विवाह – यह यज्ञ के अनुष्ठान कर उत्सवपूर्वक होता है।

(3) आर्ष विवाह –यह ऋषियों के निर्देशानुसार किया जाता है।

(4) प्राजापत्य विवाह –संतान के लिये सहमति से होता है।

(5) आसुर विवाह –वर एवं वधु को कुछ देकर किया जाता है।

(6) गांधर्व विवाह – अनुचित ढंग से छिपकर किया जाता है।

(7) राक्षस विवाह – युद्ध एवं बलात्कार से किया जाता है।

(8) पैशाच विवाह – असहाय स्त्री से बलात्कार किया जाता है।

16 वर्ष से लेकर 24 वर्ष तक कन्या और 25 वर्ष से लेकर 48 वर्ष तक पुरुष के विवाह का समय उत्तम है। विवाह लड़का-लड़की की इच्छानुसार होना चाहिये न कि केवल माता-पिता के निर्णय से। यदि माता-पिता बच्चों का विवाह करना चाहें तो लड़का-लड़की की

प्रसन्नता के बिना कभी न करें। लड़का-लड़की चाहे मरणपर्यन्त अविवाहित रहें परन्तु उनका विवाह गुण, कर्म और स्वभाव मिलाकर ही करना चाहिये। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रमों का आधार गृहाश्रम है। यदि गृहाश्रम न होता तो संतानोत्पत्ति न होने के कारण कोई भी आश्रम नहीं हो सकता था। इस कारण जो व्यक्ति गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। मनुजी महाराज ने तो यहां तक लिखा है –

ऋतुकालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतः सदा।
ब्रह्मचार्य्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्।।

जो व्यक्ति अपनी ही स्त्री से प्रसन्न एवं ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ में रहता हुआ भी ब्रह्मचारी के समान है।

महर्षि दयानंद के अनुसार प्रत्येक गृहस्थ को पंचमहायज्ञ प्रतिदिन करने चाहिये–

(1) ब्रह्मयज्ञ –सन्ध्योपासना और प्रभुचिन्तन करना।

(2) देवयज्ञ –प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिये जिससे अग्नि के द्वारा वातावरण शुद्ध हो और रोग दूर हो जाये।

(3) पितृयज्ञ–माता-पिता एवं बड़ों की सेवा करना।

(4) बलिवैश्वदेव यज्ञ–पशु-पक्षियों को अन्न देना।

(5) अतिथि यज्ञ–अतिथियों की सेवा करना।

पाँचवाँ समुल्लास –(वानप्रस्थाश्रम एवं संन्यासाश्रम)

गृहस्थाश्रम समाप्त होने तक व्यक्ति अपने अभ्यास, अनुभव और परिस्थितियों के द्वारा परिपक्व हो जाता है। अतः उसे पारिवारिक उत्तरादायित्व एवं जीवनयापन की चिन्ताओं से मुक्त होकर अपने अनुभवों का लाभ समाज को देना चाहिए जिससे समाज का कल्याण हो। वानप्रस्थ का काल 50 वर्ष से 75 वर्ष तक माना गया है। संन्यासाश्रम और जिसका काल 75 वर्ष से 100 वर्ष तक माना गया

है । परन्तु सिर मुंडाकर, काषाय वस्त्र धारण करके एवं दण्ड कमण्डल हाथ में लेकर कोई व्यक्ति संन्यासी कभी भी नहीं बन सकता जब तक कि वह वितैषणा, पुत्रैषणा और लोकैषणा का परित्याग नहीं करता । वस्तुतः सत्य, प्रेम, परोपकार, अनासक्ति आदि गुणों को धारण करके ही व्यक्ति संन्यासी बन सकता है ।

छठा समुल्लास –(राजधर्म)

इसमें बताया गया है कि राजा प्रजा का निर्वाचित प्रतिनिधि होगा और अयोग्य होने पर बहुमत द्वारा जनता उसे हटा भी सकती है । राजा और जनता दोनों मिलकर राज्य चलाने के लिये तीन सभाएं बनायें । राष्ट्र की तीन सभाएं ये होनी चाहिएं–

(1) विद्या आर्य सभा – इसको शिक्षा का उत्तरदायित्व सौंपना चाहिए ।

(2) धर्म आर्य सभा – इसका सामाजिक, धार्मिक, न्याय व्यवस्था का कार्य सौंपना चाहिए ।

(3) राज आर्य सभा – इसको देश की आंतरिक एवं बाहरी सुरक्षा का उत्तरदायित्व सौंपना चाहिये ।

इन तीनों सभाओं को चलाने के लिए एक-एक सभापति की नियुक्ति होनी चाहिए । सभासदों की संख्या 10 होनी चाहिए जिनमें 3 वेद विद्वान् होने चाहिए । राजा को कोई स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं है वह इन सभाओं के सभापति होने के कारण इन्हीं की सलाह से काम चलाता है ।

सातवाँ समुल्लास –(वेद व ईश्वर विषय)

इस सृष्टि को देखकर मन में यह विचार आता है कि इसका रचनाकार अवश्य ही कोई न कोई है । हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान का प्रत्यक्ष कर लेते हैं परन्तु उसके गुणों को दृष्टिागोचर नहीं कर सकते जैसे नासिका से हम गंध को पहचान कर प्रत्यक्ष ज्ञात कर लिया परन्तु

उसको देखा नहीं। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड ही रचना विशेष ज्ञान आदि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमात्मा भी प्रत्यक्ष है। वस्तुतः सृष्टि की प्रत्येक रचना हमें प्रभु-स्मरण कराती है। परमात्मा और आत्मा दोनों ही निराकार हैं। अब जब आत्मा शुद्ध होकर परमात्मा का चिन्तन करने में तत्पर हो जाता है, तब दोनों प्रत्यक्ष हो जाते हैं। अनुमान आदि प्रमाणों से भी परमेश्वर की सत्ता का भान होता है।

इस समुल्लास में ईश्वर विषय को बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। जब कोई भी व्यक्ति बुरा काम करता है तो परमात्मा की ओर से उसके हृदय में तीन अनुभूतियां पैदा होती हैं—भय, शंका और लज्जा और जब वह अच्छा काम करता है तो चार अनुभूतियां पैदा होती हैं—मन का प्रफुल्लित होना, आत्मोत्सर्ग, उत्साह और आनन्द।

ईश्वर निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु व सच्चिदानन्द है। यदि वह साकार होता तो सर्वव्यापक न होता। वह जगत् की उत्पत्ति, पालन एवं प्रलय में सर्वशक्तिमान है। आत्मा को पाणिनी ने स्वतंत्रकर्ता कहा अर्थात् वह अपने काम करने में स्वतंत्र है परन्तु फलभोग में परतंत्र है। ऐसे परमात्मा की हमें स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए। उसके गुण, कर्म, स्वभाव का उल्लेख ही स्तुति है। प्रार्थना से बल, बुद्धि की वृद्धि भी होती है और उपासना का अर्थ समीप जाना है। इसके विषय में महर्षि दयानंद ने लिखा है—

जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना ओर उपासना नहीं करता वह कृतज्ञ और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थों जीवों के सुख के लिए दे रखे हैं उसका उपकार भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है। परमात्मा पापों को कभी भी क्षमा नहीं करता। अतः कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है।

आठवाँ समुल्लास —(सृष्टि निर्माण/जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय)

सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का विशद विवेचन किया

गया। इससे पूर्व सारे संसार में अंधकार ही अंधकार था। पृथ्वी, सूर्यादि कोई भी गृह नहीं थे। परन्तु तीन पदार्थ अनादि हैं। प्रकृति, आत्मा और परमात्मा। प्रकृति सत् है। आत्मा सत्+चित् है और परमात्मा सत्+चित्+आनन्द है। अतः आनन्द प्राप्ति के लिए आत्मा परमात्मा की खोज करती रहती है। बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। जगत् की उत्पत्ति के तीन कारण हैं – निमित्त, उपादान और साधारण। महर्षि दयानंद सर्वप्रथम देशभक्त थे जिन्होंने कहा था कि आर्य भारत में ही उत्पन्न हुए थे न कि कहीं बाहर से आये थे। वे पहले महापुरुष थे जिन्होंने 'स्वराज्य' की सर्वप्रथम घोषणा की थी।

नौंवाँ समुल्लास –(विद्या, अविद्या, बंध और मोक्ष)

अनुबंध चतुष्टय–

(1) अधिकारी– विद्या के लिये विद्यार्थी बनना पड़ता है। अतः मुक्ति के लिये व धर्माचरण करना आवश्यक है।

(2) संबंध – व्यक्ति का संबंध स्वाध्याय एवं उपासना से होना चाहिये।

(3) विषयी –व्यक्ति का संबंध ईश्वरोपासना से होना चाहिये।

(4) प्रयोजन – दुःख का त्याग और सुख की प्राप्ति।

श्रवण चतुष्टय–

मुक्ति के लिए इसका पालन करना आवश्यक है–

(1) श्रवण विद्वानों से ब्रह्मविद्या का उपदेश सुनना।

(2) मनन सुनने के उपरांत उसका चिन्तन करना।

(3) निदिध्यासन–जैसा सुना और चिन्तन किया वैसा ही अनुभव करना।

(4) साक्षात्कार – ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव से परिचित होना।

वेद के अनुसार मुक्ति साधन चतुष्टय – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का विधान किया गया है। जब व्यक्ति को विवेक द्वारा सत्य और

असत्य का निर्णय हो जाने से पाँच कोशों (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय), तीन अवस्थाओं (स्वप्न, जागृति और सुषुप्ति), तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) से आत्मा अलग हो जाता है तब उसे वैराग्य हो जाता है । वैराग्य का अर्थ है—भौतिक सुख को क्षणिक जानकर उनका मोह त्याग कर प्रभुभक्ति करना ।

षट्क सम्पत्ति –

(1) शम – मन को शांत करके परमात्मा में लगाना ।

(2) दम – इन्द्रियों को बुराइयों से हटाकर अच्छाइयों की ओर लगाना ।

(3) उपरति – बुरे कामों से दूर रहना ।

(4) तितिक्षा – मान-अपमान, लाभ हानि में एक समान रहना ।

(5) श्रद्धा – श्रद्धा और विश्वास रखना ।

(6) समाधान – मन को एकाग्र करना ।

(7) मुमुक्षुत्व – मोक्ष की इच्छा करना ।

किस कर्म से कौन सा फल प्राप्त होता है ?

(1) चोरी करने पर स्त्रीगमन, साधुओं को दुःख देने से वृक्ष का जन्म मिलता है ।

(2) मन से किये गये पाप से चण्डाल का जन्म मिलता है ।

(3) वाणी से किये गये पाप से पक्षी का जन्म मिलता है ।

(4) सतोगुणी व्यक्ति को विद्वान्, रजोगुणी व्यक्ति को मध्यम वर्ग और तमोगुणी व्यक्ति को नीच गति मिलती है ।

तीन प्रकार के दुःख

(1) आध्यात्मिक दुःख – मानसिक व शारीरिक दुःख ।

(2) आधिभौतिक दुःख – दूसरे व्यक्तियों द्वारा दिये गये दुःख ।

(3) आधिदैविक दुःख – प्रकृति द्वारा दिये गये दुःख ।

आत्मा अल्पज्ञ है इस कारण बंधन में आ जाता है । आत्मा

अपने कर्मों का कर्त्ता व भोक्ता है न कि साक्षी । मोक्ष में आत्मा अपना अस्तित्व नहीं खोता । इस अवस्था में आत्मा का स्थूल शरीर नहीं होता परन्तु वह अपने सत्य संकल्पादि गुणों के कारण आनन्द की अनुभूति करता है । इस अवस्था में आत्मा अत्यधिक व्यापक होकर स्वतंत्र रूप से ब्रह्म में विचरण करता है । आत्मा जितना अधिक ज्ञानी होता है ब्रह्म में उतना ही सुख मिलता है । मोक्ष के उपरांत फिर वह पुनः संसार में लौटकर आता है क्योंकि यदि पुनरावृत्ति न हो तो धीरे-धीरे संसार में जीवों का अभाव हो जाएगा । परमात्मा आत्मा को उसके कर्मानुसार फल प्रदान करता है । अच्छे कर्म करने से अच्छी योनि और बुरे कर्म करने से बुरी योनि प्राप्त होती है ।

दसवाँ समुल्लास – (आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य)

यह सदाचार का मूलमंत्र है कि मानव को जितेन्द्रिय होना चाहिये । सदा सत्य एवं प्रिय बोलना चाहिए और जिज्ञासु को बिना पूछे ही ज्ञान देना चाहिए । समाज में रहकर परोपकारी एवं कल्याणकारी कार्य करने चाहिए जिससे समाज का भला एवं प्रगति हो । प्रतिदिन स्नान करके शरीर के अंगों को साफ-सुथरा रखना चाहिए और साथ ही दैनिक उपयोगी वस्तुओं को भी साफ रखे । हमारी वाणी विनम्र एवं मधुर हो । विद्या से सदाचार आता है । यदि कोई व्यक्ति आयु में बड़ा है तो वह बड़ा नहीं अपितु युवा विद्वान् को ही बड़ा जानो । अंडा, मांस, मद्य, अफीम आदि का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि ये शरीर एवं मन के लिए हानिकारक होते हैं । गंदे फल एवं शाक-सब्जी का भी सेवन मत करें । झूठ, चोरी, हिंसा आदि से उपलब्ध भोजन भी अभक्ष्य हैं । चौके के अतिरिक्त किसी भी साफ स्थान पर बैठकर भोजन करना चाहिए परन्तु एक थाली में किसी भी दूसरे व्यक्ति के साथ बैठकर भोजन मत करें क्योंकि ऐसा करने से रोग फैलने का भय बना रहता है ।

ग्यारहवाँ समुल्लास – (भारत के मत-मतान्तरों का खंडन-मंडन)

महर्षि दयानंद जी ने हिन्दू धर्म को जिसको चूं-चूं का मुरब्बा

कहते हैं, के सुधार का निश्चय किया। इसके क्या सिद्धान्त हैं? हिन्दू धर्म का प्रत्येक सम्प्रदाय, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, एवं वाममार्ग के अतिरिक्त प्रत्येक वेद को सम्मान की दृष्टि से देखते है।। अतः वेदों को ही आधार बनाकर स्वामी दयानंद ने सुधार किये।

वे लिखते हैं कि आर्यवर्त देश जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। महाभारत काल के उपरांत जो विभिन्न पंथ इस देश में चले उनके पाखंडों का खंडन यहाँ पर किया गया है। वाम-मार्ग में 5 चीजों–मांस, मछली, मद्य, पकवान एवं नारी को मोक्षमार्ग कहा गया है। वाम-मार्ग के समारोहों व उपासनाओं में अत्याधिक घृणित और अश्लील कुकर्म किये जाते हैं। चार्वाक जैसा नास्तिक विचारक उत्पन्न हुआ जिसने कर्मकाण्ड के साथ-साथ कर्मफल आदि के विरुद्ध भी प्रचार किया। यहाँ तक कि कबीर, नानक, दादू, पंथियों, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज के विभिन्न पाखंडों का भी घोर खंडन किया। अवतारवाद, मूर्तिपूजा, पीर और कब्रों आदि मूर्तिपूजा के विकल्प में महर्षि दयानन्द जी ने पंचायत पूजा अर्थात् माता-पिता, आचार्य, अतिथि, पति के लिये पत्नी और पत्नी के लिए पति पूज्य की व्यवस्था का विधान किया। पुराणों के रचयिता वेद व्यास नहीं हैं। वे लिखते हैं–

जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते। व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते।

इसमें श्रीकृष्ण का गुनगान किया गया। सारी मानवता का एक ही धर्म है और धर्म के नाम पर सम्प्रदाय एवं संगठन बन गये हैं। ये सम्प्रदाय एक दूसरे की निन्दा करते हैं।

बारहवाँ समुल्लास –(चार्वाक बौद्धमत एवं जैनमत)

चार्वाक पंथ के प्रवर्त्तक बृहस्पति थे जो पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने कहा कि खाओ पिओ करो आनन्द, कल किसने देखा है। यह मत भी वाममार्ग की भाँति समाज विरोधी है। बौद्धमत

भी पुनर्जन्म, वेद, ईश्वर आदि को नहीं मानता है । बौद्धमत ने संसार को दुःखों का घर माना । निराशावादी दृष्टिकोण होने के कारण यह मत संसार के लिये कल्याणकारी नहीं है । 'जिन' देव के उपासक होने के कारण इन्हें जैन कहा गया हैं ये दो प्रकार के हैं –श्वेताम्बर व दिगम्बर । वे कहते हैं 24 तीर्थंकर ईश्वर थे परन्तु एक व्यक्ति ईश्वर कभी भी नहीं बन सकता ।

तेरहवाँ समुल्लास –(बाइबल के पाखंडों का खंडन)

स्वामी जी ने 'बाइबल' का गंभीर अनुशीलन करने के उपरान्त प्रस्तुत ग्रंथ में बाइबल से 133 विभिन्न उद्धरण प्रस्तुत किये और बाइबल के पाखंडों की समीक्षा करके सत्य का प्रकाश किया और लिखा–

बाइबल का सृष्टि क्रम सृष्टि विद्या के विरुद्ध है ।

'दिन भर की रोटी आज हमें दे अपने लिये पृथ्वी पर धन का संचय मत करो ।'

(समीक्षक) इससे विदित होता है कि जिस समय ईसा का जन्म हुआ उस समय लोग जंगली और दरिद्र थे तथा ईसा भी वैसा ही दरिद्र था । इसी से तो दिनभर की रोटी की प्राप्ति के लिये ईश्वर की प्रार्थना करता और सिखलाता है । जब ऐसा है तो ईसाई लोग धन संचय क्यों करते हैं । उनको चाहिये कि ईसा के वचन से विरुद्ध न चलकर सब दान पुण्य करके दीन हो जायें ।

चौदहवाँ समुल्लास –(क़ुरान के पाखंडों का खंडन)

महर्षि दयानंद के समय में क़ुरान का अनुवाद उर्दू में तो हो चुका था । परन्तु हिन्दी भाषा में नहीं हुआ था । अतः महर्षि दयानंद ने अपने व्यय से हिन्दी में भी इसका अनुवाद करवाया और स्वयं भी इसका अध्ययन किया । इसका हिन्दी आज भी परोपकारिणी सभा अजमेर में सुरक्षित है । महर्षि दयानंद जी ने मुसलमानों के पवित्र ग्रंथ 'क़ुरान' का गंभीर अध्ययन करके उसमें से 'सत्यार्थप्रकाश' में विभिन्न 161 उद्धरण प्रस्तुत किये हैं । इसके साथ ही पाखंडों, गप्पों और अवैज्ञानिक

युक्तियों का घोर खंडन भी किया जोकि सत्य पर पूरी नहीं उतरती हैं। जैसे–

तुम जिधर मुंह करो उधर ही मुंह अल्लाह का है। –कुरान

(समीक्षक) 'जो यह बात सच्ची है तो मुसलमान 'किबले' की ओर मुंह क्यों करते हैं? तो यह भी हुकम है कि चाहे जिधर की ओर मुख करो। क्यों एक बात सच्ची और दूसरी झूठी होगी? और जो अल्लाह का मुख एक ओर होगा, सब ओर क्योंकर रह सकेगा? इसलिए यह संगत नहीं। आगे महर्षि दयानंद लिखते हैं–

जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से मुझको ग्राह्य है।

सत्यार्थप्रकाश की मुख्य विशेषताओं का वर्णन अधोलिखित पंक्तियों में किया जाता है जिनके कारण यह अमरग्रंथ बन गया–

1. सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव –

महर्षि दयानन्द के इस ग्रंथ के प्रभाव का मूल्यांकन करना खाला जी का घर नहीं हैं। उगते सूर्य की किरणें किस पर क्या एवं कैसा प्रभाव डाल रही होती हैं, इसका अनुमान कौन कर सकता है? सूर्य के उदय के साथ ही जहाँ संसार आँखें खोलता है, वहाँ कुछ ऐसे भी तो जीव जन्तु हैं जो उसके प्रकाश को सह नहीं सकते और उन्हें अपनी आँखें मूंदनी पड़ती हैं। सूर्य की किरणें जहाँ असंख्य पेड़ पौघों के लिए जीवनदायिनी शक्ति लेकर आती हैं, वहाँ दूसरी ओर कई खण्ड-मुण्ड पेड़ों के लिए काल बनकर भी तो आती हैं। इससे कौन क्या ग्रहण करता है? इसका ठीक-ठीक वर्णन करने की क्षमता किसमें हो सकती है जैसे भौतिक सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना भी अत्यंत कठिन कार्य है। वैसे ही इस ज्ञान सूर्य के प्रभाव का वर्णन करना भी कठिन है। सत्यार्थप्रकाश रूपी भानु के उदय होने से प्रकाश प्रिय लोगों के ज्ञानचक्षु खुल गये किन्तु अंधकार प्रिय लोगों को अपनी आँखें मूंदनी

पड़ी। उन लोगों ने इस ज्ञानसूर्य को कोसना आरम्भ कर दिया। कोई-कोई तो इन पर कीचड़ उछालने लगे। किन्तु जैसे सूर्य से आँख मिलाने की ताब किसी में नहीं वैसे ही इन ज्ञान-सूर्य के सम्मुख भी किसी भी आँख नहीं उठ सकी।

सत्यार्थप्रकाश में सत्यासत्य के निर्णय हेतु निष्पक्ष भाव से अन्य मतमतान्तरों की जो आलोचना की गई है वह जहाँ सुधी पाठकों को सत्यासत्य के निर्णय करने में सहायक होती है, वहाँ उन मतमतांतरों के लिये बड़ी ही लाभदायक सिद्ध हुई है। वे लोग सत्यार्थप्रकाश में की गई आलोचनाओं के कारण अपने सिद्धान्तों, मन्तव्यों एवं मान्यताओं की नवीन व्याख्या करने लगे हैं एवं यथासम्भव उन्हें बुद्धि सम्मत एवं तर्कसंगत बनाने का प्रयत्न करने लगे हैं। किन्तु जैसे स्वर्ण पर मैल चढ़ जाने से उसे भट्टी में तपाकर कुन्दन बनाया जा सकता है किन्तु कोयले को कुन्दन बनते आज तक किसी ने नहीं देखा। भले ही अग्नि में पड़कर थोड़ी देर के लिए उसकी कालिमा जाती रहे, किन्तु स्वर्ण की सी दीप्ति उसमें कभी भी नहीं आ सकती।

ठीक इसी प्रकार असत्य सिद्धान्तों की व्याख्यायें चाहे जितनी बदल-बदल कर क्यों न की जाए, असत्य-असत्य ही रहता है। उसे तो त्यागने में ही भलाई है। लीद पर चांदी का वर्क चढ़ा देने से मिठाई थोड़े ही बन जाती हैं। जो भी हो सत्यार्थप्रकाश का आप्त प्रभाव तो कार्य करेगा ही। वस्तुतः इसी की सुखद छाया में नवीन तर्क मूलक व्याख्यायें सोची जाने लगी हैं। जैसे आकाशवाणी से उद्घोषित स्टेन्डर्ड टाइम से सभी लोग अपनी-अपनी घड़ियों की सुईयां मिलाते हैं, एवं उनके दोष ठीक करते हैं, वैसे ही विभिन्न मतवादी लोग 'सत्यार्थप्रकाश' में उद्घोषित सत्य सनातन सिद्धान्तों से अपने-अपने सिद्धांतों का मिलान कर उनके दोष दूर करने में लगे हैं। पं० चन्द्र प्रकाश अपनी पुस्तक 'हम सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?' में लिखते हैं—

जिन्हें इतिहास का ज्ञान है वे जानते हैं कि इस शताब्दी में

अंधविश्वास, पाखण्ड एवं कुरीतियों का कूड़ा'करकट जितना इस एक ग्रंथ के अध्ययन से दूर हुआ है, उतना विश्व के किसी दूसरे ग्रंथ से नहीं ।

यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाये तो पता चलेगा कि रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं से बचाने के लिए विश्व साहित्य की यह एक सर्वथा अनुपम और अद्‌भुत कृति है । मानवता का पथ प्रदर्शक यह ग्रंथ असंख्य भूले भटके मानवों को सुपथ दिखा चुका है । गुरुदत्त इसके स्वाध्याय से प्रबल आस्तिक ही नहीं आस्तिकता के प्रबल प्रचारक बने । बाबू मुंशी राम इसी के स्वाध्याय से पहले महात्मा मुंशी राम और फिर स्वामी श्रद्धानंद बने । अतः स्वामी सत्यदेव पारिव्राजक लिखते हैं–

मैं अवश्य ही ईसाई हो गया होता यदि मैंने सत्यार्थप्रकाश और स्वामी दयानंद की जीवनी को अच्छी तरह न पढ़ा होता ।

इस विषय में स्वामी दिव्यानंद जी द्वारा रचित '' पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश'' नामक कविता अत्यंत उल्लेखनीय है–

वेद-शास्त्र का विमल प्रकाश, आर्षग्रंथ का सार निकास
मनुस्मृति का दिव्य विकास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।1 । ।
प्रथम गुरु माँ को बतलाता,
पालक-पोषक पिता कहाता ।
विद्यागुरु करे बुद्धि-विकास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।2 । ।
आर्ष ग्रंथ जो पढ़े-पढ़ायें,
अल्पकाल में विद्या पाये ।
सद् गृहस्थ में स्वर्गनिवास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।3 । ।

जरा-अवस्थ तन में आये,
हो विरक्त प्रभु-भक्ति बढ़ाये ।
ध्यान से होगा क्लेश विनाश,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।4 । ।
आर्य राज्य से नीति चलाओ,
विश्व प्रेम की ज्योति जलाओ ।
ईश-भक्ति से आत्म विकास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।5 । ।
ईश्वर को निज सखा बनाओ,
ध्यान योग में गुण अपनाओ ।
जीवन में होया उल्लास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।6 । ।
खाद्य अखाद्य का रहे विचार,
सात्विक-शुद्ध करो आहार ।
मद्य-मांस से तन का नाश,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।7 । ।
प्रतिमा पूजन धर्म नहीं है,
भ्रमित-पाप शुभ कर्म नहीं है ।
मानवता का सफल प्रयास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।8 । ।
रामकृष्ण गणपति गौरीशा,
अल्ला-मुल्ला मूसा-ईशा ।
सब में एक ईश का वास,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।9 । ।
त्याग अविद्या विद्या धारो,
सत्यधर्म वैदिक स्वीकारो ।
पूरी दिव्यानंद की आश,
पढ़ो ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश । ।10 । ।

2. सत्यार्थप्रकाश का महत्व –

इस ग्रंथ का महत्व इसलिये भी है कि इसी एक ग्रंथ के स्वाध्याय मात्र से संसार के प्रायः सभी प्रमुख-प्रमुख मतों एवं उनके मान्य सिद्धान्तों का परिचयात्मक ज्ञान हो जाता है । तभी डॉ० भवानी लाल भारतीय इसे 'विश्वधर्मकोश' के नाम से पुकारते हैं । कहा जाता है कि अमेरिका में कभी एक ऐसे मन्दिर के निर्माण की योजना बनाई गई थी जिसमें संसार भर के प्रायः सभी मुख्य मतों एवं उनकी शिक्षाओं का एक ही स्थल पर संग्रह हो । दुर्भाग्य से वह मंदिर नहीं बन पाया किन्तु महर्षि दयानंद को यह गौरव प्राप्त है कि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के रूप में एक ऐसे अद्‌भुत ज्ञान मंदिर का निर्माण कर दिखाया कि जिसमें संसार भर के प्रायः सभी मुख्य सम्प्रदायों का न केवल परिचयात्मक ज्ञान ही प्राप्त होता है वरन् उनके गुण-दोषों का भी बोध हो जाता है । वस्तुतः यह सद्‌ग्रंथ महर्षि दयानंद का ज्ञानकोष उसकी दार्शनिक अभिव्यक्ति एवं गंभीर स्वाध्याय का ही प्रतिफल है । मानव जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं जिसकी चर्चा इस ग्रंथ में न की गई हो । जैसे–

> **यदि सत्यार्थप्रकाश की प्रति का मूल्य एक सौ रुपये है, मैं जिधर भी देखता हूँ । उधर ही सत्यार्थप्रकाश में वह विद्या की बातें भरी पाता हूँ जिसका वर्णन करते हुए बुद्धि चकित हो जाती है । मैंने 18 बार सत्यार्थप्रकाश को विचारपूर्वक पढ़ा है और जब भी उसे पढ़ा तब-तब नए से नऐ अर्थों का भाव हुआ ।** –पं० गुरुदत्त

श्री विद्यानंद जी इस ग्रंथ के महत्व को दर्शाते हुये अपनी पुस्तक ''सत्यार्थप्रकाश दर्पण'' में लिखते हैं–

> **इस ग्रंथ को यदि हम सूत्र कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । क्योंकि सूत्र उसे कहते हैं जो बहुत को थोड़े में बतला दे ।**

वस्तुतः प्रस्तुत कृति मानव कल्याण के सूत्रों से भरी पड़ी है । कुरीतियों, कुप्रथाओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों आदि से भारत- वासियों को ही नहीं अपितु मानवता को बचाने में इस ग्रंथ की जो भूमिका रही

है, वैसी संसार भर के किसी भी अन्य ग्रंथ में नहीं मिलती । इसी कारण स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपनी पुस्तक की भूमिका ''सत्यार्थप्रकाश क्यों पढ़ें ?'' में लिखा है–

महर्षि दयानंद सरस्वती का अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश भारत को ही नहीं मानव मात्र को प्रत्येक युग में नयी प्रेरणाएं देता रहेगा । रूढ़ियों और अंध विश्वासों से बचाने के लिये यह विश्वसाहित्य की अद्वितीय रचना है और सद्विचार और मानव कल्याण का पोषक एकमात्र ग्रंथ है ।

3. स्वराज्य का प्रथम उद्घोषक–

सत्यार्थ प्रकाश इसलिये भी अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है कि इसमें ही सर्वप्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया गया । महर्षि दयानंद स्वयं प्रस्तुत ग्रंथ में लिखते हैं–

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है । अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है ।

स्वदेशी की भावना को भारतीयों के हृदय में वपन करने का स्तुत्य प्रयास भी सत्यार्थप्रकाश द्वारा ही सम्भव हो सका है । एकादश समुल्लास में अंग्रेजों द्वारा इस देश के बने जूतों को कचहरी, कार्यालय आदि में न ले जाने देने की बात पर श्री सत्यदेव विद्यालंकार अपनी पुस्तक ''राष्ट्रवादी दयानंद'' में सत्य ही लिखते हैं–

जिस व्यक्ति के हृदय में अपने देश के बने जूते के लिये इतना मान-सम्मान हो कि वह उसका विदेशी जूते के मुकाबिले में कचहरी या दफ्तर में न जाने देने तक का अपमान सहन न कर सकता हो, उसके हृदय में समाई स्वदेशी की भावना का अनुमान सहज में किया जा सकता है ?

वस्तुतः भारतीयों में स्वदेश प्रेम को जगाने और स्वदेशी का प्रचार करने में इस ग्रंथ की अपूर्व भूमिका रही है ।

4. सत्यार्थप्रकाश अग्नि परीक्षाओं में–

सर्वप्रथम 1909 ई० में पटियाला रियासत में सत्यार्थप्रकाश पर विद्रोह फैलाने का मुक़द्दमा चलाकर 85 आर्यसमाजियों को जेल भेज दिया गया। आर्यसमाज की ओर से इस मुक़द्दमे की पैरवी स्वयं स्वामी श्रद्धानंद जी ने की और विजयश्री प्राप्त की। दूसरा आक्रमण प्रयाग के जज की ओर से था। इसमें भी इसे विद्रोह की भावना जागृत करने वाला ग्रंथ सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया। इसमें स्वामी श्रद्धानंद जी और लाला लाजपत राय की राजनीतिक गतिविधियों को खूब उछाला गया। परन्तु जज ने फैसला आर्य समाज के पक्ष में दिया और इस प्रकार से यह आक्रमण भी विफल हो गया। 1926 ई० में लाहौर के मुसलमानों ने इसे हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य फैलाने वाला ग्रंथ घोषित करके इसकी जबती का असफल प्रयास किया।

सबसे बड़ा हमला सिंध की मुस्लिम लींग सरकार की ओर से हुआ जिसका आर्य समाज ने अपनी पूरी शक्ति से खूब डट कर सामना किया। 21-2-1944 और 22-2-1944 को डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में एक विशाल आर्य सम्मेलन बुलाया गया। विशाल शोभा यात्रा और अपार जनसमूह का अपना विशेष प्रभाव था। गोस्वामी गणेशदत्त, बाबा विचित्र सिंह आदि नेताओं का पूर्ण सहयोग मिला। तत्काल 2,00,000 रुपये सत्यार्थप्रकाश रक्षानिधि में एकत्रित हो गये। 7-5-1944 को सारे भारतवर्ष में सत्यार्थप्रकाश दिवस मनाया गया। इस अवसर पर धन एकत्र करने के साथ-साथ सत्याग्रह के लिये सत्याग्रही भरती किये गये।

सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबंध–

सिन्ध की सरकार ने 16-10-1944 को सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास के मुद्रण एवं प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि सिन्ध सरकार का कहना था कि इस समुल्लास में की गई क़ुरान की आलोचना से मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुँची है।

20-11-1944 को सार्वदेशिक सभा द्वारा श्री घनश्याम सिंह गुप्त की अध्यक्षता में ''सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति'' का गठन किया गया। परन्तु प्रतिबंध नहीं हटा। 13-11-1946 को दिल्ली में बैठक के निर्णय के अनुसार महात्मा नारायण स्वामी जी ने अपने साथ पाँच सत्याग्रहियों –महात्मा आनंद स्वामी, स्वामी ध्रुवानंद, स्वामी अभेदानंद, स्वामी विद्यानंद और कुंवर चांदकरण शारदा को लेकर कराची पहुँचे। सत्याग्रह आरम्भ होने के पाँचवे दिन सिंध सरकार की ओर से यह विज्ञप्ति पास की गई–

सिन्ध सरकार ने केवल सत्याग्रहियों को गिरफ्तार नहीं किया अपितु जिला अधिकारियों को सूचित कर दिया गया कि सत्यार्थप्रकाश के रखने, पढ़ने, उसमें से प्रवचन करने आदि के काम में कोई बाधा न डाले।

इस प्रकार महात्मा नारायण स्वामी ने प्रतिबंध को डीड लैटर घोषित करके सत्याग्रह को समाप्त कर दिया और सब सत्याग्रही 20-1-1947 को दिल्ली लौट आये।

अंत में आर्य समाज की विजय हुई और सत्यार्थप्रकाश आज भी अपनी विजय पताका शान से फहरा रहा है। सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबंध का एक लाभ यह हुआ कि इसका खूब प्रचार हुआ। प्रायः सभी लोग इसे पढ़ने के उत्सुक रहते थे कि आखिर इसमें ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण इस पर प्रतिबंध लगता रहता है। स्वामी वेदानंद ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव' में सत्य ही लिखा है–

सत्यार्थप्रकाश एक ऐसा कुन्दन है जिसे जितना अधिक प्रतिद्वन्दी अग्नि में तपाया जाता है उतना ही वह अधिक चमक उठता है।

5. स्वतंत्र चिन्तन का श्रीगणेश–

सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबंध के विरोध में आर्यसमाज ने इस

ग्रंथ का खूब प्रचार किया। यहाँ तक कि महामना मदनमोहन मालवीय जी ने प्रस्तुत ग्रंथ को स्वयं अपने हाथों से बेचा और प्रचार भी किया। फलतः इसके स्वाध्याय की प्रवृति आम जनता में बढ़ गई। लोग इसका स्वाध्याय करते गये हैं और उनकी काया पलटती चली गई। इस ग्रंथ ने लोगों का स्वतंत्र चिन्तन का मार्ग दिखाया तथा स्वतंत्र चिन्तन के कारण ही हिन्दू जाति रुढ़िवादिता की लीक को तोड़ने में सफल हो सकी। आलोच्य कृति में लेखक ने बुद्धिवाद की मशाल जलाई थी। अतः कविवर रामधारी सिंह दिनकर को यह कहना पड़ा–

दयानंद ने जो बुद्धिवाद की मशाल जलाई थी उसका कोई जवाब नहीं।

यह सत्य है कि आज जो अविश्वसनीय तथ्यों व घटनाओं, चरित्रों व भावनाओं को विश्वसनीय या बुद्धिसंगत धरातल पर उतारने के प्रयत्न हो रहे हैं, वे सत्यार्थप्रकाश प्रदत स्वतंत्र चिन्तन की भावनाओं का ही परिणाम है। इसकी रचना के पश्चात् ही राम, कृष्ण आदि अवतारों का मानवीकरण एवं उनसे संबद्ध प्रायः सभी अलौकिक लीलाओं को बुद्धिवादी धरातल पर उतार लाने के प्रयास सम्भव हो सके हैं। अतः एक हिन्दी कवि ने कितना सुन्दर लिखा है?

ऋषिराज तेज तेरा चहुँ ओर छा रहा है।

तेरे बताये पथ पर संसार आ रहा है।।

6. सत्यार्थप्रकाश की लेखनशैली –

महर्षि दयानंद वैचारिक क्रांति के अग्रदूत थे और सत्यार्थप्रकाश उनके विचारों का पुंज है। यह उनकी दार्शनिक अभिव्यक्ति का ज्ञानकोष है। इसी कारण यह ग्रंथ भी वैचारिक क्रांति का अग्रदूत ही माना जाता है। वैचारिक क्रांति के अग्रदूत इस ग्रंथ की भाषा शैली भी

मुख्य रूप से विचारात्मक ही है । बौद्धिक विवेचना की प्रधानता ही विचारात्मक शैली की मुख्य विशेषता मानी जाती है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है –

विचारात्मक शैली का परम उत्कर्ष यही कहा जा सकता है जहाँ प्रत्येक पेरा ग्राफ में विचार दबा-दबा कर ठूंसे गये हों ।

यदि विचारपूर्वक देखा जाये तो पता चलता है कि सत्यार्थप्रकाश बौद्धिक विवेचन से भरा पड़ा है । विचारों का तो यह अथाह सागर ही है । चिंतन के लिये जितनी सामग्री यह ग्रंथ प्रस्तुत करता है उतनी संसार का शायद ही कोई अन्य ग्रंथ करता हो ।

7. सत्यार्थप्रकाश में खंडन-मंडन–

सत्यार्थप्रकाश में अन्य मतों की समीक्षा को देखकर प्रायः लोग आक्षेप किया करते हैं कि महर्षि ने अपने ग्रंथ में अन्य मतों की आलोचना क्यों की? उन्हें केवल अपने मन्तव्यों का प्रतिपादन ही करना चाहिए था । व्यर्थ के आक्षेप नहीं । किन्तु ऐसा कहने वाले महर्षि दयानंद के आशय को समझ ही नहीं पाये । उन्होंने किसी का मन दुःखाने के लिए खंडन नहीं किया अपितु असत्य के निराकरण एवं सत्य के प्रतिपादन हेतु ही जहाँ आवश्यक समझा वहीं खंडन का सहारा लिया है । एक कुशल शल्य चिकित्सक इस तथ्य से भलीभाँति परिचित होता है कि किसी घाव की सफलतम चिकित्सा के लिए केवल अच्छे मरहम का होना ही पर्याप्त नहीं । उस घाव को सर्वथा पीप रहित कर साफ-स्वच्छ करना परमावश्यक होता है । इसी प्रकार महर्षि-दयानंद भी यह मानकर चले थे कि धर्म-संस्थापन के लिए केवल सत्य का प्रतिपादन ही नहीं, असत्य का निराकरण भी आवश्यक है । वे विद्या की वृद्धि से ही संतुष्ट नहीं होते, अविद्या का नाश आवश्यक समझते हैं । सत्य के ग्रहण करने में ही संतोष नहीं करते, असत्य को त्यागना

भी आवश्यक समझते हैं। अतः डॉ० भवानी लाल भारतीय ने ''विश्वधर्मकोश'' में सत्य ही लिखा है–

धर्म संशोधन के लिए खंडन-मंडन का कार्य चाहे वह कितना ही अप्रिय क्यों न हो अवश्यमेव अनुकरणीय होता है।

इसके विषय में लिखा है–

मैंने सत्यार्थप्रकाश को अठारह बार पढ़ा और जितनी बार पढ़ा है उतनी ही बार यह अनुभव हुआ कि मैं नया ग्रंथ पढ़ रहा हूँ। हर बार ग्रंथ का नया रूप सामने आता रहा और मैं उस में खो जाता रहा। सत्यार्थ –सिन्धु में अवगाहन करता रहा, गोते लगाता रहा और अनेक मूल्यवान और आभावान रत्न चुनता रहा। जो भी व्यक्ति इस ग्रंथ का अवगाहन करेगा उसे अमूल्य मणि-मुक्ता उपलब्ध होंगे। यह ग्रंथ इतना मूल्यवान है कि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति को इसके सामने तुच्छ समझता हूँ।

इसी प्रकार डॉ० राम प्रकाश जी सत्यार्थ विमर्श के आरम्भ में ही लिखते हैं कि –

सत्यार्थप्रकाश कालजयी ग्रंथ है। यह ऋषि दयानंद जी की मान्यताओं और सरोकारों का प्रतिनिधि है। इस ग्रंथ ने नव जागरण को नेतृत्व दिया है। यह ग्रंथ भारत की बौद्धिक सम्पदा का सारभूत है। यह वेदादि की अंतर्ध्वनि का घोष है। यह धर्म का सम्बल है, कार्य का भी सम्बल है। पर धर्म के नाम पर धंधा चमकाने वालों के लिए यह वज्र है।

यह ईश्वर एवं वेद के प्रति उनकी गहन आस्था की अभिव्यक्ति है, साथ ही विभिन्न विषयों पर उनके चिंतन का सार है। इसीलिए तो इसे सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक ग्रंथ कहा गया है। अतः स्वामी दीक्षानंद जी सत्यार्थप्रकाश को कल्पतरु तो श्री यशपाल आर्य बन्धु इसे सत्यार्थ-दिग्दर्शन मानते हैं। जिसने भी सत्यार्थ सिन्धु में गोता लगाया वह ही ज्ञान रूपी रत्नों को पा कर धन्य हो उठा। अतः एक हिन्दी कवि ने कितना सुन्दर कहा है–

विष पीकर अमृत बाँटा, यह महर्षि का विश्वास है ।
सभी समस्याओं का निश्चित, हल यह सत्यार्थप्रकाश है ।।
दिग्दर्शन है इसमें केवल सार्वभौम सिद्धांत का ।
वसुधा ही परिवार हमारा, नहीं व्यक्ति या प्रांत का ।।

अन्ततः उपयुक्त विवेचन से इतना ही कहना प्रचुर होगा कि 'सत्यार्थप्रकाश' महर्षि दयानंद कृत अनुपम, अद्‌भुत एवं अमर ग्रंथ है यदि यह कहा जाये कि यह वेद, उपनिषदों, गीता, मनुस्मृति आदि का सार है जो अपनी दिव्य आभा वसुन्धरा रूपी वाटिका में आज भी विकीर्ण कर रहा है तो इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति न होगी । परन्तु आज दारुण दुर्भाग्य का विषय है कि साधारण व्यक्ति इस अमर ग्रंथ का स्वाध्याय नहीं करते । अतः सविनय निवेदन है कि इसका स्वाध्याय करें ताकि इस जीवन का कायाकल्प हो सके जैसे गुरुदत्त तथा स्वामी श्रद्धानंद आदि का हुआ था ।

(2) सत्यार्थप्रकाश के अत्यंत महत्वपूर्ण उद्धरण

पहला समुल्लास

1. ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है ।
2. जो अपने कार्य में किसी अन्य की सहायता की इच्छा नहीं करता । अपने ही सामर्थ्य से अपने सब काम पूरा करता है । इसलिए उस परमात्मा का नाम सर्वशक्तिमान है ।

दूसरा समुल्लास

3. जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है ।

तीसरा समुल्लास

4. सब प्रकार की हस्तक्रिया, यंत्र कला आदि सीखें परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्म पत्र, राशि, मुहूर्त आदि फल के विधायक ग्रंथ है उनको झूठ समझ के कभी न पढ़ें और न पढ़ावें ।

चौथा समुल्लास

5. जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी के सदृश है ।
6. लड़का लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है । जो माता-पिता विवाह करना कभी विचारें तों भी लड़का लड़की की प्रसन्नता के बिना न होना चाहिये ।

छठा समुल्लास

7. चोपड़ खेलना, जुआ खेलनादि आदि दिन में सोना, काम कथा वा दूसरे की निन्दा किया करना, स्त्रियों के अति संग, मादक द्रव्य अर्थात् मद्य, अफीम, भांग, गांजा, चरस आदि का सेवन, गाना, बजाना, नाचना वा नाच कराना, सुनना और देखना, वृथा इधर-उधर घूमते रहना ये दश कामोत्पन्न व्यसन हैं ।

8. जो स्त्री अपनी जाति गुण के घमण्ड से पति को छोड़ व्याभिचार करे उसको बहुत-बहुत स्त्री और पुरुषों के सामने जीती हुई कुत्तों से राजा कटवा कर मरवा डाले ।

सातवां समुल्लास

9. ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी सहायता नहीं लेता ।

10. प्रश्न – जीव स्वतंत्र है या परतंत्र ?
उत्तर –अपने कर्तव्य कर्मों में स्वतंत्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतंत्र है । 'स्वतंत्र कर्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है । जो स्वतंत्र अर्थात् स्वाधीन है वही कर्त्ता है ।

नौवां समुल्लास

11. जैसे मूल कट जाने से वृक्ष नष्ट हो जाता है वैसे पाप छोड़ने से दुःख नष्ट हो जाता है ।

12. तमोगुण का लक्षण काम, रजोगुण का अर्थ संग्रह की इच्छा और सत्वगुण का लक्षण धर्म सेवा करना है । परन्तु तमोगुण से रजोगुण और रजोगुण से सत्वगुण श्रेष्ठ है ।

ग्यारहवां समुल्लास

13. यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है । इसलिये इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है ।

14. जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती ।

15. देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है । उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है ।

जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम भी किया हो ऐसा नहीं लिखा ।

16. दाता कितने प्रकार के होते हैं ?

तीन प्रकार के—उत्तम, मध्यम और निकृष्ट ।

उत्तम दाता उसको कहते हैं जो देशकाल और पात्र को जानकर सत्यविद्या, धर्म की उन्नति एवं परोपकारार्थ देवे । मध्यम वह है जो कीर्ति व स्वार्थ के लिये दान दे । नीच वह है कि अपना व पराया कुछ उपकार न कर सके किन्तु वेश्यागमनादि वा भाटों आदि को देते समय तिरस्कार, अपमानादि की कुचेष्टा करे ।

17. कोई कितना ही करे, परंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है ।

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाशः

18. मेरा कोई नवीन कल्पना या मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य हे उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना मुझको अभीष्ट है ।

19. अनादि पदार्थ तीन हैं । एक ईश्वर, दूसरा जीव और तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत का कारण, इन्हीं को नित्य भी कहते हैं । जो नित्य पदार्थ है उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं ।

20. तीर्थ जिससे दुःख सागर से पार उतरे कि जो सत्यभाषण विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं उसी को तीर्थ समझता हूँ । इतर जलस्थलादि को नहीं ।

21. पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिये है कि जिस से संचित प्रारब्ध बनते हैं जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं । इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है ।

22. संस्कार उसको कहते हैं कि जिस से शरीर, मन और आत्मा

उत्तम होवे। वह निषाकादि श्मशानन्त सोहल प्रकार का है। इसको कर्त्तव्य समझता हूँ और दाह के पश्चात् मृतक के लिये कुछ भी न करना चाहिये।

23. स्तुति, गुणकीर्त्तन, श्रवण और ज्ञान होना इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

24. प्रार्थना अपने सामर्थ्य के उपरांत ईश्वर के संबंध में जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।

25. उपासना जैसे ईश्वर के गुण कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक और अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है। ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहलाती है। इस का फल ज्ञान की उन्नति आदि है।

(3) सत्यार्थप्रकाशप्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1. सत्यार्थप्रकाश लिखने की प्रेरणा महर्षि दयानंद को किस व्यक्ति से मिली?

उत्तर : राजा जयकृष्ण दास से ।

प्रश्न 2. सत्यार्थप्रकाश महर्षि दयानंद ने किस व्यक्ति से लिखवाया?

उत्तर : पं० चन्द्रशेखर ।

प्रश्न 3. महर्षि दयानंद को सत्याग्रप्रकाश लिखने के लिये कितने ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ा था?

उत्तर : 2986 ग्रंथ ।

प्रश्न 4. महर्षि दयानंद ने कितने समय में सत्यार्थप्रकाश को लिखा था?

उत्तर : महर्षि दयानंद ने 12-6-1874 दिन शुक्रवार को सत्यार्थप्रकाश लिखना आरंभ किया था और लगभग 3 मास में इसे लिख डाला था ।

प्रश्न 5. सत्यार्थप्रकाश में कितने समुल्लास हैं?

उत्तर : 14 समुल्लास ।

प्रश्न 6. सत्यार्थप्रकाश में सबसे छोटा और सबसे बड़ा कौन सा समुल्लास है?

उत्तर : दूसरा समुल्लास और 11वाँ समुल्लास ।

प्रश्न 7. सत्यार्थप्रकाश में विभिन्न ग्रंथों के कितने प्रमाण उद्धुत किये गये हैं?

उत्तर : सत्यार्थप्रकाश में 290 ग्रंथों के 1866 प्रमाण उद्धृत किये गये हैं ।

प्रश्न 8. सत्यार्थप्रकाश में विभिन्न ग्रंथों के कितने मंत्र एवं श्लोक उद्धृत किये गये हैं?

उत्तर : 1542 मंत्र एवं श्लोक ।

प्रश्न 9. सत्यार्थप्रकाश के किस समुल्लास पर कई बार प्रतिबंध लगे ?

उत्तर : चौदहवें समुल्लास पर जिसमें कुरान के 161 उद्धरणों को लेकर पाखंडों का खंडन किया गया है । परन्तु आन्दोलनों के बाद ये प्रतिबंध हटा दिये गये थे ।

प्रश्न 10. महर्षि दयानंद जी का सत्यार्थप्रकाश लिखने का क्या मुख्योद्देश्य था ?

उत्तर : महर्षि दयानंद जी का सत्यार्थप्रकाश लिखने का मुख्योद्देश्य सत्य का प्रकाश करके अंधकार रूपी पाखण्डों को जीवन से भगाना था क्योंकि वे एक महान समाज सुधारक थे । अतः वे स्वयं सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में लिखते हैं–

मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य का प्रकाश करना है ।

इसी कारण यह ग्रंथ 19वीं शताब्दी का सर्वप्रिय ग्रंथ हो गया था ।

प्रश्न 11. सत्यार्थप्रकाश का क्या महत्त्व है ?

उत्तर : इस ग्रंथ के स्वाध्याय मात्र से संसार के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य मतों एवं उनके मान्य सिद्धान्तों का परिचयात्मक ज्ञान हो जाता है । तभी डॉ० भवानी लाल भारतीय इसे 'विश्वकोश' के नाम से पुकारते हैं ।

प्रश्न 12. सत्यार्थप्रकाश के पहले समुल्लास का क्या सार है ?

उत्तर : इसमें परमात्मा के विभिन्न नामों का वर्णन किया गया है क्योंकि परमात्मा के अनंत गुण, कर्म एवं स्वभाव होने के कारण इसके अनेक नाम हैं । परन्तु ओम् इसका निज एवं सर्वश्रेष्ठ नाम है । ओम् के नाम के अतिरिक्त उन्होंने 100 और परमात्मा के नाम बताये हैं ।

प्रश्न 13. दूसरे समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें सन्तानों की शिक्षा का वर्णन है और यह भी बताया गया है कि माता-पिता एवं आचार्य ज्ञानवान एवं धार्मिक हो। केवल गणित, ज्योतिष वैज्ञानिक एवं सत्य है न कि फलित ज्योतिष।

प्रश्न 14. तीसरे समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें ब्रह्मचर्य, पठनपाठन व्यवस्था आदि का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि शिक्षा के सबको समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिये चाहे वह राजकुमार हो या रंक। माता-पिता, आचार्य और अतिथि को देवता के समान समझकर उनका आदर सत्कार करना चाहिये।

प्रश्न 15. चौथे समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें विवाह और गृहस्थाश्रम का वर्णन है। विवाह, गुण, कर्म और स्वभाव मिलाकर ही करना चाहिये। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रमों का आधार गृहस्थाश्रम है। यदि गृहस्थाश्रम न होता तो संतानोत्पत्ति न होने के कारण कोई भी आश्रम नहीं हो सकता था। अतः जो व्यक्ति गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है।

प्रश्न 16. पांचवे समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रमों का वर्णन है। सिर मुंडा कर काषाय वस्त्र धारण करके एवं दण्ड, कमण्डल हाथ में लेकर कोई व्यक्ति संन्यासी कभी भी नहीं बन सकता जब तक कि वह वितैषणा, पुत्रैषणा एवं लौकेषणा का परित्याग नहीं करता। वस्तुतः सत्य, प्रेम, परोपकार, अनासक्ति आदि गुणों को धारण करके ही व्यक्ति संन्यासी बन सकता है।

प्रश्न 17. छठे समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें राजधर्म का वर्णन है जिसके अनुसार राजा और जनता दोनों को मिलकर राज्य चलाने के लिये तीन सभाएं बनायें। (1) विद्यार्थी सभा, (2) धर्म सभा, (3) राजार्थ सभा। राजा को कोई स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। वह इन सभाओं के सभापति होने के कारण इन्ही की सलाह से काम चलाये।

प्रश्न 18. सातवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें वेद व ईश्वर विषय का वर्णन है। जब कोई भी व्यक्ति बुरा काम करता है तो परमात्मा की ओर से उसके हृदय में तीन अनुभूतियाँ पैदा होती हैं—भय, शंका और लज्जा और जब वह अच्छा काम करता है तो चार अनुभूतियाँ पैदा होती हैं—मन का प्रफुलित होना, आत्मोत्सर्ग, उत्साह और आनंद। यह सब परमात्मा की ओर से होता है।

प्रश्न 19. आठवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें सृष्टि निर्माण, जगत् उत्पत्ति-स्थिति और प्रलय का वर्णन है। प्रकृति सत् है, आत्मा सत्+चित और परमात्मा सत्+चित्+आनन्द है। अतः आनन्द प्राप्ति के लिये आत्मा परमात्मा की खोज करती है। बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। जगत् की उत्पत्ति के तीन कारण हैं—निमित्त, उपादान और साधारण।

प्रश्न 20. नवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें विद्या, अविद्या, बंध और मोक्ष की व्याख्या है।

प्रश्न 21. दसवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषयों का वर्णन है। यह सदाचार का मूलमंत्र है कि मानव को जितेन्द्रिय

होना चाहिये। सदा सत्य एवं प्रिय बोलना चाहिये और जिज्ञासु को तो बिना पूछे ही ज्ञान देना चाहिये।

प्रश्न 22. ग्यारहवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : महाभारत काल के उपरांत जो विभिन्न पंथ इस देश में चले उनके पाखंडों का खंडन इसमें किया गया है। जैसे वाममार्ग से अश्लील समारोहों में मूर्तिपूजा आदि का खंडन किया गया है। मूर्तिपूजा के स्थान पर पंचायतन पूजा– माता-पिता, आचार्य, अतिथि, पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिये पति पूजनीय है।

प्रश्न 23. बारहवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें चार्वाक, बौद्धमत एवं जैनमत के पाखंडों का खंडन है।

प्रश्न 24. तेरहवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें बाइबल से 133 विभिन्न उद्धरण लेकर बाइबल के पाखंडों का खंडन किया गया है जोकि सत्य पर पूरे नहीं उतरते हैं।

प्रश्न 25. चौदहवें समुल्लास का क्या सार है?

उत्तर : इसमें क़ुरान के 161 उद्धरण लेकर क़ुरान के पाखंडों का खंडन किया गया है जोकि सत्य पर पूरे नहीं उतरते हैं।

अन्ततः उपर्युक्त विवेचन व विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष व निचोड़ पर पहुँचते हैं कि पौराणिक भाई रामायण व गीता को तो मानते हैं परन्तु रामायण व गीता की नहीं मानते। आर्यसमाजी भाई वेद व सत्यार्थप्रकाश को तो मानते हैं परन्तु वेद व सत्यार्थप्रकाश की नहीं मानते। यहूदी, पारसी और अंग्रेज़ भाई बाइबल को तो मानते हैं परन्तु बाइबल की नहीं मानते। मुसलमान भाई क़ुरान को तो मानते हैं परन्तु क़ुरान की नहीं मानते। इसी प्रकार सिख भाई श्रीगुरुग्रंथसाहिब को तो मानते हें परन्तु श्रीगुरुग्रंथसाहिब की नहीं मानते।

अब प्रश्न उठता है कि ये सब किसकी मानते हैं । बहुधा ये सब अपने-अपने मन जिसको मानव शरीर का प्रधानमंत्री कहा जाता है की मानते हैं । क्योंकि संसार के अधिकतर लोगों ने मन को गुरु बना रखा है । मन को गुरु बनाने की अपेक्षा शिष्य बनाओ । क्योंकि आत्मज्ञान न होने के कारण आत्मा व मन में गांठ पड़ गई है और व्यक्ति ने अपनी इन्द्रियां, मन व बुद्धि को प्रभु में लगाने की अपेक्षा सांसारिक मोहमाया में लगा रखा है । परन्तु जब जीवात्मा और परमात्मा के मध्य से माया भाग जाती है तो उसे आत्मज्ञान होता हैं तब वह अपनी आत्मा की आवाज से ही कार्य करने लगता हैं मेरी बहनों और भाइयो ! मन की मानोगे तो जीवनभर दुःखी रहोगे । जैसेकि मुनि श्री तरुणसागर जी लिखते हैं–

धर्म प्रश्न है । धर्म ही जवान है । अपने लिये जो औरों से चाहिये वैसा व्यवहार करना ही धर्म है । जो अपने लिये प्रतिकूल लग रहा हो ऐसा व्यवहार दूसरों के लिए मत करो । धर्म का मतलब उन मूल्यों को धारण करना है जो हम चाहते हैं । हम चाहते हैं सुख, आनन्द और शांति । सब खेल समझ का है । समझ से समाज बनता है और समाज से देश ।

जैसी समझ होगी वैसा ही देश बनेगा । धर्मयुद्ध में नहीं शुद्ध रूप में सिखाया जाना चाहिये । केवल राजसत्ता से समाज ठीक नहीं हो सकता, उसके लिए धर्मसत्ता भी चाहिये । राजसत्ता शहर का चेहरा तो बदल सकती है लेकिन आदमी का चरित्र नहीं बदल सकती है । चरित्र को बदलने के लिए धर्म चाहिए ।

–कड़वे प्रवचन (भाग 5 पृ० 12)

संसार के सब व्यक्तियों को चाहिए कि वे श्रुति की माने यदि श्रुति की नहीं मानते तो स्मृति की माने । यदि स्मृति की नहीं मानते तो महापुरुषों की मानें । यदि महापुरुषों की नहीं मानते तो अपनी आत्मा जिसको मानव शरीर का राष्ट्रपति कहा जाता है की माने तभी व्यक्ति सच्चे अर्थों में मानव बनेगा और मानवता से प्रेम करेगा । कहने का भाव यह है कि बहुधा व्यक्ति कहता कुछ है और कर्ता कुछ है । व्यक्ति

की करनी-कथनी, चर्चा-चर्या एवं उच्चारण-आचरण में अंतर है। वस्तुतः हम उपदेश सुनते हैं मन भर, देते हैं टन भर और अमल करते हैं कण भर। इसलिये किसी ने सत्य ही कहा है कि संसार का सबसे बड़ा उपदेशक वह है जो स्वयं को उपदेश देता है। परन्तु जो व्यक्ति, मन, वचन और कर्म से एक होता है वह वस्तुतः सच्चा महात्मा होता है। संसार में ऐसे महात्मा बहुत कम देखने को मिलते हैं। यहाँ तक कि बड़े-बड़े उपदेशकों का भी यही हाल है। क्या वे जो उपदेश करते हैं? क्या वे उसे आचरण में भी उतारते हैं? यदि उतारते हैं तो मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ यदि नहीं तो मुझे उनके हाल पर अफसोस होता है। जैसे तुलसीदास जी 'रामचरितमानस' में लिखते हैं–

पर उपदेश कुसल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे।

–लंकाकाण्ड 77.1

इसी प्रकार उर्दूशायर इकबाल भी फरमाते हैं–

इकबाल बड़ा उपदेशक है, मन बातों से मोह लेता है।
गुफ़्तार का ग़ाज़ी तो बना, किरदार का ग़ाजी बन न सका।।

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी।
ये खाली अपनी फ़ितरत से न नूरी न नारी है।

एक हिन्दी कवि के शब्दों में –

है मानवता से अधिक बड़ा जग में कोई भी धर्म नहीं।
वह अज्ञानी मानवता का जो समझ सका है मर्म नहीं।
जब अपने और पराये की लक्ष्मण रेखा मिट जायेगी।
जब मानवता वसुधा से ही अपना परिवार बनाती है।
तब शांतिपूर्ण होता विकास धरती तल पर मानवता का।
अस्तित्व स्वयं मिटने लगता अन्याय अनल दानवता का।।

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?
16. शेॅर-ओ-शायरी

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
4. वैदिक गीता
5. अमर धर्मग्रंथ
6. अमर नीतिग्रंथ
7. पुराणपरिचय
8. ईश्वरसिद्धि
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी
10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
11. महावीर हनुमान
12. योगिराज श्रीकृष्ण
13. आदिशंकराचार्य
14. आचार्य चाणक्य
15. दस गुरु
16. आर्यसमाज के महामानव
17. स्वामी रामतीर्थ
18. संस्कार
19. गीतांजलि
20. आर्यसमाज
21. ओ३म्
22. गायत्रीरहस्य
23. ज्ञानामृत
24. यज्ञ
25. संत
26. संतवाणी
27. सामान्य हिन्दी (भाग I-II)
    (सब कक्षाओं के लिये)
28. **Great Thoughts**
29. **General English (Part I to V)**
    (For All Classes)